मनोहर ने हायर सेकण्डरी की परीक्षा पास करके हिन्दू-कॉलेज प्रवेश प्राप्त किया। मनोहर को सादा जीवन पसन्द था, इसलिये व तड़क-भड़क से रहने वाले लड़कों में उठना-बैठना पसंद नहीं करता था।

मनोहर अपने शिक्षकों का आदर करता था। वह उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनता था और उन्हें अपने जीवन में घटाने का प्रयास करता था। शिक्षकों की बातों पर टीका-टिप्पणी करने वाले विद्यार्थियों को वह अच्छी दृष्टि से नहीं देखता था। वह कहता किसी से कुछ नहीं था, केवल धारणा बना लेता था अपने मन में उनके प्रति।

कुछ शैतान लड़के मनोहर की सादगी को देखकर उसे मूर्ख भी समझने लगे थे। वह उनके पास से निकलता था तो वे व्यंग्य से मुस्कराते और आपस मे उसके विषय मे बातें करते थे। वे मनोहर को अपने से निम्न स्तर का समझते थे। मनोहर इसे उनकी मूर्खता समझ-कर अपने मन मे मुस्करा लेता था। वह उन्हे बुद्धिहीन समझता था।

इन लड़को की बनावट और ऊपरी टीप-टाप को देखकर मनोहर को हँसी आती थी। मनोहर अपने गठित बदन के सामने जब उनके खोखले पिंजर खड़े देखता था तो मुस्कान अनायास ही उसके चेहरे पर खिल उठती थी। वह सोचता था कि ये मानव के खोखले ढाँचे सूट पहन कर क्या कभी राष्ट्र के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे?

मनोहर ऐसे लड़को को चरित्रभ्रष्ट समझता था। वह कॉलेज में निकलता था तो मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ। वे लड़के मनोहर की पीठ के पीछे उसके विषय मे चाहे कुछ भी बातें कर लेते थे परन्तु उसके सामने एक शब्द भी बोलने का उनमें साहस नहीं —

कॉलेज में लड़के और लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ते थे । फ़ैशनपरस्त लड़कों की दृष्टि जब उन लड़कियों पर पड़ती थी तो उनका कॉलेज में आने का अभिप्राय नष्ट हो जाता था । उन्हें अपनी कक्षा में जाने की भी सुध नहीं रहती थी । पूरा घण्टा व्यतीत हो जाता था और वे बागीचे में ही घूमते हुए उनकी ओर ताकते-झाँकते रहते थे ।

मनोहर को अपने उन सहपाठियों पर दया भी आती थी और उनके आचरण देखकर मन में क्षोभ भी होता था । वह सोचता था कि उनके माता-पिताओं ने उन्हें कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा है न कि यह कुछ करने के लिये । वे सोचते होंगे कि उनके बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और यहाँ हो रहा है उसके ठीक विपरीत । मनोहर को यह सब देखकर हार्दिक कष्ट होता था ।

यह सोचते-सोचते उसके नेत्रों के सामने उसकी माता की मनोरम मूर्ति आकर खड़ी हो जाती थी, जिसने मनोहर से कॉलेज आते समय कहा था, 'बेटा मनोहर ! अब तुम शहर जा रहे हो । मेरी आँखें तुम्हें नहीं देख सकेंगी परन्तु यह न भूलना कि मेरी आत्मा तुम्हें देखने में समर्थ रहेगी । तुम्हारे पिता एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे । धनवान नहीं थे वह, परन्तु सम्मान उनका सभी लोग करते थे । जब तुम तीन वर्ष के बच्चे थे तभी विधाता ने उन्हें हमसे छीन लिया था । तब से आज तक मैंने उनके सम्मान की रक्षा की है । अब तुम्हें उस सम्मान की रक्षा करनी है ।

'जानते हो मनोहर ! वह रक्षा कैसे होगी ?'

'कैसे होगी माताजी ?' मनोहर ने पूछा था ।

'वह तभी होगी जब तुम विद्वान् बनोगे, सदाचारी बनोगे और कर्त्तव्यनिष्ठ होगे ।'

ये तीन बातें मनोहर से उसकी माताजी ने कॉलेज में प्रवेश प्राप्त करने के लिये प्रस्थान करते समय कही थीं । मनोहर ने इन तीनों बातों को अपने मन और मस्तिष्क में गाँठ बाँध रखी थी । उसे हर समय इन

तीनों बातों का ध्यान रहता था।

आज कॉलेज के छात्रों के सामने प्रिंसिपल साहब वक्तव्य देने वाले थे। विद्यार्थी कॉलेज-हॉल में एकत्रित थे। प्रिंसिपल साहब अभी पधारे नहीं थे। विद्यार्थी उनकी प्रतीक्षा में थे। हॉल विद्यार्थियों की बात-चीत के रव से गूंज रहा था। कोई भी बात स्पष्ट सुनायी नहीं दे रही थी।

लड़कियाँ मंच के सामने वाले बैंचों पर बैठी थीं। लड़के पीछे के बैंचों पर थे। मनोहर के पास बैठने वाला लड़का अपनी पेंट की क्रीज सँवारता हुआ अपने साथी से बोला, "इस वर्ष कॉलेज में 'बावदी' लड़के बहुत आये हैं।" यह कहकर उसने वक्र दृष्टि से मनोहर की ओर देखा और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर अपने साथी की ओर देखने लगा।

उसका साथी बोला, "लड़कों के विषय में तो तुम्हारी बात ठीक है प्रकाश! परन्तु लड़कियाँ इस वर्ष एक-से-एक ......।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "दिनेश! इसीलिये तो कालेज आने को मन करता है। यह बात न होती तो प्रकाश कालेज में आकर कभी झाँकने का भी नाम न लेता।"

मनोहर के हृदय में प्रकाश और दिनेश की बातें शूल के समान चुभ कर रह गयीं। उसने एक बार उनके मुस्कराते हुए चेहरों की ओर देखकर अपनी दृष्टि मंच की ओर करली।

एक अध्यापक महोदय ने मंच पर आकर कहा, "प्रिय विद्यार्थियो! प्रिंसिपल साहब पधार रहे हैं। आप सब शान्त हो जायें।"

हॉल का शांतिपूर्ण वातावरण हो गया। विद्यार्थियों ने पारस्परिक बातें बन्द करदीं। प्रिंसिपल साहब ने हॉल में प्रवेश किया। सब विद्यार्थी उनके प्रति आदर-भाव प्रदर्शित करने के लिये खड़े हुए, परन्तु दिनेश और प्रकाश बैठे रहे। दिनेश प्रकाश का हाथ पकड़कर बोला, "बैठ भी जा यार! कौन खड़ा हो इस चपरकनाती के लिये। यह तो वर्ष में जाने कितनी बार ऐसी बकवास करता है। दो कौड़ी की बात नहीं

कहता।"

प्रकाश फुसफुसाकर बोला, "यह कहेगा बच्चो! अपने चरित्र का निर्माण करो। मन लगाकर पढ़ो। विद्वान् बनो।" यह कहकर वह धीरे से हँस दिया।

प्रिंसिपल साहब मंच पर आकर कुर्सी पर बैठ गये। उनके बैठते ही सब विद्यार्थी अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। कुछ क्षण पश्चात् प्रिंसिपल साहब खड़े हुए। विद्यार्थियों ने करतल-ध्वनि की। वह बोले:

"प्यारे बच्चो!

नूतन वर्ष तुम सब के लिये शुभ हो। मैं नये वर्ष का शुभ संदेश देने के लिये तुम्हारे समक्ष खड़ा हुआ हूँ। तुम लोग कॉलिज में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अभिप्राय से आये हो। मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम्हारी मनोकामनायें पूर्ण हों।

बच्चों! तुम जानते हो कि तुम्हारी यह मनोकामना कैसे पूर्ण हो सकती है? यह तभी पूर्ण होगी जब तुम सब ओर से अपनी चित्त-वृत्तियों को हटाकर अध्ययन-कार्य में लगाओगे। इसके लिये तुम्हें कठिन परिश्रम करना होगा। परिश्रम करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

मैं चाहता हूँ कि मेरे कॉलिज से जो विद्यार्थी निकलें वे योग्य, परिश्रमी, कर्त्तव्यपरायण और चरित्रवान हों। मुझे विश्वास है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगे।"

मनोहर ने प्रिंसिपल साहब के शब्दों को बहुत ध्यान से सुना। उसे लगा कि वह प्रिंसिपल साहब के नहीं उसकी पूज्यनीय माताजी के शब्द थे जो उसके कानों में पड़ रहे थे। उसने नेत्र बन्द करके देखा तो सच-मुच उसके नेत्रों के सामने उसकी माताजी की प्रतिमा आकर खड़ी हो गयी थी। वह नेत्र बन्द करके उनका व्याख्यान सुनता रहा। उसे पता ही न चला कि कब व्याख्यान समाप्त हुआ और कब विद्यार्थी बैंचों से उठने लगे।

मनोहर का स्वप्न तब टूटा जब दिनेश ने पंक्ति से बाहर निकलने के लिये उसे थोड़ा ठेलते हुए कहा, "यह सोने का स्थान नहीं है महाशय! नींद आ रही थी तो कॉलिज में आने की क्या आवश्यकता थी?"

प्रकाश उपहासपूर्ण स्वर में बोला, "ऐसे लड़के पता नहीं कॉलिज में पढ़ने के लिये क्यों चले आते हैं। ये लोग कॉलिज में आकर बैठना भी नहीं जानते।"

दिनेश और प्रकाश की बातें सुनकर मनोहर का चेहरा तमतमा उठा। क्रोध से उसका रक्त उबाल सा गया। उसने गम्भीर दृष्टि से उनकी ओर देखा परन्तु बोला वह एक शब्द नहीं। वह बैंच से उठकर खड़ा हो गया। उसके कानों में प्रिंसिपल साहब के शब्द गूंज रहे थे।

दिनेश और प्रकाश ठहाका मारकर हँस पड़े। एक ने कहा, "ऐसे लड़कों से डाँट-डपट का ही व्यापार करना चाहिये।"

"बिलकुल! ईडियट कहीं का। पता नहीं किस दड़बे से खुलकर यहाँ आगया है।" दूसरा बोला।

मनोहर ने ये शब्द भी अपने कानों से सुने परन्तु वह उन्हें भी शरबत के घूँट की तरह पी गया।

लड़के और लड़कियाँ सब हॉल के द्वार से बाहर निकल रहे थे। दिनेश और प्रकाश लपक कर लड़कियों के निकट पहुँच गये।

प्रकाश ने एक लड़की की ओर संकेत करके कहा, "यह लड़की इसी वर्ष आयी है। गुलाब का फूल है विनोद!"

विनोद धीरे से बोला, "प्रकाश बाबू! कहीं भूले से इसे न छेड़ बैठना तुम।"

"क्यों?" तुनक कर प्रकाश बोला।

"यह मेजर जनरल नाहरसिंह की लड़की है। मैंने कल इसकी कोठी तक इसका पीछा किया था। तब मुझे ज्ञात हुआ कि यह किसकी लड़की है।"

"उँह! देखा जायगा। मेरे पिता भी डिप्टी-कमिश्नर हैं। किसी

से कम नहीं हूँ मैं।" गर्व के साथ प्रकाश ने कहा और इतना कहकर वह आगे बढ़ गया।

दिनेश उसके साथ था।

प्रकाश विद्यार्थियों की भीड़ को चीरकर शीला के निकट जा पहुँचा।

हॉल से बाहर निकलकर विद्यार्थी इधर-उधर बिखर गये। शीला कॉलेज के गेट की ओर बढ़ गयी। प्रकाश और दिनेश उसके पीछे-पीछे चले।

मनोहर उनकी सब बातें सुन चुका था। वह दूर से उन पर दृष्टि रखकर उनके साथ-साथ आगे बढ़ा।

प्रकाश ने कॉलेज के फाटक पर पहुंचकर शीला की चप्पल को पीछे से अपने जूते से दबा दिया। शीला ने पैर उठाया तो चप्पल की पट्टी टूट गयी और वह नंगे पैर खड़ी रह गयी।

"एक्सक्यूज मी!" प्रकाश ने आगे बढ़कर कहा।

शीला की दृष्टि दिनेश और प्रकाश पर गयी। उसका चेहरा तमतमाया, परन्तु चुप रही। एक शब्द न बोली।

"आपकी चप्पल टूट गयी। लाइये इसे मोची से ठीक करा दूँ। ठीक न होने पर आपको नंगे पैर घर जाना होगा।"

" आप अपने मार्ग पर जाइये। मुझे ठीक करानी होगी तो मैं स्वयं करा लूँगी। चप्पल पर पैर रखते समय तो आपको लज्जा नहीं आयी, अब सहानुभूति दिखाने आये हैं आप?"

"यह सब अनजाने में हुआ है देवीजी! क्या आप समझती हैं कि मैंने जान-बूझकर आपकी चप्पल तोड़दी?"

प्रकाश के ये शब्द सुनकर शीला की आँखें लाल हो गयीं। वह क्रोध में आग होकर तीखे शब्दों में बोली, "क्या कॉलेज में आप लोग ऐसे ही नीच आचरण करने के लिये आते हैं?"

"हैं-हैं! यह भला क्या कह रही हैं आप!" दिनेश बोला, "इन्हें

आप जानती नहीं हैं देवीजी ! यह तो प्रकाश बाबू हैं, डिप्टी-कमिश्नर साहब के सुपुत्र । यह क्या कभी कोई ऐसा कार्य कर सकते है जिसे कोई घृणित कहे ?"

उसी समय शीला का भाई नरेन्द्र उधर आ निकला । वह भी उसी कॉलेज मे बी० ए० कक्षा का विद्यार्थी था । उसने शीला के निकट आकर पूछा, "शीला ! क्या बात है ? यहाँ कैसे खड़ी हो ?"

नरेन्द्र को देखकर शीला की आँखों में आँसू आगये । वह प्रकाश की ओर संकेत करके बोली, "इस लड़के ने पहले तो अपने जूते से दबाकर मेरी चप्पल तोड़दी और फिर कहता है कि लाओ उसे मैं मोची से ठीक करादूँ ।"

यह सुनकर नरेन्द्र की त्योरी चढ़ गयी । उसने आव देखा न ताव । प्रकाश के गाल पर एक करारा तमाचा रसीद कर दिया । तमाचा लगते ही प्रकाश भी उछल पड़ा । प्रकाश और दिनेश ने मिलकर नरेन्द्र को धर दबाया ।

मनोहर निकट खड़ा यह दृश्य देख रहा था । नरेन्द्र पर दिनेश और प्रकाश को झपटते देखकर वह उनके निकट पहुँच गया । उन दोनो के हॉल मे कहे गये शब्द अभी भी उसके हृदय मे पीड़ा उत्पन्न कर रहे थे।

मनोहर शारीरिक शक्ति मे अकेला ही दस के बराबर था । उसने अपने दोनों हाथो मे प्रकाश और दिनेश की कलाइयाँ पकडकर जो झटका दिया तो नरेन्द्र उनकी पकड से छूटकर पृथक हो गया ।

शीला की दृष्टि मनोहर पर गयी तो एक क्षण के लिये टिककर रह गयी । पुरुष-सौन्दर्य और स्वास्थ्य की साक्षात प्रतिमा, गौर वर्ण, लम्बी भुजायें, चौड़ा मस्तक, सब कुछ सुन्दर था उसका । उसके दोनों हाथों मे प्रकाश और दिनेश की कलाइयाँ ऐसे फँस गयी, जैसे किसी शिकजे मे जकडी गयी हों । पर्याप्त उछल-कूद करने पर भी वे मनोहर से अपने को मुक्त न कर सके । अन्त मे थक कर चुपचाप खडे हो गये ।

नरेन्द्र मनोहर की ओर कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से देख रहा था। मनोहर ने उसके आत्म-सम्मान की रक्षा की थी।

"आखिर तुमने हमें इस तरह आकर क्यों पकड़ लिया? हमारा तुमसे तो कोई विरोध नहीं है।" प्रकाश मनोहर से बोला।

"मैंने तुम्हें इसलिये पकड़ लिया कि कहीं तुम इसी तरह किसी अन्य लड़की को न छेड़ बैठो, जैसे तुमने इस बेचारी को छेड़ा है। यदि सच बोलोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। क्या तुमने जान-बूझकर इस लड़की की चप्पल अपने जूते के नीचे नहीं दबायी?" मनोहर गम्भीर वाणी में बोला।

प्रकाश का मुँह सफ़ेद पड़ गया। झूठ बोलने का उसमें साहस न हुआ। उसे अपनी उद्दण्डता स्वीकार करनी पड़ी। इसके अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं था।

मनोहर ने शीला से कहा, "इसने अपनी भूल स्वीकार करली। बात प्रिंसिपल साहब के पास तक जायगी तो आपको व्यर्थ अपमानित होना होगा। लड़की की आबरू मोती के समान होती है। मुझे विश्वाश है कि अब यह भविश्य में कभी ऐसी धृष्टता नहीं करेगा।"

शीला बोली, "मैं तो पहले भी इन्हें कुछ नहीं कह रही थी परन्तु यह सीधे अपने मार्ग पर गये ही नहीं। पहले जूते से दबाकर चप्पल तुड़वादी और फिर उपहास करने का प्रयत्न करने लगे।"

मनोहर प्रकाश की ओर देखकर बोला, "क्यों महाशय! भविष्य में तो कभी ऐसी धृष्टता नहीं होगी न?"

प्रकाश ने लज्जावश गर्दन हिलाकर कहा, "कभी नहीं।"

मनोहर ने प्रकाश और दिनेश के हाथ छोड़े तो वे तीर की तरह वहाँ से भाग गये।

नरेन्द्र ने कृतज्ञतापूर्ण स्वर में पूछा, "भाई! क्या मैं तुम्हारा नाम जान सकता हूं?"

"मेरा नाम मनोहर है। मैंने इसी वर्ष कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया

है। ये दोनों लड़के हॉल में मेरे ही पास बठे थे। सभ्य घरानों के मालूम देते हैं परन्तु इनकी बातें सुनकर मुझे अत्यन्त खेद हुआ। जब ये हॉल से निकले और इनकी दृष्टि इधर गयी तो इन्होंने जो बातें कीं, वे मैंने सुन लीं। इसीलिये मैं अपना मार्ग बदलकर इस ओर चला आया। इसी बीच में आप आगये। क्या आप इन्हें पहले से जानते थे?" शीला की ओर संकेत करके मनोहर ने कहा।

"यह मेरी छोटी बहन है शीला। मेरा नाम नरेन्द्र है। मैं भी इसी कॉलिज में बी० ए० में पढ़ रहा हूँ।" नरेन्द्र बोला।

"आपसे मिलकर हार्दिक प्रसन्नता हुयी।" मनोहर ने कहा।

शीला ने 'मनोहर' शब्द को कई बार मन-ही-मन दुहराया। उसने एक बार फिर उसकी ओर देखा और आँखें नीची करलीं।

मनोहर बोला, "अब आज्ञा चाहूँगा।" यह कहकर मनोहर ने नरेन्द्र और शीला से विदा ली।

२

शीला की चप्पल टूट गयी थी, इसलिये नरेन्द्र ने एक रिक्शावाले को पुकारा और दोनों रिक्शा पर बैठकर कोठी की ओर चल दिये।

मार्ग में शीला बोली, "भय्या नरेन्द्र! तुम्हें उस लड़के पर इस प्रकार हाथ नहीं छोड़ना चाहिये था। वह तो वह लड़का आपकी सहायता के लिये आगया, नहीं तो जाने क्या होता?"

"भूल तो अवश्य हुई शीला! परन्तु मैं अपने को रोक न सका। तुमने देखा नहीं वह लड़का, यह सब-कुछ करके भी मुस्करा रहा था। उसे मुस्कराते देखकर मेरे तन-बदन में ज्वाला प्रज्वलित हो उठी। अनायास ही मेरा हाथ उठ गया और वे दोनों मुझ पर टूट पड़े।"

"भैय्या नरेन्द्र! उस लड़के का साथी कह रहा था कि वह डिप्टी-कमिश्नर साहब का लड़का है।"

"मैं जानता हूं उसे। वह केशवचन्द्रजी का लड़का प्रकाश है। गतवर्ष इसका रैस्टीकेशन होते-होते बचा था। इसके विषय में मैं सब-कुछ जानता हूं। भविष्य में ध्यान रखना शीला! यह लड़का बहुत दुष्ट प्रकृति का है। इससे सावधान रहना।"

"मुझे उसकी सूरत से भी घृणा है भैय्या! तुमने देखा नहीं वह कैसा आँख मटकाकर बातें कर रहा था। सभ्यता उसे छू तक नहीं गयी है। इतने बड़े घराने का नाम गन्दा करते उसे ज़रा भी लज्जा नहीं आ-रही थी।"

"शीला! यह लड़का मनोहर, बहुत नेक मालूम देता है। यह तुम्हारी ही कक्षा में है। भविष्य में यदि प्रकाश कभी कोई उद्दण्डता करे तो तुम निस्संकोच भाव से उससे सहायता लेसकती हो। वह उसे ठीक कर देगा।"

रिक्शा मेजर जनरल नाहरसिंह की कोठी पर पहुँच चुकी थी। नरेन्द्र और शीला रिक्शा से नीचे उतरे। रिक्शावाले को पैसे दिये और कोठी मे प्रवेश किया। उन्होंने अन्दर जाकर देखा कि उनकी माताजी सरोज रानी उनकी प्रतीक्षा मे थी।

सरोज रानी उन्हें देखकर बोली, "आज बहुत देर करदी तुम लोगों ने। इतनी देर तक कॉलिज मे क्या करते रहे?"

नरेन्द्र बोला, "आज प्रिंसिपल साहब का भाषण था माताजी! कॉलेज का कार्य-क्रम समाप्त होने के पश्चात् सब विद्यार्थी हॉल मे एकत्रित हुए थे। उसी में इतना समय हो गया।"

"चलो, कपड़े बदलो और भोजन कर लो। मुझे भी भूख लगी है।"

शीला और नरेन्द्र ने वस्त्र बदलकर मुँह-हाथ धोये और फिर डाइनिंग रूम मे चले गये। भोजन मेज पर आचुका था। उनकी माताजी भी आकर उनके पास बैठ गयीं। माताजी ने प्रेमपूर्वक अपने बच्चों को भोजन कराया और स्वयं भी किया।

भोजन के पश्चात् नरेन्द्र और शीला ड्राइङ्ग-रूम में चले गये कुछ देर बाद उनकी माताजी भी वहीं आगयीं।

सरोज रानी ने पूछा, "शीला! कॉलिज कैसा लगा? पढ़ाई तो अच्छी है इस कॉलिज की। लड़के भी इसमें भले घरों के जाते हैं।"

"गुण्डों की भी कमी नहीं है माताजी! सभी तरह के लड़के हैं कॉलिज में, परन्तु हमें इससे क्या प्रयोजन? जो अच्छा है वह अपने लिये और जो बुरा है वह अपने लिये। हमारा सम्बन्ध तो अपनी पढ़ाई से है।"

शीला की बात सुनकर उनकी माताजी को हार्दिक सन्तोष हुआ। उन्होंने शीला के विचारों की सराहना की।

मेजर जनरल नाहरसिंह चरित्रवान [illegible] थे। उनके [illegible] को जीवन की [illegible] उनके सम्पूर्ण परिवार पर थी। [illegible] निधि समझते थे।

मेजर जनरल साहब के चरित्र की छाप उनके परिवार की सीमा तक ही सीमित नहीं थी। उनकी सेना के बड़े और छोटे सभी अधिकारी तथा सैनिक उनके चारित्रिक गठन से परिचित थे। युद्ध-क्षेत्र में जब वह जाते थे और किसी भू-भाग पर अधिकार प्राप्त कर लेते थे तो क्या मजाल जो उनकी सेना का कोई सैनिक उस भू-भाग के किसी निवासी पर अत्याचार कर सके या अपनी दुश्चरित्रता का परिचय दे। दुश्चरित्र व्यक्ति को वह सहन नहीं कर सकते थे।

शीला के अन्दर मेजर साहब का रक्त था। उसे रह-रहकर अपने प्रति की गयी प्रकाश की उद्दण्डता का ध्यान आ रहा था। वह कोई बात कभी अपनी माताजी से नहीं छिपाती थी। वह बोली, "माताजी! आज जब मैं कॉलेज से चली तो एक लड़के ने बड़ी नीचता का परिचय दिया।"

यह सुनकर सरोज रानी स्तब्ध रह गयीं। उन्होंने उत्सुकतापूर्ण स्वर में पूछा, "क्या हुआ शीला?"

"हुआ कुछ नहीं माताजी! मैं हॉल से निकलकर कॉलेज के फाटक पर आयी तो दो लड़के लपके हुए मेरे पीछे चले आये। उनमें से एक लड़के ने कल भी मेरा कोठी तक पीछा किया था। आज उसके साथी ने पीछे से आकर मेरी चप्पल इस तरह दबायी कि वह टूट गयी। चप्पल तोड़ कर वह मुझसे मुस्कराकर बोला, 'आपकी चप्पल टूट गयी है। लाइये इसे मोची से सिलवा दूँ।' उसी समय भैया नरेन्द्र वहाँ आगये।"

"फिर क्या हुआ?"

"भैया नरेन्द्र ने यह बात सुनी तो इन्हें क्रोध आगया और इन्होंने उस लड़के के गाल पर एक तमाचा लगा दिया।"

"फिर क्या हुआ?"

"भैया का उसके गाल पर तमाचा लगाना था कि वे दोनों भैया पर टूट पड़े। भैया अकेले थे और वे दो। मैं सोच ही रही थी कि अब क्या

करूँ। तभी एक लड़का दौड़कर वहाँ आगया। उसने आते ही उन दोनों की कलाइयाँ पकड़कर जो झटका दिया तो भैया उनसे छूटकर अलग हो गये। उस लड़के से उन दोनों ने अपने हाथ छुड़ाने का प्रयत्न किया परन्तु सब व्यर्थ। क्या डील-डौल है उस लड़के का!"

"फिर क्या हुआ?"

"फिर क्या होना था माताजी! उन दोनों से क्षमा-याचना कराकर और भविष्य में कभी ऐसी धूर्तता न करने का वचन लेकर उसने मेरी अनुमति से उन्हें मुक्त कर दिया। मैं कह रही थी न आपसे कि कॉलेज में सभी प्रकार के लड़के हैं। भले भी और गुण्डे भी।"

सरोज रानी को यह बात सुनकर हार्दिक दुःख हुआ। सन्तोष यही रहा कि बात सम्मानपूर्वक समाप्त हो गयी। वह बोलीं, "शीला बेटी! इस बात के विषय में तुम अपने पिताजी से कुछ न कहना। अवसर देखकर मैं स्वयं इन्हें सब-कुछ बता दूँगी। यदि आज ही उनसे किसी ने यह बात कहदी तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जायगा। वह अन्य सब बातें सहन कर सकते हैं परन्तु इस तरह की घटना को सहन करना उनके लिये सम्भव नहीं है।"

"मैं कुछ नहीं कहूँगी माताजी! मुझे जो कहना था मैं आपसे कह चुकी?"

नरेन्द्र बोला, "जिस लड़के ने यह नीच कार्य किया, जानती हैं वह कौन है?"

"वह किसका लड़का है?"

"वह हमारे डिप्टी कमिश्नर साहब श्री केशवचन्द्रजी का सुपुत्र है।"

"केशवचन्द्र का लड़का प्रकाश! मैं जानती हूँ उसे। वह बहुत नीच प्रकृति का लड़का है। ऐसे लड़के से बचकर रहना चाहिये। उसने अपने माता-पिता के मस्तक पर कलंक का टीका लगा दिया है। केशवचन्द्रजी कितने भले आदमी हैं और उनका लड़का प्रकाश! छी-छी! कितना अच्छा नाम और कितने दुर्गुणों का भण्डार।"

"परन्तु माताजी ! आज उसकी जो दशा हुई वह देखते ही बनती थी। उस लड़के के सामने वे दोनों भीगी बिल्लियों की तरह खड़े गिड़गिड़ा रहे थे। जैसे ही उसने उन्हें मुक्त किया, दोनों सिर पर पैर रखकर भागे। दूर तक जाते हुए मैंने उन्हें देखा कि किसी का पीछे घूमकर देखने का साहस न हुआ।"

"वह लड़का कौन था नरेन्द्र जिसने तुम्हारी सहायता की ?" माताजी ने पूछा।

"अधिक परिचय तो उसका प्राप्त नहीं है माताजी ! उसका का नाम मनोहर है। उसने इसी वर्ष कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया है।"

"तब तो वह शीला का सहपाठी हुआ।"

"जी हाँ, सहपाठी ही है शीला का।"

"कोई भले घर का लड़का मालूम देता है। बहुत नेक विचारों का लड़का है। नेक न होता तो परायी आग में क्यों कूदता ? भले आदमी ही परायी बहू-बेटियों की इज्ज़त को अपनी इज्ज़त समझते हैं। उसे किसी दिन यहाँ लाना मेरे पास।"

"अवश्य लाऊँगा माताजी ! मैं उससे अनुरोध करूँगा कि वह किसी दिन यहाँ आये।"

संध्या-समय हो गया था। नरेन्द्र टेनिस खेलने चला गया। सूर्य अस्ताचल के निकट जाना चाहता था। उसने पश्चिम-दिशा में कोठी के पीछे अपना मुँह छिपा लिया था। कोठी का द्वार पूर्व में था। इस लिये कोठी के सामने वाले लॉन में अब लेश-मात्र भी धूप नहीं थी। कोठी की लम्बी परछाई दूर तक फैल गयी थी। शीला ड्राइङ्ग-रूम से उठकर कोठी के सामने लॉन में चली गयी।

शीला की आँखों ने आज मनोहर का जो रूप देखा था उसने शीला को प्रभावित किया था। उसका मुस्कराता हुआ भोला-भाला चेहरा शीला की आँखों में गड़ गया था। वह उसे अपने मन से निकालकर

किसी अन्य बात में ध्यान लगाने का प्रयास करने पर भी सफल नहीं हो रही थी। लड़के बहुत से उसकी दृष्टि के सामने आये थे परन्तु जो व्यक्तित्व उसने आज मनोहर का देखा था, वह निराला ही था। उसमें कुछ विशेष ही बात थी जो उसे भली मालूम दी।

मनोहर के रूप में जो बड़ी बात थी वह यह थी कि मनोहर ने उसकी रक्षा की थी। यदि मनोहर समय पर न आ गया होता तो निश्चय ही उन्हें अपमानित होना पड़ता। यदि ऐसा हुआ होता तो कितनी बड़ी दुर्घटना होती।

मनोहर के विषय में सोचते-सोचते वह घटना उसकी आँखों की पुतलियों पर झूल उठी। कितनी शक्ति थी मनोहर की भुजाओं में! प्रकाश और उसका मित्र दो बन्दरों के समान नाच रहे थे उसके सामने। उस दृश्य की स्मृति ने शीला के हृदय को गुदगुदा दिया। शीला के होंठों पर हल्की-सी मुस्कान की रेखा खिंच गयी।

शीला धीरे-धीरे गुनगुनाती हुई लॉन में इधर-से-उधर घूमने लगी। वह बहुत देर तक एकांत में घूमती रही। उसकी कल्पना के आंगन में मनोहर खड़ा था।

शीला की माताजी भी घर का काम-काज देखकर शीला के पास लॉन में चली आयीं। वह बोलीं, "शीला! कुछ लड़के कॉलेज में पढ़ने के लिये नहीं जाते। वे कॉलेज को [illegible] का स्थान समझते हैं। ऐसे लड़के जीवन में कुछ नहीं [illegible]। जीवन में कुछ करने वाले बच्चे अपने काम-से-काम रखते हैं। ऐसे बच्चों को अवकाश ही नहीं मिलता इस तरह की व्यर्थ बातों में पड़ने का।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं माताजी!" शीला बोली।

उसी समय उन्होंने देखा जीप गाड़ी [illegible]!

शीला की माताजी बोलीं, "तुम्हारे पिताजी आ गये शीला!"

शीला और उसकी माताजी [illegible]

पहुँच गयीं। शीला ने अपने पिताजी को [illegible]

ड्राइङ्ग-रूम में चले गये ।

"नरेन्द्र कहाँ है ? सम्भवतः अभी टैनिस खेलकर नहीं लौटा ।" मेजर साहब ने कहा ।

सरोज रानी बोलीं, "आज उसका फ़ाइनल मैच है । तनिक देर से आने के लिये कह गया है ।"

"आज कॉलेज गयी थी बेटी ?" मेजर साहब ने शीला से पूछा ।

"जी, गयी थी पिताजी ।"

"क्या लैक्चर्स आरम्भ हो गये ?"

"कुछ प्रोफैसर्स तो आने लगे हैं पिताजी ! और कुछ घण्टे अभी खाली रहते हैं । इस सप्ताह में पढ़ाई आरम्भ होजायगी ।"

"मन लगाकर पढ़ना बेटी ! आज तुम्हारे प्रिंसिपल साहब मिले थे । बहुत भले आदमी हैं । वह हमारे सहपाठी रहे हैं ।"

थोड़ी देर पश्चात नरेन्द्र भी टैनिस खेलकर लौट आया ।

सरोज रानी ने आजकी कॉलेज में होने वाली घटना का अपने पति को कोई संकेत नहीं दिया ।

भोजन के उपरान्त जब चारों फिर ड्राइङ्ग-रूम में आये तो मेजर साहब खेदपूर्ण शब्दों में बोले, "सरोज ! आज अचानक ही हमारी केशवचन्द्रजी से भेंट हो गयी । कितने नेक आदमी हैं कि तुमसे क्या कहूं । परन्तु जितने वह नेक हैं उतना ही उनका लड़का प्रकाश दुश्चरित्र होता जा रहा है । आये दिन उनके पास उसकी शिकायतें आती हैं । बेचारे बहुत दुखी थे अपने बेटे की करतूतों पर ।"

"यही तो दुर्भाग्यपूर्ण बात होती है माता-पिता के लिये । यदि किसी के बच्चे उसकी इच्छा के अनुसार आचरण नहीं करते हैं तो उनका जीवन निरर्थक हो जाता है । उनकी आशाओं पर तुषारापात होता है और उनके जीवन का स्वप्न विशृंखलित हो उठता है । उन्हें अपना जीवन व्यर्थ-सा प्रतीत होने लगता है ।"

"इसमें क्या सन्देह है सरोज ! बच्चे माता-पिता की आशाओं के

सुमन होते हैं। यदि ये सुमन उनकी आँखों के सामने ही सड़ने लगे तो उनकी क्या दशा होगी ? इसका अनुमान वे ही लगा सकते हैं जिन पर यह व्यतीत होता है। आज मैंने देखा कि केशवचन्द्र का चेहरा उतरा हुआ था। उन्होंने कितने दर्दभरे शब्दों में प्रकाश के विषय में मुझसे बातें की कि मैं क्या कहूं ? इतने भले घर का लड़का ऐसे आचरण करे, यह बात समझ में नहीं आती। मैंने सोचा कि मैं किसी दिन अवसर देखकर प्रकाश को समझाने का प्रयत्न करूँ।"

सरोज रानी बोलीं, "ये बातें समझाने से समझ में नहीं आती नरेन्द्र के पिताजी ! किसी व्यक्ति का मार्ग एक बार गलत हो जाने पर फिर उसे सही मार्ग पर लाना बहुत कठिन कार्य है। ऐसे आदमी का मार्ग तभी सुधर सकता है जब उसे जीवन में कोई गहरी ठेस पहुँचे या गंभीर घटना घटे। नासमझ आदमी को समझाया जा सकता है। प्रकाश नासमझ नहीं है। उसका मार्ग गलत हो गया है।"

"तो क्या तुमने भी सुना है कुछ उसके विषय में ?"

सरोज रानी बात बदलकर बोलीं, "कोई विशेष बात नहीं है। ऐसे ही नरेन्द्र गत वर्ष कह रहा था कि उसका रैस्टीकेशन होते-होते बचा। कमिश्नर साहब के कारण उसे क्षमा कर दिया गया। दो वर्ष से फर्स्ट-ईयर में फेल हो रहा है। वह क्या पढ़ेगा ? ऐसे बच्चे कालिज में पढ़ने के लिये नहीं जाते।"

मेजर जनरल नाहरसिंह को सरोज की बात सुनकर कुछ क्रोध-सा आगया। वह बोले, "इसका अर्थ यह हुआ कि केशवचन्द्र ने ही उस लड़के का मार्ग गलत किया है। प्रिंसिपल साहब को अपने प्रभाव में लाकर उन्होंने उसका रैस्टीकेशन नहीं होने दिया। उनके स्थान पर मैं होता और मेरे बेटे ने ऐसा घृणित कार्य किया होता तो मैं स्वयं प्रिंसिपल से कहकर उसका रैस्टीकेशन कराता। बुराई को [illegible] बुराई कभी दूर नहीं होती।"

सरोज रानी ने इस विषय को आगे न बढ़ाकर [illegible] उधर की बातें छेड़दीं और फिर सब उन्हीं बातों में [illegible]

ड्राइङ्ग-रूम में चले गये ।

"नरेन्द्र कहाँ है ? सम्भवतः अभी टैनिस खेलकर नहीं लौटा ।" मेजर साहब ने कहा ।

सरोज रानी बोलीं, "आज उसका फ़ाइनल मैच है । तनिक देर से आने के लिये कह गया है ।"

"आज कॉलेज गयी थी बेटी ?" मेजर साहब ने शीला से पूछा ।

"जी, गयी थी पिताजी ।"

"क्या लैक्चर्स आरम्भ हो गये ?"

"कुछ प्रोफैसर्स तो आने लगे हैं पिताजी ! और कुछ घण्टे अभी खाली रहते हैं । इस सप्ताह में पढ़ाई आरम्भ होजायगी ।"

"मन लगाकर पढ़ना बेटी ! आज तुम्हारे प्रिंसिपल साहब मिले थे । बहुत भले आदमी हैं । वह हमारे सहपाठी रहे हैं ।"

थोड़ी देर पश्चात नरेन्द्र भी टैनिस खेलकर लौट आया ।

सरोज रानी ने आजकी कॉलेज में होने वाली घटना का अपने पति को कोई संकेत नहीं दिया ।

भोजन के उपरान्त जब चारों फिर ड्राइङ्ग-रूम में आये तो मेजर साहब खेदपूर्ण शब्दों में बोले, "सरोज ! आज अचानक ही हमारी केशवचन्द्रजी से भेंट हो गयी । कितने नेक आदमी हैं कि तुमसे क्या कहूं । परन्तु जितने वह नेक हैं उतना ही उनका लड़का प्रकाश दुश्चरित्र होता जा रहा है । आये दिन उनके पास उसकी शिकायतें आती हैं । बेचारे बहुत दुखी थे अपने बेटे की करतूतों पर ।"

"यही तो दुर्भाग्यपूर्ण बात होती है माता-पिता के लिये । यदि किसी के बच्चे उसकी इच्छा के अनुसार आचरण नहीं करते हैं तो उनका जीवन निरर्थक हो जाता है । उनकी आशाओं पर तुषारापात होता है और उनके जीवन का स्वप्न विश्रृंखलित हो उठता है । उन्हें अपना जीवन व्यर्थ-सा प्रतीत होने लगता है ।"

"इसमें क्या सन्देह है सरोज ! बच्चे माता-पिता की आशाओं के

सुमन होते हैं। यदि ये सुमन उनकी आंखों के सामने ही सड़ने लगें तो उनकी क्या दशा होगी? इसका अनुमान वे ही लगा सकते हैं जिन पर यह व्यतीत होता है। आज मैंने देखा कि केशवचन्द्र का चेहरा उतरा हुआ था। उन्होंने कितने दर्दभरे शब्दों में प्रकाश के विषय में मुझसे बातें कीं कि मैं क्या कहूं? इतने भले घर का लड़का ऐसे आचरण करे, यह बात समझ में नहीं आती। मैंने सोचा कि मैं किसी दिन अवसर देखकर प्रकाश को समझाने का प्रयत्न करूं।"

सरोज रानी बोली, "ये बातें समझाने से समझ में नहीं आतीं नरेन्द्र के पिताजी! किसी व्यक्ति का मार्ग एक बार गलत हो जाने पर फिर उसे सही मार्ग पर लाना बहुत कठिन कार्य है। ऐसे आदमी का मार्ग तभी सुधर सकता है जब उसे जीवन में कोई गहरी ठेस पहुंचे या गंभीर घटना घटे। नासमझ आदमी को समझाया जा सकता है। प्रकाश नासमझ नहीं है। उसका मार्ग गलत हो गया है।"

"तो क्या तुमने भी सुना है कुछ उसके विषय में?"

सरोज रानी बात बदलकर बोली, "कोई विशेष बात [illegible] ही नरेन्द्र गत वर्ष कह रहा था कि उसका [illegible] कमिश्नर साहब के कारण उसे क्षमा कर दिया [illegible] ईयर में फ़ेल हो रहा है। वह क्या पढ़ेगा [illegible] के लिये नहीं जाते।"

मेजर जनरल नाहरसिंह को [illegible] आगया। वह बोले, "उनका अर्थ [illegible] लड़के का मार्ग दमन किया है। [illegible] नाकर उन्होंने उसका रेस्टीकेशन [illegible] मैं होता और मेरे बेटे ने ऐसा [illegible] प्रिंसिपल से कहकर उसका रेस्टीकेशन [illegible] बुराई कभी दूर नहीं होती।

सरोज रानी ने उस विषय [illegible] बदर की बातें छेड़ीं और फिर [illegible]

मनोहर नरेन्द्र और शीला से पृथक होकर सीधा अपने छात्रावास में गया। उसे हार्दिक सन्तोष था कि प्रकाश और दिनेश ने उसके लिये जिन अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया था उनका वह उन्हें सही उत्तर दे सका। मनोहर सीधा-सादा लड़का अवश्य था परन्तु बुद्धि और शारीरिक बल में वह किसी से कम नहीं था। उसकी केवल दो ही बातों में रूचि थी, एक अध्ययन और दूसरी अपने बदन की पुष्टि में। कसरत करने में उसकी विशेष रूचि थी। उसकी भुजाओं में अतुल शक्ति थी। उसकाबदन बहुत फुर्तीला था। अपने स्कूल में वह खेल-कूद में ख्याति प्राप्त कर चुका था। उसके शिक्षक उसे प्यार करते थे। वह सभी के स्नेह का पात्र रहा था।

मनोहर छात्रावास में जाकर अपने कमरे में पहुँचा और पलंग पर लेट गया। उसे रह-रह कर उस घटना की याद आ रही थी जो आज उसके जीवन में घटी थी। प्रकाश और दिनेश का उसे 'गावदी' कहकर तिरस्कृत करना, उसकी सादगी पर हँसना, मुस्कराना और खिल्लियाँ उड़ाना, प्रिंसिपल का उपहास करना, हॉल से बाहर निकलती हुई लड़कियों के पीछे लपककर जाना, शीला को कॉलेज के फाटक की ओर अकेली जाती देखकर उसका पीछा करना, जूते से उसकी चप्पल दबाकर उसे तोड़ देना, फिर सहानुभूति प्रकट करना, शीला का स्थिति को समझते हुए उन्हें फटकारना, नरेन्द्र का बीच में आजाना, उसका प्रकाश के मुँह पर चपत लगाना, प्रकाश और दिनेश का नरेन्द्र पर झपटना और फिर उसने जो किया वह सम्पूर्ण घटना उसकी आँखों के सामने सजीव हो उठी।

मनोहर पलंग पर लेटा-लेटा हँस पड़ा। उसके मुख से निकला,

डेढ़-डेढ पसली के लड़के भी गुण्डागर्दी करने का साहस करते हैं।
लज्जा नही आती इन्हें। साधारण-सा एक हाथ इनकी गुद्दी पर पड़
जाये तो औंधे मुँह गिरें और मुँह, नाक से रक्त प्रवाहित होने लगे।
सब गुण्डागर्दी करनी भूल जायें।'

उसके पश्चात् मनोहर का ध्यान एकमात्र शीला पर केन्द्रित हो
गया। उसने कहा, "लड़की चरित्रवान है और साहसी भी। लड़कियों
में इतना आत्मबल होना ही चाहिये। इस तरह के आवारा लडकों को
मनमानी करने का अवसर नही देना चाहिये।"

मनोहर फिर बहुत देर तक शीला के विषय मे सोचता रहा।
नरेन्द्र ने उससे जो दो-चार बातें की थी, उनसे भी वह प्रभावित हुआ
था। उसकी बातों मे सौम्यता थी।

सन्ध्या-समय होगया था। सूर्य अस्त हुआ चाहता था। रात्रि का
अधकार धीरे-धीरे अपने पैर फैला रहा था। मनोहर को कमरे में
अकेले पडा रहना अच्छा न लगा। वह पलग से उठकर खडा हुआ
और कमरे का द्वार बन्द करके उसपर ताला चढ़ा दिया। उसने सोचा
तनिक मैदान की ओर घूम आये।

छात्रावास से बाहर निकलकर मनोहर खेल के मैदान के निकट
पहुँचा। उसने इसी वर्ष कॉलिज में प्रवेश प्राप्त किया था, इसलि
कोई मित्र नही था उसका। वह अकेलेपन का अनुभव कर रहा था
मित्रों की चौकड़ियाँ बनाना उसके स्वभाव के विरुद्ध था, परन्तु फि
भी अपने पुराने स्कूल मे उसके एक-दो साथी अवश्य थे, जिन्हें
घूमने जाते समय अपने साथ ले लिया करता था।

मनोहर अकेला ही खेल के मैदान के निकट पहुँचा। कुछ देर
फुटबॉल के मैदान के पास खडा होकर खेल देखता रहा। फिर
बढ़कर हॉकी के मैदान के पास पहुँचा। वहाँ भी उसने कुछ
व्यतीत किया।

मनोहर ने देखा हॉकी के मैदान से कुछ दूर

था। टेनिस-लॉन के चारों ओर दर्शकों की भीड़ थी। बहुत से विद्यार्थी जमा थे। मनोहर अनायास ही उस ओर बढ़ गया।

मनोहर ने देखा टेनिस का मैच हो रहा था। आज फ़ाइनल मैच था। मनोहर की दृष्टि टेनिस के खिलाड़ियों पर गयी तो उसने देखा कि एक ओर का खिलाड़ी नरेन्द्र था। नरेन्द्र को देखकर मनोहर की मैच में उत्सुकता बढ़ गयी। मनोहर वहीं खड़ा हो गया और जब तक मैच चलता रहा, देखता रहा। नरेन्द्र का खेल उसे बहुत प्यारा लगा।

टेनिस-मैच में नरेन्द्र विजयी हुआ। खेल समाप्त होने पर मनोहर ने सोचा कि वह आगे बढ़कर नरेन्द्र को उसकी सफलता पर बधाई दे, परन्तु उसे उसके बहुत से साथियों की भीड़ घेरे हुए थी, इसलिये वह पीछे ही खड़ा रहा।

मनोहर लॉन के किनारे अकेला खड़ा था। अचानक नरेन्द्र की दृष्टि मनोहर पर गयी। नरेन्द्र भीड़ को चीरकर बाहर निकला और सीधा मनोहर के निकट जाकर बोला, "तुम यहाँ हो मनोहर? क्षमा करना, मैंने बहुत देर से देखा तुम्हें।" यह कहकर उसने मनोहर को बाहों में भर लिया।

मनोहर मुस्कराकर बोला, "बहुत अच्छा खेलते हो नरेन्द्र! तुम्हारा खेल मुझे बहुत पसन्द आया। मैं तो अचानक ही इधर आ गया था।" मनोहर ने नरेन्द्र के इस मिलन में आत्मीयता का अनुभव किया।

"क्या तुम्हें भी टेनिस में रुचि है मनोहर?" नरेन्द्र ने पूछा।

मनोहर मुस्कराकर बोला, "केवल देखने भर की, खेलने की नहीं। मैं देहाती लड़का ठहरा नरेन्द्र बाबू! इसलिये देहाती खेलों में ही मेरी अधिक रुचि है। उन्हीं की हमारे स्कूल में खेलने की सुविधा थी। टेनिस देहात के स्कूलों में कौन खेलता है? फुटबाल खेलने की हमारे स्कूल में सुविधा अवश्य थी, सो वह थोड़ा-बहुत खेलना मुझे अवश्य

आता है।

नरेन्द्र मनोहर को अपने साथ मैच के पश्चात् होने वाली पार्टी में लेगया और उसके पश्चात् पूछा, "मनोहर भाई ! क्या आपने किसी छात्रावास में प्रवेश प्राप्त किया है ?"

"बाहर से आनेवाले विद्यार्थियों के लिये छात्रावास को ही मैं उपयुक्त स्थान समझता हूँ। आइये आपको अपना कमरा दिखा दूँ। यहीं निकट ही तो है, न्यू-हाउस में। बीस नम्बर का कमरा है।"

नरेन्द्र ना न कर सका। वह मनोहर के साथ उसके छात्रावास में गया और उसके परिवार के विषय में बहुत-सी बातें ज्ञात कीं।

मनोहर बोला, "भाई नरेन्द्र ! मैं तो अपने पिताजी के विषय में केवल इतना ही जानता हूँ कि वह भारतीय सेना में सूबेदार थे। गत महायुद्ध में वह बर्मा गये थे। उसके पश्चात् वह वहाँ से लौटकर नहीं आये। माताजी बताती हैं कि वह नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आज़ाद-हिन्द-सेना में सम्मिलित होगये थे और इम्फाल के मोर्चे पर उनका प्राणान्त हुआ।"

यह सूचना प्राप्त कर नरेन्द्र की उत्सुकता उनका नाम ज्ञात करने की हुई। उसने पूछा, "मनोहर भाई ! आपके पिताजी का क्या नाम था ?"

"सूबेदार लखनसिंह।" मनोहर ने बताया।

नरेन्द्र बोला, "तब तो सम्भव है कि मेरे पिताजी आपके पिताजी से परिचित हों। गत महायुद्ध में मेरे पिताजी भी बर्मा के मोर्चे पर गये थे।"

"सम्भव है वह उनसे परिचित हों। आप उनसे किसी समय पिताजी का नाम लेकर ज्ञात करें। यदि जानते होंगे तो निश्चय ही वह उन्हें भूले नहीं होंगे।" मनोहर बोला।

मनोहर और नरेन्द्र में आज की इस प्रथम भेंट ने ही पर्याप्त सद्भावना को जन्म दिया। दोनों को ही प्रतीत हुआ कि "ह

स्पर आत्मिक सम्बन्ध बन गये। अब वे आपस में एक-दूसरे से बड़े और छोटे भाई के समान बातें कर रहे थे।

अन्त में नरेन्द्र खड़ा होता हुआ बोला, "भाई मनोहर! अब मैं तुमसे आज्ञा चाहूँगा। तुमसे बिछुड़ने का मन तो नहीं हो रहा परन्तु समय पर्याप्त होगया है। मैं माताजी से कुछ देरी से लौटने को तो कह आया था परन्तु अब देर कुछ अधिक होती जा रही है। पिताजी भी आगये होंगे और वे लोग उस समय तक भोजन नहीं करेंगे जब तक मैं घर नहीं पहुँच जाऊँगा।"

"तब तो आपको और विलम्ब नहीं करना चाहिये। घर पर पहुँचने में देर होने से घरवालों को चिन्ता होती है। चलिये कुछ दूर तक आपको छोड़ आऊँ।"

मनोहर कॉलेज से बाहर तक नरेन्द्र को पहुँचाने गया। विदा होते समय नरेन्द्र बोला, "भाई मनोहर! किसी दिन तुम मेरे साथ हमारे घर चलना। तुम्हें माताजी और पिताजी से भेंट करके हार्दिक प्रसन्नता होगी।"

"अवश्य चलूँगा नरेन्द्र भय्या! चलूँगा क्यों नहीं? माताजी और पिताजी के दर्शन करके किसे प्रसन्नता नहीं होती?"

नरेन्द्र ने अपनी कोठी की ओर प्रस्थान किया और मनोहर अपने छात्रावास की ओर चल दिया।

मनोहर का चित्त उस समय बहुत प्रसन्न था। शहर में आकर उसे एक साथी मिला था और साथी भी इतने अच्छे स्वभाव का। नरेन्द्र के व्यक्तित्व ने उसे प्रभावित किया था। उसके परिवार का परिचय प्राप्त करके उसे हार्दिक संतोष हुआ था।

मनोहर कॉलेज के फाटक पर आया तो दिन की घटना एक बार फिर उसके मानस-पटल पर उभर आयी। वह एक क्षण के लिये वहीं खड़ा हो गया। मनोहर पहले तो बहुत देर तक उन दो लड़कों की चरित्रहीनता के विषय में सोचता रहा और फिर उसका ध्यान अना-

पास ही शीला की समझदारी पर जाकर टिक गया। उसने मन में कहा 'यदि कोई साधारण बुद्धि की लड़की होती तो वह इस भ्रम में फँस सकती थी कि सम्भवतः उस लड़के का पैर उसकी चप्पल पर अनजाने में ही पड़ गया होगा। परन्तु उसे स्थिति की सचाई का ज्ञान करने में एक क्षण भी न लगा। फिर वह इस प्रकार अकेले में दो लड़कों को देखकर भयभीत होने वाली भी नहीं थी। उसने कितने स्पष्ट शब्दों में उन्हें फटकारते हुए कहा था, 'क्या कॉलेज में आप लोग ऐसे ही नीच आचरण करने के लिये आते हैं ?'

उसके पश्चात् मनोहर की आँखों के सामने शीला का वह प्रभ-पूर्ण चेहरा दमदमा उठा जो नरेन्द्र के घटना-स्थल पर पहुँचने पर बन गया था। मनोहर कुछ देर तक शीला की उस मनोहर कांतियुक्त आभा को अपनी आँखों की पुतलियों में लिये खड़ा रहा।

कुछ देर वहाँ खड़ा रहकर कॉलिज के सामने से घूमता हुआ मनोहर अपने छात्रावास में चला गया।

मनोहर ने रात्रि में बैठकर आज की घटना का सम्पूर्ण वृतान्त अपनी माताजी को लिखा और फिर पत्र एक लिफ़ाफ़े में बन्द करके दूसरे दिन डाक में डालने के लिये अपनी मेज़ पर रख दिया।

स्पर आत्मिक सम्बन्ध बन गये। अब वे आपस में एक-दूसरे से बड़े और छोटे भाई के समान बातें कर रहे थे।

अन्त में नरेन्द्र खड़ा होता हुआ बोला, "भाई मनोहर! अब मैं तुमसे आज्ञा चाहूँगा। तुमसे बिछुड़ने का मन तो नहीं हो रहा परन्तु समय पर्याप्त होगया है। मैं माताजी से कुछ देरी से लौटने को तो कह आया था परन्तु अब देर कुछ अधिक होती जा रही है। पिताजी भी आगये होंगे और वे लोग उस समय तक भोजन नहीं करेंगे जब तक मैं घर नहीं पहुँच जाऊँगा।"

"तब तो आपको और विलम्ब नहीं करना चाहिये। घर पर पहुंचने में देर होने से घरवालों को चिन्ता होती है। चलिये कुछ दूर तक आपको छोड़ आऊँ।"

मनोहर कॉलेज से बाहर तक नरेन्द्र को पहुंचाने गया। विदा होते समय नरेन्द्र बोला, "भाई मनोहर! किसी दिन तुम मेरे साथ हमारे घर चलना। तुम्हें माताजी और पिताजी से भेंट करके हार्दिक प्रसन्नता होगी।"

"अवश्य चलूँगा नरेन्द्र भय्या! चलूँगा क्यों नहीं? माताजी और पिताजी के दर्शन करके किसे प्रसन्नता नहीं होती?"

नरेन्द्र ने अपनी कोठी की ओर प्रस्थान किया और मनोहर अपने छात्रावास की ओर चल दिया।

मनोहर का चित्त उस समय बहुत प्रसन्न था। शहर में आकर उसे एक साथी मिला था और साथी भी इतने अच्छे स्वभाव का। नरेन्द्र के व्यक्तित्व ने उसे प्रभावित किया था। उसके परिवार का परिचय प्राप्त करके उसे हार्दिक संतोष हुआ था।

मनोहर कॉलेज के फाटक पर आया तो दिन की घटना एक बार फिर उसके मानस-पटल पर उभर आयी। वह एक क्षण के लिये वहीं खड़ा हो गया। मनोहर पहले तो बहुत देर तक उन दो लड़कों की चरित्रहीनता के विषय में सोचता रहा और फिर उसका ध्यान प्रना-

ग्रास ही शीला की समझदारी पर आकर टिक गया। उसने मन में कहा 'यदि कोई साधारण बुद्धि की लड़की होती तो वह इस भ्रम में फँस सकती थी कि सम्भवतः उस लड़के का पैर उनकी चप्पल पर अनजाने में ही पड़ गया होगा। परन्तु उसे स्थिति की सचाई का ज्ञान करने में एक क्षण भी न लगा। फिर वह इस प्रकार सामने में दो लड़कों को देखकर भयभीत होने वाली भी नहीं थी। उसने कितने स्पष्ट शब्दों में उन्हें फटकारते हुए कहा था, 'क्या कालिज में आप लोग ऐसे ही नीच आचरण करने के लिये आते हैं ?'

उसके पश्चात् मनोहर की आँखों के सामने शीला का वह भय-पूर्ण चेहरा दमदमा उठा जो नरेन्द्र के घटनास्थल पर पहुँचने पर बन गया था। मनोहर कुछ देर तक शीला की उस मनोहर कान्तियुक्त आभा को अपनी आँखों की पुतलियों में लिये खड़ा रहा।

कुछ देर वहाँ खड़ा रहकर कालिज के सामने से घूमता हुआ मनोहर अपने छात्रावास में चला गया।

मनोहर ने रात्रि में बैठकर आज की घटना का सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी माताजी को लिखा और फिर पत्र एक लिफाफे में बन्द करके दूसरे दिन डाक में डालने के लिये अपनी मेज पर रख दिया।

प्रकाश और दिनेश उस समय तो किसी प्रकार अपनी जान बचा-कर वहाँ से भाग निकले और जब तक वहाँ से पर्याप्त दूर नहीं निकल गये तबतक घूमकर नहीं देखा। परन्तु उस अपमान की ग्लानि उनके मन में कम नहीं थी। प्रकाश अपने आपको गुण्डों का नेता समझता था। उसके विचार से उसका कॉलेज के विद्यार्थियों पर आतंक था। आज उसके स्वाभिमान को गहरी ठेस लगी। उसके अन्दर एक घुटन-सी पैदा हो रही थी। इससे पूर्व कभी कॉलेज का कोई छात्र उसकी ओर आंख भरकर भी नहीं देख पाया था।

दिनेश दौड़ता-दौड़ता थक गया था। वह बोला, "प्रकाश बाबू! आइये थोड़ी देर इस रेस्टूाँ में आराम करलें। मेरा हलक बिल्कुल सूख गया है।"

प्रकाश बिना एक शब्द बोले दिनेश के साथ रेस्टूाँ में चला गया। दिनेश ने बैरे को दो बोतलें ऑरेंज की लाने को कहा।

प्रकाश बोला, "दिनेश! आज हम लोगों को कॉलेज में अपमानित होना पड़ा। किसी ने देखा होगा तो अपने मन में क्या सोचा होगा?"

"अरे सोचने भी दो प्रकाश! किसी के सोचने-विचारने से आपका क्या बनता-बिगड़ता है? आपका आतंक है सारे कॉलेज पर। किसी का साहस नहीं जो तुम्हारे सामने सिर उठा सके।" दिनेश प्रकाश के अन्दर झूठे अभिमान की हवा भरता हुआ बोला।

प्रकाश कुछ बोला नहीं। उसका मन खिन्न ही बना रहा। उसका सिर लज्जा से झुका हुआ था।

दिनेश ने ऑरेंज की बोतल पीकर तनिक गला तर किया और

फिर सीनो देखकर बैरे को आइस-क्रीम इत्यादि का आर्डर देता हुआ बोला, "तुरन्त लाओ। देर न करना तनिक भी। साहब को बहुत शीघ्र किसी आवश्यक कार्य से जाना है।"

प्रकाश के लिये जब उसका कोई सहपाठी साहब शब्द का प्रयोग करता था तो उसकी आत्मा प्रसन्न होजाती थी। दिनेश उसकी इस दुर्बलता से परिचित था। वह इस शब्द का प्रयोग विशेषतः रेस्ट्रां में बैठकर किया करता था, जिससे उसे बैरे को आर्डर देने में कोई कठिनाई न हो।

बैरा आर्डर का सामान लाकर मेज पर रख गया और दिनेश ने उसपर हाथ साफ करना भी आरम्भ कर दिया; परन्तु प्रकाश के मस्तिष्क में अभी तक अपने अपमान की ही बात चक्कर लगा रही थी। वह बोला, "दिनेश! वह लड़का कौन था, जिसने मेरे ऊपर हाथ उठाया?"

"उसे नहीं जानते प्रकाश बाबू?"

"नहीं, मैं नहीं जानता उसे।" जानते हुए भी अनजान बनकर प्रकाश बोला।

"वह उस लड़की का बड़ा भाई है। हमारे ही कॉलेज में पढ़ता है। मैंने तुम्हें पहले ही उस लड़की को छेड़ने के लिये मना किया था। मैं तो अब भी कहता हूँ कि यह अच्छा ही हुआ कि बात दब गयी। कहीं बात बढ़ जाती और लड़की के पिताजी के पास तक पहुँच गयी होती तो बहुत बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती।" दिनेश ने कहा।

प्रकाश ने दिनेश की इस बात में अपना अपमान अनुभव किया। वह त्योरी चढ़ाकर बोला, "देखो दिनेश! यदि तुम इतने कायर हो तो मेरे साथ रहना छोड़ दो। मेरा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं।"

"मैं और कायर! यह भला तुम क्या कह रहे हो प्रकाश! कायर होता तो क्या तुम्हारे गाल पर चपत पड़ते ही उस नरेन्द्र के बच्चे पर बाज की तरह झपट पड़ता? तुमने देखा नहीं, उसे मैंने कैसे घर

दबोचा था ? परन्तु उस 'गावदी' को क्या करता, जिसने मुझे और तुम्हें एक ही झटके में अपनी ओर खींचकर उसे मुक्त कर दिया ?"

"उस लड़के के हाथ, हाथ नहीं लोहे के शिकंजे थे दिनेश ! मेरी कलाई अभी तक दर्द कर रही है।" प्रकाश अपनी कलाई को दूसरे हाथ से दबाते हुए बोला।

"मुझे तो लग रहा था जैसे मेरी कलाई की हड्डी ही चटख गयी प्रकाश ! अभी जाकर तेल-मालिश करनेवाले को मुझे अपना हाथ दिखाना होगा। कहीं ऐसा न हो कि यह हाथ ही बेकार होकर रह जाय।"

"मेरी कलाई में भी बड़ा दर्द हो रहा है।" फिर कुछ ठहरकर बोला, "दिनेश ! हमने आज एक भयंकर भूल की।"

"वह क्या ?" दिनेश ने पूछा।

"हमने ऐसे लड़के का उपहास करके व्यर्थ उसे अपना शत्रु बना लिया। ऐसे लड़के को हमें अपने गुट में सम्मिलित करना चाहिये था। यह बड़े काम का लड़का साबित हो सकता है।"

"यह बात तुमने लाख रुपये की कही प्रकाश बाबू ! ऐसे लड़के को हाथ में रखने से अच्छे-अच्छों पर आपका आतंक रहेगा। आज यदि वह बीच में न कूदा होता तो मोर्चा मार लिया था हमने। बादमें चाहे जो भी क्यों न होता। एक बार तो उसे ज़मीन चटा ही देते।"

बैरे ने बिल लाकर सामने रखा और प्रकाश ने उसे चुकता किया। फिर दोनों वहाँ से निकल कर चल दिये। प्रकाश उस घटना को लाख भुलाने का प्रयास कर रहा था परन्तु वह उसे भुला नहीं पा रहा था। वह घटना बार-बार उभर कर उसके मस्तिष्क पर छाजाती थी। यह प्रथम अवसर था उसके जीवन का जब उसे किसी लड़की के सामने इस प्रकार दीन वाणी में गिड़गिड़ाकर क्षमा-याचना करनी पड़ी थी। आज भी सम्भवतः प्रकाश कभी क्षमा-याचना न करता यदि वह किसी प्रकार अपनी कलाई को मनोहर के शिकंजे से छुड़ा पाता।

प्रकाश को रह-रहकर नरेन्द्र पर क्रोध आरहा था। उसका क्रोध

मनोहर से अधिक नरेन्द्र पर था। यदि वह बीच में न आ गया होता और झगड़े की स्थिति पैदा न होती तो मनोहर को उनके बीच में टपकने का अवसर न मिलता। यह अवसर उसे इसीलिये मिल गया कि झगड़े की स्थिति पैदा हो गयी थी।

प्रकाश बोला, "दिनेश ! आज कॉलेज में टेनिस का फाइनल मैच है। चलो वहाँ चलें। वहाँ इस समय बड़ी रौनक होगी।"

"अवश्य प्रकाश बाबू ! टेनिस-मैच [illegible] । पता नहीं टेनिस-मैच इन्हें इतना रुचिकर क्यों लगता है ?"

प्रकाश ने दिनेश की बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। वह सीधा टेनिस-लॉन की ओर बढ़ चला। दिनेश [illegible] साथ था।

टेनिसलॉन के निकट जाकर प्रकाश ने देखा मैच में खेलने वाले खिलाड़ियों में एक नरेन्द्र था। नरेन्द्र को अपने सामने देखकर उसके तन-बदन में ज्वाला सुलग उठी, परन्तु वह क्रोध [illegible] की ज्वाला को पीकर ऊपर से मुस्कराता रहा।

"दिनेश ! यह तो नरेन्द्र मालूम देता है।"

"हाँ-हाँ ! वही तो है। फाइनल में यही तो आया है।" दिनेश बोला।

"क्या टेनिस अच्छी खेलता है यह ?"

"बहुत अच्छी ! इस मैच में यही विजयी होगा।"

"होने दो, अपने को इससे क्या ? [illegible] तो मैंने निश्चय किया है कि एक दिन इसे आज की घटना का आनन्द चखाकर रहूँगा। एक दिन भी भी इसकी उसी 'गावदी' के हाथों मरम्मत न करायी तो मेरा नाम प्रकाश नहीं।" प्रकाश सगर्व बोला।

"तुम एक दिन यह अवसर [illegible] प्रकाश बाबू [illegible] विश्वास है। उस 'गावदी' को अपने चंगुल में फँसा लेना बायें हाथ का खेल है। वह तो तुम्हारे हाथ में कठपु[illegible] नाचेगा, कठपुतली की तरह। मैं उसपर वह रंग चढ़ाऊँ [illegible]

क्या याद रखे। जहाँ उसे एक बार यह पता चला कि तुम डिप्टी कमिश्नर केशवचन्द्रजी के सुपुत्र हो तो वह आपका सर्वदा के लिये दास हो जायगा।"

प्रकाश आगे बढ़कर लॉन के निकट पहुँच गया और उस दिशा में बढ़ा, जिधर लड़कियाँ खड़ी थीं।

मैच आरम्भ हो गया था। दोनों खिलाड़ी अपना-अपना कौतुक दिखा रहे थे। दोनों खिलाड़ियों के प्रशंसक लॉन के दोनों ओर खड़े थे। जो खिलाड़ी अपने खेल में किसी विशेष कुशलता का प्रदर्शन करता था उसी के प्रशंसक करतल-ध्वनि से उसका उत्साह बढ़ाते थे। बड़ा मनोरंजक खेल चल रहा था, परन्तु प्रकाश की दृष्टि और मन खेल की दिशा से उदासीन-से थे। सत्य भी यही था कि वह वहाँ मैच देखने के लिये नहीं गया था। वह तो ज़रा तफ़री के लिये गया था।

मैच देखते-देखते प्रकाश की दृष्टि प्रतिमा पर गयी, जो लॉन के दूसरी ओर खड़ी मैच देख रही थी। प्रतिमा ने हिन्दू कॉलेज में प्रकाश के साथ ही प्रवेश प्राप्त किया था। अब वह बी० ए० की प्रथम कक्षा में नरेन्द्र के साथ थी और प्रकाश बाबू अभी एफ० ए० के प्रथम वर्ष में ही पढ़ रहे थे।

प्रकाश अपना स्थान छोड़कर मैदान के पिछे से होता हुआ थोड़ी ही देर में प्रतिमा के निकट जा खड़ा हुआ और बड़े तपाक से पूछा, "प्रतिमादेवी ! कितनी देर हो चुकी मैच को आरम्भ हुए ?"

प्रतिमा प्रकाश से बोलना नहीं चाहती थी और उसे प्रकाश का अपने निकट आकर खड़ा होना भी भला नहीं लगा परन्तु फिर भी इतना उत्तर उसे देना ही पड़ा, "खेल अभी दस मिनट पूर्व ही आरम्भ हुआ है।"

प्रकाश बाबू केवल इतना उत्तर प्राप्त करके संतुष्ट होने वाले नहीं थे। यह तो श्रीगणेश था उनकी बातों का। वह मुस्कराते हुए

चौंके, "मैच तो बहुत अच्छा चल रहा है प्रतिमादेवी ! नरेन्द्र बाबू तो आपके सहपाठी हैं।"

प्रतिमा प्रकाश से बातें करना पसन्द नहीं करती थी, परन्तु उसने जो बात कही उसके व्यंग्य से वह तिलमिला उठी। वह मन में कुढ़-कर ऊपर से मुस्कराती हुई बोली, "नरेन्द्र एक दिन आपके भी सहपाठी थे प्रकाश बाबू ! क्या इन्हें इतना शीघ्र भूल गये आप ? एक ही कक्षा में रहकर आपने इतना अगाढ़ अध्ययन करने का विचार न किया होता तो आप आज भी इनके सहपाठी होते। परन्तु मैंने तो सुना है कि आपको इतना उथला अध्ययन रुचिकर नहीं है।"

प्रतिमा की बात सुनकर उसके पास खड़ी लड़कियाँ प्रकाश की ओर देखकर मुस्करा दीं।

लड़कियों को अपनी ओर मुस्कराते देखकर प्रकाश ने तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं किया। वह गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर बोला, "प्रतिमादेवी ! मेरी दो वर्ष की असफलता का आपको ही नहीं, कई लड़कियों को बहुत खेद है। परन्तु यह सत्य है कि मैं पढ़ाई में उथलापन पसन्द नहीं करता। जब तक पूर्ण योग्यता प्राप्त न हो जाय तब तक परीक्षा पास करने से क्या लाभ ?"

प्रकाश की बात सुनकर प्रतिमा और अन्य लड़कियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं परन्तु प्रकाश गम्भीर ही बना रहा।

"आप हँस रही हैं प्रतिमादेवी ! मैं यह बात मन से कह रहा हूँ। मैं कोई भी बात कहता हूँ तो ऊपर से नहीं, अन्तरात्मा से कहता हूँ"

प्रकाश की इस बात का प्रतिमा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह मैच देखने लगी और अपना मुँह दूसरी ओर को कर लिया।

प्रकाश फिर बोला, "प्रतिमादेवी ! नरेन्द्र बाबू टेनिस खेलते खूब हैं। आप निश्चय समझें, चेम्पियन यही होंगे इस बार टेनिस के।"

प्रतिमा फिर भी कुछ न बोली। प्रतिमा की सहेली ने कहा,

"हमने तो सुना था कि इस वार प्रकाश वावू चेम्पियन होने वाले हैं। क्या आपने भाग नहीं लिया मैच में ?"

प्रकाश बोला, "होने वाली वात को कोई नहीं रोक सकता ललित ! मेरा रैकेट न टूटता तो निश्चय ही मैं चेम्पियन वनके दिखा देता।"

प्रकाश की इस वात पर प्रतिमा और अन्य लड़कियाँ अपनी हँसी न रोक सकीं।

ललित की छोटी वहन वरावर एक टक प्रकाश की ओर देख रही थी। उसने इसी वर्ष कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया था और वह हॉल में प्रिंसिपल साहव के व्यख्यान के समय शीला के पास वैठी थी। उसने शीला के साथ ही कन्या-विद्यालय से मैट्रिक-परीक्षा पास की थी। वह हॉल से शीला के साथ-साथ बाहर निकली थी और कुछ दूर आगे वढ़-कर अपनी वहन ललिता की खोज में उससे पृथक् हो गयी थी परन्तु ललित से भेंट होने पर फिर शीला की ओर वढ़ चली थी। इसी बीच उसने वह काण्ड होता देखा जो शीला पर घटा तो वह वहीं एक वृक्ष के निकट ठिठक कर खड़ी होगयी थी परन्तु उसने देखा सम्पूर्ण काण्ड था।

उसे प्रकाश को पहचान लेने में अधिक विलम्व न हुआ। उसे पह-चानते ही उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। वह अपनी वहन ललित से कान में धीरे से वोली, "जीजी ! तनिक इनसे यह तो पूछिये कि इनका गाल लाल क्यों हो रहा है ?"

"गाल लाल कहाँ है मनोरमा ?"

"आप पूछिये तो सही। तव मैं वताऊँगी कि गाल लाल कहाँ है। ज्ञात होता है यह अपने को वहु दक्ष्य उपहास करने वाला समझते हैं।"

"गुण्डा है।" ललित ने धीरे से कहा।

"आज खूव गुण्डई झड़ी है इनकी जीजी ! तनिक पूछिये तो आप। देखिये क्या उत्तर देते हैं।"

ललित उभरकर वोली, "प्रकाश वावू ! आज आपका एक गाल लाल कैसे हो रहा है ?"

"क्यों ? मेरा गाल तो लाल नही ललित !" प्रकाश ने तनिक चेहरे को घुमाते हुए मुँह पर हाथ फेर कर कहा।

यह बात प्रतिमा की कुछ समझ में नही आयी। उसने बड़े ध्यान से उसके के चेहरे पर देखा। उसे कोई विशेष बात दिखायी नहीं दी प्रकाश के चेहरे पर।

ललिता बोली, "शायद दर्पण में मुँह देखकर नहीं चले आप घर से। क्या लड़कियों की तरह आप भी सुर्खी लगाते हैं गालों पर ? मैं कहती हूँ सुर्खी लगाना कोई बुरी बात नहीं परन्तु दोनों गालो पर बराबर सुर्खी पोता कीजिये।"

इससे पूर्व कि ललित की बात सुनकर प्रकाश कोई उत्तर देता, ललित की बहन बोली, "आपने भी हद करदी जीजी ! यह बायें गाल की लाली क्या आप इस पर पोती हुई सुर्खी समझ रही हैं ?"

"फिर क्या है यह मनोरमा ?"

यह सुनकर प्रकाश बाबू सिटपिटा गये। उसे इस बात के समझने में लेशमात्र भी शका न रही कि मनोरमा को तीसरे प्रहर की घटना का पूर्ण ज्ञान है। वह मन में कुछ भयभीत और लज्जित-सा हो उठा।

"जीजी ! मेरी सहेली शीला को तो तुम जानती हो न। इन बेचारो का पैर आज भूल से उसकी चप्पल पर पड़ गया और उसकी चप्पल टूट गयी। इतना भले आदमी जान-बूझकर तो ऐसा काम [illegible] नही सकता था। इन्होने उसकी चप्पल सुधरवाने की उससे प्रार्थना [illegible] तो वह इनके गले पड गयी। आखिर मेजर जनरल नाहरसिंह की [illegible] ठहरी। उसी समय शीला के भाई, यही नरेन्द्र बाबू, जो सामने [illegible] हैं, घटना-स्थल पर आ गये। इन महाशय को जो क्रोध आया [illegible] आव देखा न ताव, इन बेचारो के गाल पर एक करारा [illegible] कर दिया। यह गाल उसी से लाल हो गया [illegible] है इस पर।"

यह सुनकर प्रकाश का वहाँ खड़ा रहना कठिन हो गया। वह चुपके से उसी क्षण पीछे खिसककर सीधा दिनेश के पास पहुँचा और उसे साथ लेकर वहाँ से चल दिया।

प्रकाश के मस्तिष्क को अब चैन नहीं था। उसका आज जितना अपमान हुआ था उतना उसके जीवन में पहले कभी नहीं हुआ। वह दिनेश से बोला, "दिनेश ! आज की इस घटना ने हमारा बहुत अपमान किया है।"

"इसमें क्या संदेह है।" दिनेश बोला।

"यह तो मुझे भी मालूम है कि इसमें कोई संदेह नहीं है परन्तु इसका कोई उपाय भी है कि जिससे हमारा प्रभाव फीका न पड़े कॉलेज में ?"

"आपका प्रभाव फीका करने की सामर्थ्य किसमें है प्रकाश बाबू ! यह आपने क्या कह दिया ? समय आने दीजिये तब देखेंगे कि आपके प्रभाव में कैसे कमी आती है।"

दिनेश के इस वाक्य से प्रकाश के मस्तिष्क और हृदय को कोई शांति प्राप्त न हो सकी। उसके मस्तिष्क पर यही सवार रहा कि नरेन्द्र को अपमानित किये बिना उसके अपमान का निराकरण नहीं हो सकता। मनोहर पर हाथ डालने में वह अपने को असमर्थ देख रहा था और फिर उसे वह नरेन्द्र के विरुद्ध प्रयोग में ला सकेगा, इसका भी उसे विश्वास था।

वह बोला, "चलो देखा जायगा दिनेश !"

"हाँ-हाँ, देखा क्यों नहीं जायगा ? समय आने पर सब कुछ होगा। आप जो चाहते हैं, वही होगा प्रकाश बाबू ! इस नरेन्द्र के बच्चे को तो एक दिन आनंद चखाना ही होगा इसकी दुष्टता का, परन्तु मनोहर के बच्चे से मित्रता करनी होगी किसी तरह। उससे शत्रुता रखी तो किसी दिन वह हम लोगों की हड्डी-पसलिया बराबर कर देगा।" दिनेश भयभीत स्वर में बोला।

"उसकी तुम चिन्ता न करो। उसे मैं ठीक कर लूँगा। देहाती लड़का है। चार बातों मे उल्लू बन जायगा। आज ही उसे यह सब करने की क्या आवश्यकता थी यदि हमने व्यर्थ उसका उपहास करके उसे क्रुद्ध न किया होता। कौन पड़ता है किसी के झमेले में ?"

"आपकी बात सोलह आने ठीक है प्रकाश बाबू! हम लोग उसे ठीक कर लेंगे।"

दोनों बातें करते हुए कॉलेज से बाहर निकल गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब सरोज रानी ने नाश्ता तैयार किया और मेज़ पर लगा कर अपने पति तथा बच्चों को नाश्ते के लिये बुलाया तो नरेन्द्र ने अपने पिताजी से पूछा, "पिताजी ! जब आप दूसरे महायुद्ध में बर्मा के मोर्चे पर गये थे तो क्या वहाँ आपके साथ कोई सूबेदार लखनसिंहजी भी थे ?"

नरेन्द्र के मुख से सूबेदार लखनसिंह का नाम सुनकर मेजर साहब आश्चर्य-चकित रह गये। उन्होंने उसी प्रकार नरेन्द्र के चेहरे पर देखकर पूछा, "नरेन्द्र ! तुमने यह नाम किससे सुना ? सूबेदार लखनसिंह उस मोर्चे पर हमारे साथ थे। उस समय मैं भी सूबेदार ही था। बहुत प्रभावशाली व्यक्ति था। क्या डील-डौल था उसका ? शेर मालूम देता था। था भी वह सचमुच शेर ही। गोलियों की बौछारों के सामने हँसता हुआ बढ़ता था। उसका पैर मैंने कभी पीछे हटता हुआ नही देखा।"

सूबेदार लखनसिंह के व्यक्तित्व का जो परिचय नरेन्द्र के पिताजी ने दिया, उसे सुनकर नरेन्द्र के लिये शंका का कोई कारण नहीं रहा कि मनोहर उसी वीर पुरुष की सन्तान था जिसकी वीरता की प्रशंसा उसके समक्ष अभी उसके पिताजी ने की। नरेन्द्र बोला, "पिताजी ! क्या सूबेदार लखनसिंह भी आपके साथ ही मोर्चे से लौट कर भारत आये थे ?"

यह सुनकर मेजर साहब ने एक गहरा सांस लिया और गम्भीर वाणी में बोले, "बेटा नरेन्द्र ! मुझे कुछ कार्यवश युद्ध आरम्भ होने से पूर्व ही भारत आना पड़ा था। उस युद्ध में हमारी सरकार को विजय प्राप्त नहीं हुई। हमारे सैनिक बेसहारा हो गये। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

ने वहाँ आज़ाद-हिन्द-फौज की स्थापना की। सुना है सूबेदार लखन सिंह भी उसी सेना में सम्मिलित हो गये थे। उस सेना ने इम्फाल के मोर्चे पर अंग्रेज़ी सेना से मोर्चा लिया। बहुत ही विश्वस्त सूत्र से मुझे उस समय सूचना मिली थी कि उसी मोर्चे पर सूबेदार लखनसिंह स्वर्गवासी हुए।" इतना बताकर मेजर साहब ने नरेन्द्र से पूछा, "बेटा नरेन्द्र! तुमने सूबेदार लखनसिंह का नाम किसने सुना? हमारी उनसे दांत-काटी रोटी रही है। हम और वह एक ही मेस में खाना खाते थे और कभी कोई दिन ऐसा नहीं हुआ जब मैंने और उन्होंने पृथक-पृथक बैठकर भोजन किया हो।"

अब नरेन्द्र के मन में ऐसी कोई शंका नहीं रही कि जिसमें इस बात को समझने में कोई भ्रम हो कि मनोहर उन्हीं सूबेदार लखनसिंह का पुत्र है जो किसी समय उसके पिताजी के मित्र रहे थे। वह बोला, "पिताजी! हमारे कॉलिज में एक छात्र ने इस वर्ष प्रवेश प्राप्त किया है। कल अचानक ही उसने मेरी भेंट होगयी। सन्ध्या को जब मैं टेनिस खेलने गया और टूर्नामेण्ट में विजयी हुआ तो उसने मुझे आगे बढ कर बधाई दी। उसके पश्चात् वह मुझे अपने छात्रावास में लेगया। वहाँ उसने मुझे अपने पिताजी का परिचय दिया। उसने जो परिचय दिया वह ठीक वही था जो मैंने अभी-अभी आपसे सुना। जब उसने मुझे यह बताया कि उसके पिताजी गत महायुद्ध में बर्मा के मोर्चे पर गये थे तो मेरे मन में यह उत्कण्ठा पैदा हुयी कि मैं आपसे इस विषय में जानकारी प्राप्त करूँ। मैंने सोचा कि सम्भवत. आप उनके विषय में कुछ जानते हों। मुझे यह ज्ञात नहीं था कि आपकी उनसे इतनी घनिष्ठता रही थी।"

नरेन्द्र के मुख से सूबेदार लखनसिंह के पुत्र की बात सुनकर मेजर साहब के चेहरे पर अपूर्व प्रसन्नता छागयी। उन्होंने पूछा, "बेटा नरेन्द्र! क्या सचमुच सूबेदार लखनसिंह के लडके ने कॉलिज में प्रवेश प्राप्त किया है? क्या नाम है उसका?"

"उसका नाम मनोहर है पिताजी !"

मनोहर का नाम नरेन्द्र के मुख से निकलते ही शीला और सरोज रानी आश्चर्य-चकित रह गयीं । सरोज रानी बोलीं, "क्या वही लड़का मनोहर जिसके विषय में तुमने कल जिक्र किया था ?"

"जी माताजी ! वही मनोहर । कल रात्रि को उसी के साथ जाने के कारण मुझे आने में थोड़ी देर हो गयी थी । बहुत ही अच्छे स्वभाव का लड़का है । जब मैं उससे पृथक हो रहा था तो मुझे लग रहा था कि मानो मैं अपने किसी बहुत पुराने आत्मीय से बिछुड़ रहा हूँ ।"

"ठीक ऐसे ही सूबेदार लखनसिंह थे नरेन्द्र ! वह मुझे बड़ा भाई कहा करते थे । मेरी उन्होंने कभी कोई बात नहीं टाली । बहुत स्नेह-प्रिय व्यक्ति थे । किसी दिन मनोहर को अपने साथ यहाँ लाना बेटा ! भूलना नहीं ।"

"अवश्य लाऊँगा पिताजी !"

नाश्ते के पश्चात् मेजर साहब अपनी जीप में बैठकर चले गये ।

शीला ने नरेन्द्र से पूछा, "क्यों भैया ! कल संध्या को क्या तुम्हारी उनसे फिर भेंट हुई थी ?"

नरेन्द्र मुस्कराकर बोला, "पगली कहीं की । मैंने इतनी सब बातें जो अभी-अभी पिताजी के सामने कहीं, मनोहर से दोबारा भेंट न होती तो मैं कैसे जानता ? क्या मैं जानता था ये सब बातें ? ये सब उसी ने तो बताई थीं मुझे ।"

सरोज रानी बोलीं, "बेटा नरेन्द्र ! सूबेदार लखनसिंह को तो मैं भी जानती हूं । मैंने उन्हें कई बार देखा था । मैं उनकी पत्नी से भी परिचित हूँ । एक बार सूबेदार साहब अपनी पत्नी के साथ हमारे यहाँ आये थे । बहुत थोड़ी देर की भेंट थी, परन्तु उनकी पत्नी का चेहरा ऐसा नहीं है जिसे मैं पहचान न सकूँ । बड़ी सुशील और समझदार स्त्री थीं । बहुत कम बोलती थीं । तुम्हारे पिताजी को इस समय किसी अवश्यक कार्य से जाना था, इसलिये इस विषय में अधिक

बातें न कर सकें । संध्या को देखना सूबेदार लखनसिंह और उनकी पत्नी को लेकर कितनी बातें करेंगे । इनके तो वह घनिष्ठतम मित्रों में से थे ।"

शीला और नरेन्द्र कॉलिज जाने की तैयारी में लग गये। कॉलिज उनकी कोठी से अधिक दूर नहीं था । दोनों भाई-बहन घूमते हुए ही पैदल कॉलेज चले जाते थे ।

भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर नरेन्द्र ने शीला से पूछा, "शीला ! कितनी देर में चलोगी ?"

"मैं तो तैयार हूं भैया ! चलिये, चलते है ।"

नरेन्द्र और शीला ने कॉलेज के लिये प्रस्थान किया । कुछ ही मिनटों में दोनों कॉलेज जा पहुंचे । आज अन्य दिनों की अपेक्षा वे समय से कुछ देर पूर्व ही कॉलिज में पहुंच गये । पढ़ाई प्रारम्भ होने में अभी देर थी । कुछ विद्यार्थी कॉलिज के सामने लॉन में इधर-उधर घूम रहे थे, कुछ अपनी पुस्तकों के विषय में बातें कर रहे थे, कुछ खेल-कूद की बातों में लिप्त थे, कुछ पत्र-पत्रिकाओं में छपे समाचारों की चर्चा कर रहे थे; कुछ अपने शिक्षकों को लेकर उन पर फब्तियाँ कस रहे थे, कुछ गप-शप उड़ा रहे थे और कुछ इधर-उधर ताक-झांक करते फिर रहे थे ।

नरेन्द्र की दृष्टि कॉलिज का घंटा बजने से कुछ देर पूर्व मनोहर पर पड़ी, जो अपने छात्रावास से निकल कर सीधा अपने क्लास-रूम के सामने आकर खड़ा हो गया था । उसे कुछ पता नहीं था कि उसके इधर-उधर कोई क्या कर रहा था । उसका लक्ष्य अपनी क्लास में जाना था ।

शीला पहले ही नरेन्द्र से पृथक होकर अपनी कक्षा की लड़कियों के पास चली गयी थी । मनोरमा की भेंट उससे क्लास-रूम के सामने हुई और फिर वे दोनों अन्य लड़कियों के साथ क्लास-रूम में जाकर बैठ गयीं ।

मनोहर को आते देखकर नरेन्द्र अनायास ही उसकी ओर बढ़ गया और उसके निकट जाकर बोला, "भाई मनोहर ! मैं तो तुम्हें ही ही खोज रहा था।"

"नमस्कार भाई नरेन्द्र !" मनोहर ने सरल वाणी में कहा।

नरेन्द्र ने अपने पिताजी से जो कुछ सुना था वह सब मनोहर को बताने के लिये वह उतावला हो रहा था, परन्तु उसी समय कॉलेज की घण्टी बजी गयी और विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं में जाने लगे।

नरेन्द्र बोला, "भाई मनोहर ! आज मेरे पास तुमसे कहने के लिये बहुत बातें हैं परन्तु इस समय मैं कुछ भी नहीं कह सकूँगा। केवल इतना ही जानलो कि अब तुम मेरे बहुत निकट आगये हो।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "इतना तो मैं कल ही समझ गया था भाई नरेन्द्र ! क्या रात में कोई विशेष बात हुई है ?"

"बहुत बड़ी।" नरेन्द्र बोला, "इस समय तुम अपनी क्लास में जाओ। मुझे भी पहला पीरियड एटेण्ड करना है। उसके पश्चात् भेंट होगी।"

नरेन्द्र अपने क्लास-रूम की ओर चल दिया और मनोहर अपने क्लास-रूम की ओर। दोनों एक-दूसरे से पृथक होगये।

मनोहर अपने क्लास-रूम के सामने पहुँचा तो उसने देखा प्रकाश बड़ी भोली सूरत बनाये सामने खड़ा था। मनोहर को उधर आते देखते ही वह आगे बढ़ा और हाथ जोड़ कर बोला, "नमस्कार भाई साहब मनोहरजी !"

प्रकाश की सूरत देखकर मनोहर को मन में हँसी आगयी। उसे उसके छल-वेश को परखने में एक क्षण भी न लगा परन्तु उसने ऊपर से अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया। वह सरल वाणी में बोला, "नमस्कार भाई प्रकाश !" केवल इतना भर उत्तर देकर मनोहर आगे बढ़ा तो उसने देखा प्रकाश का साथी दिनेश किवाड़ के पीछे खड़ा उसकी झिर्री से प्रकाश का नाटकीय अभिनय देख रहा था।

मनोहर ने अपनी दृष्टि को इस तरह घुमाया कि मानो उसने दिनेश को देखा ही नहीं ।

मनोहर ने क्लास-रूम में प्रवेश करते ही दिनेश कमरे से बाहर निकला तो मनोहर चुपचाप किवाड़ की ओट में जाकर दिनेश और प्रकाश का दूसरा अभिनय देखने के लिये सतर्क होगया । उसके नेत्र उनके होठों पर टिके थे ।

दिनेश ने कमरे से बाहर जाकर प्रकाश की कमर थपथपायी और धीरे से कहा, "लक्ष्य पर तीर मारने में बहुत दक्ष हो प्रकाश ! यह 'गावदी' भला क्या समझ सकता है प्रकाश बाबू को ? प्रकाश बाबू अच्छे-अच्छों को उल्लू बना दें और वे यही समझते रहें कि प्रकाश बाबू से अधिक उनका हितैषी अन्य कोई नहीं है ।"

दिनेश के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर प्रकाश के सीने में उभार आगया । वह सगर्व बोला, "चित्त आयेगा बेचारा । मेरा काटा पानी नहीं माँग सकता । यह तो बेचारा चीज ही क्या है ? मुझसे तो कॉलिज का प्रिंसिपल भी थर्राता है । मुझे देखकर कपकपी आने लगती है उसे ।"

"इसमें क्या सन्देह है प्रकाश बाबू ? यदि भय न मानता तो कर न दिया होता गत वर्ष आपका रैस्टीकेशन । इतनी बड़ी घटना के पश्चात क्या कोई विद्यार्थी टिक सकता था कॉलिज में ?"

"अभी दो-चार दिन में चित्त करता हूँ मैं इस मूर्ख मनोहर के बच्चे को । किसी-न-किसी मामले में ऐसा फँसाकर रख दूँगा कि बच्चा छक्कड़ी भूल जायगा ।"

"छक्कड़ी नहीं, छटी तक का खाया-पिया बाहर निकल आयेगा । तभी इसे ज्ञात होगा कि किससे पाला पड़ा था ।"

प्रकाश और दिनेश की बातें सुनकर मनोहर मुस्कराता हुआ आगे बढ़गया । उसकी दृष्टि प्रथम पंक्ति में बैठी शीला पर पड़ी, ठहरी-और फिर वह चुपचाप आगे बढ़ता हुआ पीछे की

मनोहर को आते देखकर नरेन्द्र अनायास ही उसकी ओर बढ़ गया और उसके निकट जाकर बोला, "भाई मनोहर ! मैं तो तुम्हें ही ही खोज रहा था।"

"नमस्कार भाई नरेन्द्र !" मनोहर ने सरल वाणी में कहा।

नरेन्द्र ने अपने पिताजी से जो कुछ सुना था वह सब मनोहर को बताने के लिये वह उतावला हो रहा था, परन्तु उसी समय कॉलेज की घण्टी बजी गयी और विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं में जाने लगे।

नरेन्द्र बोला, "भाई मनोहर ! आज मेरे पास तुमसे कहने के लिये बहुत बातें हैं परन्तु इस समय मैं कुछ भी नहीं कह सकूँगा। केवल इतना ही जानलो कि अब तुम मेरे बहुत निकट आगये हो।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "इतना तो मैं कल ही समझ गया था भाई नरेन्द्र ! क्या रात में कोई विशेष बात हुई है ?"

"बहुत बड़ी।" नरेन्द्र बोला, "इस समय तुम अपनी क्लास में जाओ। मुझे भी पहला पीरियड एटेण्ड करना है। उसके पश्चात् भेंट होगी।"

नरेन्द्र अपने क्लास-रूम की ओर चल दिया और मनोहर अपने क्लास-रूम की ओर। दोनों एक-दूसरे से पृथक होगये।

मनोहर अपने क्लास-रूम के सामने पहुँचा तो उसने देखा प्रकाश बड़ी भोली सूरत बनाये सामने खड़ा था। मनोहर को उधर आते देखते ही वह आगे बढ़ा और हाथ जोड़ कर बोला, "नमस्कार भाई साहब मनोहरजी !"

प्रकाश की सूरत देखकर मनोहर को मन में हँसी आगयी। उसे उसके छल-वेश को परखने में एक क्षण भी न लगा परन्तु उसने ऊपर से अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया। वह सरल वाणी में बोला, "नमस्कार भाई प्रकाश !" केवल इतना भर उत्तर देकर मनोहर आगे बढ़ा तो उसने देखा प्रकाश का साथी दिनेश किवाड़ के पीछे खड़ा उसकी झिर्री से प्रकाश का नाटकीय अभिनय देख रहा था।

मनोहर ने अपनी दृष्टि को इस तरह घुमाया कि मानो उसने दिनेश को देखा ही नहीं।

मनोहर ने क्लास-रूम में प्रवेश करते ही दिनेश कमरे से बाहर निकला तो मनोहर चुपचाप किवाड़ की ओट में जाकर दिनेश और प्रकाश का दूसरा अभिनय देखने के लिये सतर्क होगया। उसके नेत्र उनके होठों पर टिके थे।

दिनेश ने कमरे से बाहर जाकर प्रकाश की कमर थपथपायी और धीरे से कहा, "लक्ष्य पर तीर मारने में बहुत दक्ष हो प्रकाश! यह 'गावदी' भला क्या समझ सकता है प्रकाश बाबू को? प्रकाश बाबू अच्छे-अच्छों को उल्लू बना दें और वे यही समझते रहें कि प्रकाश बाबू से अधिक उनका हितैषी अन्य कोई नहीं है।"

दिनेश के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर प्रकाश के सीने में उभार आगया। वह सगर्व बोला, "चित्त आवेगा बेचारा। मेरा काटा पानी नहीं माँग सकता। यह तो बेचारा चीज ही क्या है? मुझसे तो कॉलिज का प्रिंसिपल भी थर्राता है। मुझे देखकर कपकपी आने लगती है उसे।"

"इसमें क्या सन्देह है प्रकाश बाबू? यदि भय न मानता तो कर न दिया होता गत वर्ष आपका रेस्टीकेशन। इतनी बड़ी घटना के पश्चात क्या कोई विद्यार्थी टिक सकता था कॉलेज में?"

"अभी दो-चार दिन में चित्त करता हूँ मैं इस मूर्ख मनोहर के बच्चे को। किसी-न-किसी मामले में ऐसा फँसाकर रख दूँगा कि बच्चा छक्कड़ी भूल जायगा।"

"छक्कड़ी नहीं, छठी तक का खाया-पिया बाहर निकल आयेगा। तभी इसे ज्ञात होगा कि किससे पाला पड़ा था।"

प्रकाश और दिनेश की बातें सुनकर मनोहर मुस्कराता हुआ बढ़गया। उसकी दृष्टि प्रथम पंक्ति में [illegible]

बेंच पर जा बैठा।

पहला घण्टा अंग्रेजी का था। प्रोफेसर चेटर्जी ने कक्षा में प्रवेश किया। उन्होंने विद्यार्थियों की उपस्थिति अपने रजिस्टर पर अंकित की और फिर विद्यार्थियों पर दृष्टि डाल कर बोले, "बच्चो! तुम लोगों की उपस्थिति हमने रजिस्टर में अंकित करदी। अब जो पढ़ना चाहें वे कक्षा में बैठे रहें और जो जाना चाहें, वे चले जायें। बीच में उठकर कोई विद्यार्थी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को डिस्टर्ब न करे।"

प्रोफेसर चेटर्जी की दृष्टि प्रकाश पर पड़ी तो वह मुस्कराकर बोले, "क्या इस वर्ष भी तुमने पढ़ने का निश्चय किया है प्रकाश! कमिश्नर साहब के सुपुत्र हो, क्या करोगे पढ़कर? पढ़ना-लिखना तो छोटे आदमियों का काम है।"

प्रकाश का मन पढ़ने में नहीं था परन्तु वह आज मनोहर पर अपना प्रभाव डालने का सफल नाटक खेलने का निश्चय करके आया था। प्रोफेसर चेटर्जी के इस वाक्य ने उसकी आशा पर तुषारापात कर दिया। उसने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि जिस प्रकार आज प्रोफ़ेसर चेटर्जी ने उसे अपमानित किया है इसी प्रकार किसी दिन अवसर पाकर वह उन्हें अपमानित करेगा।

प्रोफेसर चेटर्जी ने जो प्रथम कवित्ता पढ़ाने के लिये निकाली वह थी विलियम वर्ड्सवर्थ की प्रसिद्ध कविता 'दी रेनबो (The Rainbow). यही वह कविता थी जिसे प्रोफेसर चेटर्जी प्रति वर्ष प्रथम दिन अपनी कक्षा में पढ़ाया करते थे।

प्रोफ़ेसर चेटर्जी अंग्रेजी के माने हुए विद्वान थे। इस कविता को पढ़ाते हुए जब वह इसकी 'दी चाइल्ड इज़ फ़ादर ऑफ़ दी मेन' ('The Child is Father of the Man.') पंक्ति पर आते थे तो पढ़ाते-पढ़ाते आत्मविभोर हो उठते थे। वह बोले, "बच्चो! तुम्हारा आज का जीवन ही तुम्हारे भविष्य का सूचक है। तुम्हारे जीवन में जो गुण या अवगुण, इस समय प्रवेश कर जायेंगे वे जीवन-पर्यन्त चलेंगे।

इसीलिये हमारे प्रिंसिपल साहब ने कल हम लोगों के सामने चरित्र-निर्माण की बात कही थी। यही समय है तुम्हारा अच्छा या बुरा बनने का। इस समय की भूल तुम्हें जीवन भर दगा देगी और इस समय तुम्हारे जीवन में जो गुण समाविष्ट होंगे वे अन्त समय तक तुम्हारे काम आयेंगे। जो तुम आज हो, वही कल होंगे और वही अपने जीवन के अन्त तक बने रहोगे।"

प्रोफ़ेसर चेटर्जी जितनी तन्मयता के साथ कविता पढ़ रहे थे, मनोहर उतनी ही तन्मयता के साथ उसे सुन रहा था। मनोहर केवल पाठ याद करने भर के लिये नहीं सुन रहा था, वरन् उसके सन्देश को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा प्राप्त कर रहा था।

मनोहर भूला नहीं था उन शब्दों को जो उसको माताजी ने उसने उस समय कहे थे जब उसने उनसे विदा ली थी। कल के प्रिंसिपल साहब के शब्द भी अभी तक उसके कानों में गूँज रहे थे। अभी-अभी प्रोफेसर चेटर्जी ने जो कुछ कहा उसका प्रभाव उसके मस्तिष्क पर हुआ और उसके अन्दर उसे प्रकृति के महान् उपासक विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता का मधुर स्वर सुनायी दिया। उसे लग रहा था कि मानो यह केवल कवि का ही स्वर नहीं था वरन् प्रकृति स्वयं मधुर स्वर में गा रही थी। वह कह रही थी, "बच्चो! यही समय है तुम्हारे चारित्रिक गठन का। यदि तुम इस समय चूक गये तो फिर जीवन में यह समय नहीं आयेगा।'

घण्टा समाप्त हुआ। मनोहर ने अपने इधर-उधर देखा तो बहुत से विद्यार्थी पहले ही कक्षा से बाहर जा चुके थे। मनोहर भी अपने डैस्क से उठकर खड़ा हो गया। वह कक्षा से बाहर निकला तो प्रकाश ने उसे एकबार फिर नमस्कार किया।

मनोहर मुस्कराकर बोला, "आज तो तुमने नमस्कारों की झड़ी लगा दी प्रकाश! ज्ञात होता है कल की घटना ने तुम्हारे जीवन का मार्ग बदल दिया है।"

"मनोहर भाई ! तुमने ठीक समझा है मुझे । मुझे सचमुच ही कल की घटना का बहुत खेद है । मैं तो शीलादेवी से भी उसके लिये दुबारा क्षमा-याचना करना चाहता हूँ ।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "क्षमा-याचना से क्या बनेगा प्रकाश बाबू ! आपने अपना मन शुद्ध कर लिया, यही सब-कुछ है । पुष्प में सुगंधि आती है तो क्या वह किसी से कहने जाता है कि उसमें सुगंधि है ? सुगंधि उसकी पंखुरियों से फूटकर स्वयं चारों ओर फैलने लगती है । इसी प्रकार तुम्हारे चरित्र की सुगंधि भी सम्पूर्ण कॉलेज के वायु-मण्डल में व्याप्त हो जायगी ।"

प्रकाश के हृदय पर मनोहर के वाक्य शूल के समान चुभ रहे थे। उसने अपने मन में कहा, 'यह 'गावदी' भी मुझे उपदेश देने चला है ।' परन्तु ऊपर से बोला, "क्या बात कहदी तुमने मनोहर ! बहुत बड़ी बात कहदी । सच कहता हूँ मनोहरजी ! मुझ पर आज तक इतना किसी की बात का प्रभाव नहीं हुआ जितना तुम्हारी बात का हुआ है ।"

मनोहर अपने मन में मुस्कराकर बोला, 'धूर्त्त कहीं के ! यह प्रभाव मेरी बात का नहीं है, मेरे भुजदण्डों का है । लातों के भूत बातों से कभी नहीं मानते ।' फिर बोला, "मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ प्रकाश बाबू ! जो तुम पर मेरी बातों का प्रभाव हुआ ।" यह कहकर मनोहर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये आगे बढ़ गया ।

मनोहर अपनी कक्षा से निकलकर सीधा सामने वाले बग़ीचे में जाकर नरेन्द्र की प्रतीक्षा कर रहा था । तभी उसे नरेन्द्र अपनी ओर आता दिखायी दिया । मनोहर नरेन्द्र की ओर बढ़कर बोला, "मैं आप की ही प्रतीक्षा कर रहा था भाई नरेन्द्र ! चलिये छात्रावास में चलकर बैठेंगे । वहीं बैठकर बातें करेंगे ।"

"चलो भाई मनोहर ! मैं भी यही सोच रहा था ।" नरेन्द्र बोला ।

मनोहर और नरेन्द्र वहाँ से छात्रावास की ओर बढ़े तो प्रकाश और दिनेश उनके मार्ग में आगये, परन्तु उन्होंने अपनी दृष्टि दूसरी ओर को इस प्रकार घुमाली कि मानो उन्होंने उन्हें देखा ही नहीं ।

प्रकाश दिनेश का हाथ दबाकर बोला, "दिनेश ! *यह नरेन्द्र का* बच्चा भी बड़ा धूर्त है । यह अपनी सुरक्षा के लिये मनोहर को अपने जाल में फँसाये रखना चाहता है । इसे भय है कि कहीं इससे मैं अपने कल के अपमान का बदला न लूँ ।"

"इसमें क्या सन्देह है ? अपनी रक्षा तो हर व्यक्ति करना ही चाहता है, परन्तु यह बात निश्चित है प्रकाश बाबू ! कि तुम्हारे सामने इसका यह जाल बिछा नहीं रह सकता । आज नहीं तो कल, यह जाल कट ही जायगा ।" दिनेश बोला ।

"कट क्यों नहीं जायेगा दिनेश ! यह तो दो-चार दिन का ही मेहमान है । यह मनोहर का बच्चा अपने चरण चूमेगा । मैं इसे फटकारूँगा और यह गिड़गिड़ाता हुआ मेरे पास आयेगा । मुझे भी कुछ *कम हथकण्डे याद नहीं हैं ऐसे लड़कों को अपनी* डोर पर डलने के ।" प्रकाश बोला ।

"इसमें क्या सन्देह है ? मैं क्या जानता नहीं

को ? तुम्हारी दक्षता से मैं पूर्ण परिचित हूँ प्रकाश बाबू ! तुम्हें इस कार्य में निश्चय ही सफलता मिलेगी।"

मनोहर और नरेन्द्र आगे बढ़ गये। वे दोनों छात्रावास में पहुँचकर मनोहर के कमरे में चले गये।

मनोहर ने विशेष सम्मान के साथ नरेन्द्र को अपने पलंग पर बिठा कर स्वयं कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, "आप मुझे कल रात्रि का कोई विशेष समाचार देने वाले थे।"

नरेन्द्र मुस्कराकर बोला, "विशेष नहीं भाई मनोहर! बहुत विशेष। तुमने कल सध्या को मुझे अपने पिताजी का परिचय दिया था।"

"दिया तो था।" मनोहर बोला।

"आज प्रातःकाल नाश्ते के समय मैंने पिताजी के सामने तुम्हारे पिताजी का नाम लिया तो उनका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। पिताजी ने बताया कि वह उनके घनिष्टतम मित्रों में से रहे हैं। पिताजी ने मुझे सूबेदार साहब के इम्फ़ाल के मोर्चे तक का पूरा विवरण दिया।"

"तो क्या आपके पिताजी भी इम्फाल के मोर्चे पर थे ?" मनोहर ने पूछा।

"नहीं मनोहर! पिताजी और सूबेदार साहब यहाँ से साथ-साथ रंगून गये थे। पिताजी किसी विशेष कार्य से भारत लौट आये और सूबेदार साहब वहीं रहे। बर्मा में अंग्रेजी सेना की पराजय होने पर जब नेताजी ने आज़ाद-हिन्द सेना की स्थापना की तो वह उसमें सम्मिलित हो गये। पिताजी ने इम्फाल के मोर्चे तक की पूर्ण घटना का वर्णन करके मुझसे पूछा, 'नरेन्द्र! तुमने आज अचानक सूबेदार लखनसिंह का नाम किससे सुना ? हमारी उनसे दाँत-काटी रोटी रही है। हम और वह एक ही मेस में भोजन करते थे।"

इसमें कोई सन्देह नहीं कि माताजी कभी कोई अनावश्यक शब्द मुख से उच्चारण नहीं करतीं।"

"तो आज तुम चलोगे हमारे घर मनोहर! माताजी ने भी तुम्हें लाने के लिये कहा है। आज संध्या का भोजन तुम हमारे यहाँ करना। मैं संध्या को टेनिस खेलकर जब घर लौटूँगा तो तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा।"

बात निश्चित होगयी। मनोहर ने घड़ी देखी तो घण्टा समाप्त हुआ चाहता था। वह बोला, "चलो भाई नरेन्द्र! घंटा बजने वाला है। इतिहास का घण्टा है।"

मनोहर और नरेन्द्र छात्रावास से निकलकर कॉलेज की ओर बढ़ गये। नरेन्द्र अपनी कक्षा की ओर चला गया और मनोहर अपनी कक्षा की ओर।

मनोहर अपनी कक्षा के कमरे के निकट पहुँचा तो देखा प्रकाश सामने खड़ा था। मनोहर को देखकर वह बोला, "आप कहाँ चले गये थे मनोहर भाई? मैं तो जाने कब से आपको खोज रहा हूँ।"

मनोहर ने मुस्कराकर पूछा, "क्यों, क्या कोई विशेष काम था?"

"विशेष कुछ नहीं मनोहर भाई! मैं सोच रहा था कि अपने मित्रों से तुम्हारा परिचय कराऊँ। आज संध्या को एक पार्टी है कॉलेज-रेस्ट्राँ में। तुम्हें भी सम्मिलित होना है उसमें।" प्रकाश बोला।

मनोहर बोला, "इसकी ऐसी क्या शीघ्रता है प्रकाश बाबू! धीरे-धीरे सभी से परिचय हो जायगा। रही बात पार्टी की, सो मैं कभी रेस्ट्राँ इत्यादि में नहीं जाता। मेरी इन पार्टियों में कोई रुचि नहीं है।"

प्रकाश बोला, "यहाँ परदेश में मित्रों के ही सहारे जीवन चलता है मनोहर भाई! रेस्ट्राँ में आने-जाने लगोगे तो उसमें धीरे-धीरे रुचि पैदा हो जायगी।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "प्रकाश बाबू! हम देहाती लोग व्यर्थ अपनी आदतें खराब करना पसन्द नहीं करते। ऐसे स्थानों पर जाना

हमें शोभा भी नहीं देता। तुम्हारे निमंत्रण के लिये मैं हृदय से आभारी हूँ, परन्तु पार्टी में सम्मिलित होने में असमर्थ हूँ।"

"क्यों, क्या कोई विशेष कार्य है संध्या को ?"

"हाँ, कार्य भी है कुछ।"

तभी घण्टा बज गया। मनोहर अपनी कक्षा मे चला गया। प्रकाश वहीं खड़ा रहा।

मनोहर के कमरे में प्रवेश करने पर दिनेश प्रकाश के निकट आकर बोला, "पार्टी की बात सुनकर तो बाँछें खिल गयी होंगी मनोहर की प्रकाश बाबू ?"

प्रकाश अनमने स्वर मे बोला, "कुछ चालाक मालूम देता है। साफ़ कन्नी काट गया। पार्टी में आना स्वीकार नहीं किया उसने।"

"क्या पार्टी मे सम्मिलित होना ही स्वीकार नही किया उसने ?" दिनेश ने पूछा।

"नहीं।"

"अरे, चालाक-वालाक कुछ नही है। इसे नरेन्द्र के बच्चे ने कोई पट्टी पढ़ायी होगी। नरेन्द्र भी एक नम्बर का छटा हुआ है। मैं उससे भली प्रकार परिचित हूँ।" दिनेश बोला।

प्रकाश नरेन्द्र पर क्रोध प्रदर्शित करता हुआ बोला, "उसे ही समझना होगा पहले। मैं सोच रहा था कि सीधी अँगुली से ही घी निकल आयेगा। परन्तु देख रहा हूँ कि अँगुली तिरछी करके ही डालनी होगी।"

"अजी सीधी अँगुली से भी भला कहीं घी निकला है प्रकाश बाबू ! आप इतने समझदार होकर भी पता नही क्यों कभी-कभी ऐसी बात करने लगते हैं ?" दिनेश बोला।

क्लास-रूम मे प्रोफ़ेसर को प्रवेश करते देखकर प्रकाश और दिनेश भी अन्दर चले गये। उधर प्रोफ़ेसर ने अपने रजिस्टर पर विद्यार्थियों की उपस्थिति अंकित की और इधर प्रकाश और दिनेश चुपचाप पीछे से खिसक लिये। यह कार्य उन्होंने प्रोफ़ेसर से अधिक मनो[illegible]

बचाकर किया, परन्तु मनोहर की तिरछी दृष्टि उन्हीं पर थी।

क्लास की पढ़ाई समाप्त हुई। आज दिन में कई बार शीला की दृष्टि मनोहर पर गयी और मनोहर की शीला पर, परन्तु शब्द एक भी किसी के मुख से नहीं निकला, आँखें भी चार न हो सकीं। दोनों ही पता नहीं क्यों एक-दूसरे को देखकर कुछ ऐसे लजा जाते थे कि फिर एक-दूसरे की ओर देखने का साहस न होता था।

मनोहर जहाँ तक लड़कियों से बातें करने और उनसे सम्पर्क स्थापित करने का सम्बन्ध था, भीरू प्रकृति का था। न मालूम क्यों उसे उनके निकट जाने पर थरथरी-सी आने लगती थी। किसी स्त्री को संकटग्रस्त देखकर उसका रक्त-प्रवाह जितना तीव्र हो उठता था उतना ही उन्हें हँसते, मुस्कराते और आपस में बातें करते देखकर वह धीमा पड़ जाता था। उसे लगता था कि मानो उसका बदन इतना शिथिल होगया कि वह हिल-जुल भी नहीं सकता। उसकी दृष्टि ऊपर उठ नहीं पाती थी और उसकी वाणी कंठ में अटक कर रह जाती थी।

मनोहर के पास-पड़ोस की लड़कियाँ उसकी इस भीरुता से पूरी तरह परिचित थीं। इसीलिये जब वह अपने मुहल्ले में उन्हें आता दिखायी दे जाता था तो वे स्वयं ही उससे बचकर निकल जाती थीं। वे जानती थीं कि यदि वे उसके मार्ग में आगयीं तो मनोहर को घर तक पहुँचना कठिन हो जायगा।

मनोहर कॉलेज में भी कभी अपने मार्ग के अतिरिक्त इधर-उधर नहीं देखता था। उसे पता ही नहीं रहता था कि उसके अगल-बग़ल में कौन आया और कौन गया।

कॉलेज का कार्य समाप्त होने पर मनोहर अपने छात्रावास में चला गया। उसे आज नरेन्द्र ने जो समाचार दिया था वह उसीमें लिप्त था।

कल रात्रि को मनोहर ने अपनी माताजी को कल की घटना के विषय में एक पत्र लिखा था। आज उसके पास उन्हें लिखने के लिये बहुत सी बातें थीं। मनोहर के जीवन में, अच्छी या बुरी, जो भी घटना

पढ़ती थी, उसकी सूचना वह तुरन्त अपनी माताजी को दे देता था। उसके मन या जीवन की अभी तक की एक भी ऐसी कोई घटना या बात नहीं थी जिसे उसने अपनी माताजी पर स्पष्ट न किया हो।

मनोहर ने पैंड उठाया और अपनी माताजी को पत्र लिखना आरम्भ किया। पत्र में उसने विस्तार के साथ नरेन्द्र के पिताजी और माताजी से प्राप्त समाचार का उल्लेख किया। आज संध्या को वह नरेन्द्र के साथ उनके घर भोजन करने जायगा, यह बात भी लिख दी परन्तु एक बात ऐसी रह गयी जिसके विषय में वह एक अक्षर भी पत्र में न लिख सका।

मनोहर बहुत देर तक सोचता रहा कि वह किस प्रकार उस विषय पर अपने भावों को व्यक्त करे। उसकी समझ में कुछ न आया। मनोहर ने लेखनी पत्र पर रख दी और चुपचाप पलंग पर लेट गया। शीला की सरल मनोहर मूर्ति उसकी पुतलियों में झूल रही थी। वह उसके विषय में अपनी माताजी को क्या लिखे, कैसे लिखे, किन शब्दों में लिखे, लिखे···न लिखे यह वह कर नहीं सकता था। वह अपनी माताजी से कोई बात छिपाकर नहीं रख सकता था। यदि उसने ऐसा किया तो उसके मस्तिष्क में अशांति बनी रहेगी। उसके चित्त को शांति प्राप्त नहीं हो सकती।

कुछ देर चुपचाप लेटे रहने के पश्चात् मनोहर फिर उठकर पलंग पर पर बैठ गया। फिर वह कुर्सी पर बैठा और जो पत्र उसने अपनी माताजी को लिखा था उसे एक बार पढ़कर लेखनी उठायी। उसने लिखा, 'माताजी ! मैंने अपने गत पत्र में जिस घटना का उल्लेख किया था उस लड़की का नाम शीला है। वह मेजर साहब की सुपुत्री है। वह बहुत सुशील और समझदार है। वह मेरी कक्षा में ही पढ़ती है।"

इतना लिखकर मनोहर ने पत्र लिफाफे में बन्द कर दिया। वह उठा, कमरा बन्द किया और डाकघर जाकर लिफाफे पर टिकट लगा कर उसे लैटर-बक्स में डाल दिया।

अब मनोहर के मन में शांति थी। उसे जो कुछ लि

वह सब-कुछ अपने पत्र में लिख दिया था। अपनी पढ़ाई-लिखाई के विषय में भी उसने लिखा था।

मनोहर डाकघर से लौटकर अपने छात्रावास में पहुंचा तो उसने देखा प्रकाश उसके कमरे के सामने बरांडे में टहल रहा था। उसे देखते ही मनोहर का माथा ठनका। उसके अगल-बगल के विद्यार्थी उसकी ओर देखकर मुस्कराये। मेरठ-कॉलेज में शायद ही ऐसा कोई विद्यार्थी था जो प्रकाश से परिचित नहीं था। उसका इस प्रकार मनोहर के पास आना देखकर पहले तो सभी को आश्चर्य हुआ, क्योंकि मनोहर ने अपने चन्द दिन के ही वहाँ के रहन-सहन से सब को अपने व्यवहार से प्रभावित किया था। प्रकाश का उसके पास आना देखकर वे कुछ चौकन्ने से हो उठे। वे इधर-उधर से ताक-झांक रहे थे।

मनोहर को प्रकाश का अपने कमरे पर आना कुछ भला नहीं लगा परन्तु फिर भी उसने मुस्कराकर पूछा, "कहिये प्रकाश बाबू! यहाँ कैसे घूम रहे हो?"

"मैं आपके ही पास आया था मनोहर भाई! कॉलेज के बाद आपसे भेंट करने का अवसर नहीं मिला। कुछ मित्र लोग घसीट कर ले गये। आज पार्टी है न संध्या को।" प्रकाश बोला।

"अच्छा-अच्छा! तो कहिये मेरे लिये क्या आज्ञा है? पार्टी में तो मैं आ नहीं सकूंगा।" मनोहर स्पष्ट शब्दों में बोला।

प्रकाश बोला, "पार्टी में न सही, सिनेमा तो चलोगे हमारे साथ। पार्टी के बाद सिनेमा का प्रोग्राम है।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "प्रकाश बाबू! आइये मेरे साथ।" अपने कमरे की ओर बढ़ता हुआ मनोहर बोला।

प्रकाश ने समझा उसके जादू ने काम किया।

कमरे में लेजाकर मनोहर ने प्रकाश को आदरपूर्वक कुर्सी पर बिठाया और स्वयं पलंग पर बैठकर बोला, "प्रकाश बाबू! मुझे हार्दिक खेद है कि मेरी और आपकी रुचि में मौलिक भिन्नता है।"

"वह कैसे ?" प्रकाश ने सतर्क होकर पूछा ।

"वह ऐसे प्रकाश बाबू ! कि आपको सूटेड-बूटेड रहना पसंद है और मैं धोती-कुर्त्ता पहनता हूँ, आप पार्टियों के शौकीन है और मुझे उसमे अरुचि है, आपको सिनेमा, डास और इस प्रकार के मनोरंजन आनंदप्रद हैं और मेरा कभी उधर जाने का मन नही होता। मैं तो बहुत मोटे किस्म का आदमी हूँ । मेरा रहन-सहन, खेल-कूद, बोल-चाल, आचार-व्यवहार सब मोटे हैं और आपके शहरी सभ्यता के सुन्दरतम प्रतीक । ऐसी दशा में तुम जो प्रयास करने का प्रयत्न कर रहे हो मुझे उसमे श्रम के अतिरिक्त और कुछ दिखायी नही दे रहा । मैंने सोचा कि जिस बात से तुम्हें कल निराशा हो, उसे आज ही स्पष्ट करदूँ ।" मनोहर बोला ।

प्रकाश को आशा नही थी कि मनोहर इतनी स्पष्ट बातें भी कर सकता है । उसे लगा कि उसके व्यक्तित्व का मनोहर पर कोई प्रभाव ही नही हुआ । प्रकाश की गर्दन नीचे लटक गयी ।

मनोहर बोला, "प्रकाश बाबू ! मुझे आशा है कि आपको मेरी स्पष्ट बात बहुत पसंद आयी होगी । मैं अपने किसी साथी को भ्रम में रखकर कभी कोई काम नही करता । तुम मेरे सहपाठी हो, इसलिये मैंने सोचा कि अपनी दुर्बलता आप पर पहले ही स्पष्ट कर दूँ ।"

मनोहर की बात का प्रकाश ने कोई उत्तर नही दिया । वह चुपचाप उठा और कमरे से बाहर हो गया । उसे गर्दन लटकाये जाते अन्य विद्यार्थियों ने अपने कमरो से झाँककर देखा । प्रकाश छात्रावास से बाहर चला गया तो उनमे से कुछ मनोहर के पास आये । एक ने पूछा, "यह महाशय यहाँ कैसे आये थे मनोहर ?"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "पार्टी और सिनेमा की दावत देने ।"

" स्वीकार नही की तुमने ?" दूसरे ने पूछा ।

"मैं देहाती लडका ठहरा भाई ! मेरा इन चीजों से बेचारे को बहुत निराशा हुई ।"

"परन्तु तुमसे इतनी मित्रता कैसे हो गयी इन महाशय की ? इससे तो दूर ही रहना भला है। जिसे अपना जीवन नष्ट करना हो वह इसका साथी बने।"

इसी प्रकार की कुछ अन्य बातें करके सब लोग चले गये। मनोहर ने सोचा चलो छुट्टी मिली।,अब यह भविष्य में मुझे व्यर्थ परेशान नहीं करेगा। इतने बदनाम व्यक्ति का अपने पास आना भी संकट की स्थिति पैदा कर सकता है। इसे अपने निकट नहीं फटकने देना चाहिये।

संध्या-समय हो गया था। मनोहर विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता 'रेनबो' को धीरे-धीरे गुनगुना रहा था। कविता मनोहर को बहुत पसंद आयी थी। कविता से भी अधिक वह प्रोफेसर चेटर्जी की व्याख्या से प्रभावित हुआ था। अपने योग्य शिक्षक की व्याख्या-प्रणाली की वह मन-ही-मन सराहना कर रहा था।

कविता गुनगुनाते-गुनगुनाते मनोहर को प्रकाश की स्मृति हो आयी। मनोहर प्रकाश के भविष्य के विषय में सोचने लगा। उसे उसके वर्तमान जीवन के दुर्गुण भविष्य में विकराल रूप धारण करते हुए दिखायी दिये। उसने देखा कि प्रकाश के भविष्य में आज जो छोटे-छोटे दुर्गुणों के कीड़े रेंग रहे थे उन्होंने भविष्य में बड़े-बड़े विकराल सर्पों का रूप धारण कर लिया। मनोहर उन्हें देखकर काँप उठा। उसे कुछ भय सा प्रतीत हुआ। वह पलंग से उठकर खड़ा हो गया। उसने अपने मस्तिष्क से उस विचार को दूर करना चाहा परन्तु कर नहीं सका।

मनोहर कविता को ज़ोर-ज़ोर से गुनगुनाने लगा। तभी उसके सामने एक दूसरा दृश्य उपस्थित हुआ। वह बहुत सुन्दर दृश्य था। उसने देखा दो छोटी-छोटी कलियाँ दो पौधों की डाली पर लहरा रही थीं। धीरे-धीरे मनोहर [illegible] सामने उनका भविष्य-रूप प्रस्फुटित हुआ और वे कलियाँ [illegible] फूलों में परिणत हो गयीं। मनोहर को वे पुष्प बहुत [illegible] टक उनकी ओर देख रहा था। वह बहुत प्रसन्न था [illegible]।

तभी उस[illegible] देखा कि वे दोनों पुष्प दो मानव-मुखाकृतियों के रूप [illegible]। मनोहर एक टक उनकी ओर देखता रहा। उनमें से [illegible] आकृति

जैसी बन गयी। मनोहर हर्ष से उन्मत्त हो उठा। फिर दूसरे पुष्प का रूप बदला। उसने देखा कि वह स्वयं उसका अपना ही चेहरा था। मनोहर अवाक् रह गया। तभी हवा का हल्का-सा झोंका आया और वे दोनों पुष्प आपस में मिल गये।

मनोहर की ज़बान से निकला, 'चाइल्ड इज़ फ़ादर ऑफ़ दी मैन' कवि ने कैसे शाश्वत सत्य की कल्पना की है!'

मनोहर इन्ही विचारों में निमग्न था कि तभी नरेन्द्र ने कमरे में प्रवेश किया। मनोहर अपने ध्यान में इतना संलग्न था कि उसे ज्ञान ही न हुआ नरेन्द्र के आने का।

नरेन्द्र मुस्कराकर बोला, "भाई मनोहर! इतनी संलग्नता के साथ क्या सोच रहे हो?"

नरेन्द्र के ये शब्द सुनकर मनोहर तुरन्त पलंग से उठ खड़ा हुआ। वह बोला, "आप कब आये भाई नरेन्द्र! मुझे सचमुच ज्ञान ही नहीं हुआ आपके आने का।"

"परन्तु तुम सोच क्या रहे थे इतने गम्भीरतापूर्वक?"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "कुछ नहीं भैया! आज प्रोफ़ेसर चेटर्जी ने विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता 'रेनबो' पढ़ायी थी। मैं उसी को गुन-गुना रहा था। भाई! बहुत सुन्दर व्याख्या करते हैं प्रोफ़ेसर साहब।"

"प्रोफ़ेसर चेटर्जी इस कविता को खूब पढ़ाते हैं। उनकी योग्यता के यहाँ बहुत कम प्रोफ़ेसर हैं। उनकी पढ़ाने की शैली बहुत अच्छी है। यदि विद्यार्थी एक बार ध्यान से उनकी पढ़ायी हुई कविता की व्याख्या सुनले तो कभी भूल नहीं सकता।"

"मैं इस कविता को कभी नहीं भूल सकता भाई नरेन्द्र! मुझे लग रहा है जैसे कवि ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण रहस्य, उसकी सफलता और असफलता का सम्पूर्ण इतिहास, सारा वर्तमान और सारा भविष्य इस कविता की एक पंक्ति में भर दिया है। गागर में सागर भर दिया है।" मनोहर बोला।

"वर्ड्सवर्थ की यह कविता अंग्रेजी-साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है मनोहर ! इसकी इस एक ही पंक्ति में मानव-जीवन का भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल सन्निहित है। इस पंक्ति को लेकर आलोचकों ने अनेकों ग्रंथों की रचना की है।"

"यह पंक्ति है भी इतनी ही सारगर्भित भाई नरेन्द्र !"

"अच्छा, अब देर न करो। माताजी प्रतीक्षा में होंगी।"

"तो क्या आप माताजी को सूचित कर आये हैं मेरे आने के विषय में ?" मनोहर ने पूछा।

नरेन्द्र मुस्कराकर बोला, "तब क्या नहीं ? मैंने कॉलेज से जाते ही माताजी को सूचित कर दिया था कि आज संध्या को मनोहर मेरे साथ आयेगा।"

मनोहर ने कमरे का ताला बन्द किया और दोनों छात्रावास से चल दिये। मार्ग में मनोहर बोला, "भाई नरेन्द्र ! आज प्रभात ने हमें खूब नाटक दिखाया।"

"क्यों, क्या मिला था तुम्हें ?"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "बहुत धूर्त लड़का है। आज उसने मुझे आदरपूर्वक हाथ जोड़कर नमस्कार किया और फिर एक पार्टी में आने तथा उसके पश्चात् सिनेमा देखने का निमंत्रण दिया, परन्तु बेचारे को निराश होना पड़ा। उसके बाद एक बार फिर यहाँ छात्रवास में भी आया ‥ ‥।"

"इतना साहस !" नरेन्द्र गम्भीर वाणी से बोला। मनोहर ने देखा नरेन्द्र का चेहरा तमतमाकर लाल होगया था। वह बोला, "इस धूर्त को कभी अपने पास भी न खड़ा होने देना। हमारे कॉलेज के सब प्रोफेसर इससे घृणा करते हैं। गत वर्ष इसने एक प्रोफेसर की लड़की को छेड़ दिया था। इसके पिता बीच में पड़कर प्रोफेसर साहब से क्षमा-याचना न करते तो इसका रेस्टीकेशन हो जाता।"

मनोहर बोला, "भाई नरेन्द्र ! मैं स्वभाव से ही कभी किसी को

निराश नहीं करता, परन्तु आज मुझे प्रकाश को स्पष्ट उत्तर देना पड़ा। मेरे विचार से वह भविष्य में कभी ऐसा साहस नहीं करेगा।"

"यह बात नहीं है मनोहर भाई! यह बड़ा निर्लज्ज और दिल का स्याह लड़का है। यह अपमानित होकर भी तुम्हें अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न छोड़ने वाला नहीं है। यह तुम्हें सीधा-सादा लड़का समझकर तुम पर अपना जाल फैलाने आया था। इसके चक्कर में पड़कर कई लड़के अपना जीवन नष्ट कर चुके हैं। इसके साथ जो यह दिनेश रहता है इसे इसने कहीं का नहीं छोड़ा। यह चाहे जितना भी मीठा बनकर क्यों न आये तुम्हारे पास, इसका कभी विश्वास न करना।"

मनोहर हँसकर बोला, "भाई नरेन्द्र! सीधा मैं भले ही हूँ, मूर्ख नहीं हूँ। मैं कल से इसे करकेंटे के समान तरह-तरह के रंग बदलता हुआ देख रहा हूँ। यह बात माननी होगी कि यह नाटक खूब खेलता है। इससे तो यह पढ़ना-लिखना छोड़कर यदि किसी फ़िल्म कम्पनी में चला जाय तो एक सफल अभिनेता बन सकता है।'

मनोहर की बात सुनकर नरेन्द्र को हँसी आ गयी। वह बोला, "ये उपहास की बातें नहीं हैं मनोहर! मैं इससे पता नहीं क्यों, घृणा करता हूँ।"

मनोहर बोला, "भाई नरेन्द्र! घृणा व्यक्ति से नहीं, उसके नीच कार्य से करनी चाहिये। यदि इसके पिताजी बीच में न बोलें और मुझे आज्ञा दें तो मैं इसे एक वर्ष में सही मार्ग पर ला सकता हूँ। मैं इसके अपने पास आने के अभिप्राय से अपरिचित नहीं हूँ। इसके मस्तिष्क में जो कीड़े रेंग रहे हैं, मैं उन्हें भी स्पष्ट देख रहा हूँ। यदि उन कीड़ों को कुचला न गया तो निश्चय ही वे एक दिन काले सर्प बनकर अन्य लोगों को डसेंगे। यह व्यक्ति समाज का भयंकर शत्रु सिद्ध होगा।"

नरेन्द्र ने मनोहर की बात सुनी और गम्भीर दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह मुस्करा रहा था। मुस्कराता हुआ ही बोला, "भाई नरेन्द्र!

यह व्यक्ति लातों का यार है, बातों से इसे सही मार्ग पर कोई नहीं ला सकता। इसकी और इसके साथी की कलाइयाँ जो कल मैंने झटकी थीं, अभी पूरे सप्ताह भर दर्द करती रहेंगी। यदि दो हाथ और पड़ जाते तो दोनों को हॉसपिटल में भर्ती कराना होता।"

ये बातें करते हुए दोनों कोठी के द्वार पर पहुँच गये। नरेन्द्र बोला, "हमारी कोठी यही है भाई मनोहर!" कहकर दोनों ने कोठी में प्रवेश किया।

सरोज रानी और शीला कोठी के बहार लॉन में बैठी थीं। शीला को मनोहर के अपने यहाँ आने के विषय में कोई ज्ञान नहीं था। उसने मनोहर को अपने भाई नरेन्द्र के साथ कोठी में प्रवेश करते देखा तो अनायास ही उसके मुख से निकला, "मनोहर बाबू!" और वह तुरन्त कुर्सी छोड़कर खड़ी होगयी। जाने क्यों, शीला का बदन रोमांचित होउठा।

सरोज रानी ने पीछे मुँह करके देखा तो नरेन्द्र और मनोहर आ रहे थे। वह भी कुर्सी से उठकर खड़ी हो गयी और आगे बढ़कर उन्होंने कहा, "तुम आगये नरेन्द्र! यही हैं तुम्हारे मित्र मनोहर! आओ बेटा!"

मनोहर ने आगे बढ़कर सरोज रानी के चरण छुए। उन्होंने बड़े स्नेह से मनोहर के सिर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया और फिर बहुत देर तक एक टक उसके चहरे पर देखती रहीं। मनोहर की सूरत देखकर सूबेदार लखनसिंह की आकृति उनकी आँखों के सामने साकार होउठी।

"आप क्या देख रही हैं माताजी?" मनोहर ने पूछा।

"कुछ नहीं बेटा! तुम्हें देखकर मुझे सूबेदार साहब की स्मृति हो आयी। लगता है जैसे विधाता ने सूबेदार साहब का ही चेहरा तुम्हारे बदन पर लगा दिया है। वे ही आँखें, वही नाक, सब कुछ वही तो है बेटा मनोहर! तनिक भी अन्तर नहीं है।"

सरोज रानी के ये शब्द सुनकर मनोहर के कानों में उसकी अपनी माताजी के शब्द गूँज उठे। यही तो वह भी कहा करती हैं, 'बेटा मनोहर ! तुम्हें विधाता ने ठीक तुम्हारे पिता की आकृति प्रदान की है। तुम्हें देखती हूँ तो लगता है जैसे वही बैठे हैं मेरे समने।'

मनोहर सरल वाणी में बोला, "माताजी ! आपने ठीक वे ही शब्द दुहरा दिये जो मेरी माताजी कहा करती हैं।"

मनोहर की दृष्टि शीला पर गयी तो उसने देखा वह आवश्यकता से अधिक सकुचा गयी थी। उसका मनोहर से एक शब्द भी बोलने का साहस न हुआ। मनोहर के मन में आया कि वही पहल करे परन्तु उसका तो शीला से भी अधिक भीरु स्वभाव था।

शीला और मनोहर की इस स्थिति का सरोज रानी ने अनुभव किया। वह मुस्कराकर बोलीं, "शीला ! कल तो तू इतनी प्रंशसा कर रही थी मनोहर की और अब जब यह आया है तो होठ सीकर बैठ गयी। एक शब्द भी नहीं बोल रही।"

माताजी के इतना कहने पर शीला और भी लजा गयी। उसका और भी साहस जाता रहा। उसने दृष्टि उभारकर मनोहर की ओर देखना चाहा परन्तु आँखों ने उभरने का नाम न लिया।

तभी मेजर साहब आगये। उनकी गाड़ी के कोठी में प्रवेश करते ही सब की दृष्टि उधर गयी। सरोज रानी बोलीं, "नरेन्द्र ! पिताजी आगये तुम्हारे।"

सब लोग उठ खड़े हुए और मेजर साहब की ओर बढ़ गये। सबने उन्हें सादर प्रणाम किया।

अपने परिवार में एक नये युवक को देखकर मेजर साहब को एक क्षण से अधिक नहीं लगा उसे पहचानने में। वह छूटते ही बोले, "नरेन्द्र ! यही है तुम्हारा मित्र मनोहर ! देखो मैंने भूल नहीं की पहचानने में।" और आगे बढ़कर स्नेह से मनोहर को छाती से लगाकर बोले, "बेटा मनोहर ! तुम्हारी सूरत हू-ब-हू सूबेदार साहब

से मिलती है। क्या शानदार आदमी था। तुम्हें भी वैसा ही शानदार बनना है मनोहर ! आओ।" इतना कहकर वह मनोहर के गले में हाथ डाले हुए लॉन के अन्दर लेगये।

जब सब लोग कुर्सियों पर बैठ गये तो मेजर साहब अपनी पत्नी की ओर देखकर बोले, "सरोज ! देखा तुमने। मैंने मनोहर को कितनी सरलता से पहचान लिया।"

"पहचानने में मुझे भी विलम्ब नहीं हुआ, परन्तु मुझे पहले से ज्ञात था। नरेन्द्र मुझे सूचित कर गया था।"

मेजर साहब बोले, "सरोज ! आज मनोहर को अपने सामने देखकर सूबेदार लखनसिंह की याद ताजा हो गयी। लग रहा है जैसे वही मेरे सामने बैठे हैं।" फिर मनोहर को सम्बोधित करके बोले, "बेटा मनोहर ! तुम्हारी माताजी तो सकुशल हैं। वह कहाँ हैं आजकल ?"

मनोहर ने उत्तर दिया, "हमारा गाँव यहाँ से लगभग बीस मील की दूरी पर है मेजर साहब ! माताजी वहीं हैं। सब कृपा है आपकी।"

फिर मेजर साहब ने अपनी और सूबेदार लखनसिंह की मित्रता की पूरी कहानी सुनाकर कहा, "मनोहर ! तुमने आज यहाँ आकर इन दो परिवारों की इतने दिन पुरानी टूटी हुई शृंखला को फिर से जोड़ दिया। तुम्हे देखकर आज बहुत प्रसन्नता हुयी।"

भोजन तय्यार होचुका था। किसी को बातों मे पता ही न चला कि कब शीला वहाँ से उठकर चली गयी और कब उसने कोठी में जाकर डाइनिङ्ग रूम में भोजन की व्यवस्था करदी। उन्हें इस बात की तब सूचना मिली जब शीला ने आकर कहा, "पिताजी ! भोजन तय्यार है।"

"चलो बेटी !" खड़े होते हुए मेजर साहब बोले।

मेजर साहब के साथ-साथ सब लोग भोजन करने चले गये। वहाँ भोजन का सब प्रबन्ध देखकर सरोज रानी बोलीं, "शीला बिटिया !

तुमने तो सब-कुछ ठीक-ठाक किया हुआ है यहाँ। हम लोग तो बातों में ही उलझे रहे।"

भोजन के उपरान्त सब लोग ड्राइङ्ग-रूम में चले गये और कुछ समय इधर-उधर की बातों में निकल गया। अंत में मेजर साहब बोले, "बेटा मनोहर! यहाँ रहकर यह न सोचना कि तुम अकेले हो। इस घर और परिवार को अपना ही घर और परिवार समझना। तुम्हें कोई किसी प्रकार की कठिनाई हो तो तुरन्त हमें सूचित करना।

तुम देहात के स्कूल से शहर में आये हो बेटा! तुम्हें यहाँ रहकर कॉलेज के दुश्चरित्र लड़कों से सावधान रहना होगा। अपने काम-से-काम रखना, बस! लड़कों की दल-बन्दियों और आवारागर्दियों से बहुत सतर्क रहना।"

"मनोहर का कोई कदम विपरीत दिशा में कभी नहीं जयगा मेजर साहब! आप विश्वास रखें।" गम्भीर वाणी में मनोहर बोला।

"मुझे तुमसे यही आशा है मनोहर! मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अपने पिता सूबेदार लखनसिंह के नाम को उज्ज्वल करोगे। तुम एक अद्वितीय वीर, साहसी और सच्चे देश-भक्त की सन्तान हो। सूबेदार साहब पर हमें गर्व है।" कहते-कहने मेजर साहब विषय बदल कर बोले, "बेटा मनोहर! ये सब बातें मैं तुमसे इसलिये कह रहा हूँ कि अभी कल हमारी श्री केशवचन्द्रजी से भेंट होगयी। मैं कह नहीं सकता तुमसे कि उन्हें अपने लड़के की दुश्चरित्रता पर कितना खेद था। बच्चे माता-पिता की सबसे मूल्यवान वस्तु होते हैं। जब माता-पिता अपने बच्चों को बिगड़ते देखते हैं तो उन्हें लगता है कि उनकी जीवन भर की कमाई नष्ट हो गयी, उनका जीवन निरर्थक होगया। माता-पिता के लिये इससे दुर्भाग्यपूर्ण अन्य कोई बात नहीं हो सकती।"

मेजर साहब ने यह बात दर्द-भरे शब्दों में कही। उनकी हार्दिक सहानुभूति केशवचन्द्रजी के साथ थी। उन्हें उनके पुत्र प्रकाश के विपथ-

गामी होने का महान् भेद था।

"तुम्हें ऐसे बच्चों से दूर रहना चाहिये मनोहर! तुम्हारी माताजी यहाँ नहीं हैं, परन्तु तुम यह समझना कि वह तुम्हें देख रही हैं। तुम उनके भविष्य की आशा हो। कभी कोई ऐसा काम न करना जिससे उन्हें कष्ट हो।" मेजर साहब बोले।

मनोहर बड़ी ही दत्तचित्तता के साथ मेजर साहब की बातें सुन रहा था। वह कुछ खोया-सा गया था उनकी बातों में। वह सोच रहा था कि यदि आज उसके पिता जीवित होते तो उनके मुख से भी उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिये ये ही शब्द निकलते। वह विनम्र वाणी में बोला, "मेजर साहब! मेरी इस देह में जब तक प्राण रहेंगे तब तक मुझसे कोई ऐसा कार्य होना सम्भव नहीं है जिससे माताजी की आत्मा को कष्ट हो या पूज्यनीय पिताजी के नाम को कलंक लगे। मनोहर के जीवन का मार्ग बहुत सीधा और स्पष्ट है। स्वास्थ्य और शिक्षा के अतिरिक्त उसने कभी किसी चीज से सम्बन्ध नहीं रखा, और रखेगा भी नहीं।"

मेजर साहब मनोहर की बात सुनकर गद्गद हो गये। उन्होंने खड़े होकर मनोहर को एक बार फिर अपनी छाती से लगा लिया। उनके नेत्रों में स्नेह के आँसू उभर आये। वह बोले, "तुम्हारे शब्दों की सत्य-प्रियता तुम्हारी वेश-भूषा, शारीरिक गठन और इस आयु में प्राप्त शिक्षा से सिद्ध है मनोहर! तुम जैसे ही बच्चों पर राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। मुझे विश्वास है कि तुम किसी दिन एक स्वाभिमान राष्ट्र के नागरिक बनोगे।"

मनोहर ने मेजर साहब का आशीर्वाद प्राप्त कर सिर झुका लिया। उसकी प्रसन्नता का उस समय पारावार नहीं था।

समय पर्याप्त हो चुका था। मनोहर खड़ा होता हुआ बोला, "पिताजी! मन तो नहीं हो रहा इस स्निग्ध वातावरण को छोड़ने के लिये, परन्तु अब मुझे जाना होगा।"

मेजर साहब घड़ी देखकर बोले, " अरे ! यह तो सचमुच बातों-बातों में दस बज गये । बेटा नरेन्द्र ! मनोहर को गाड़ी पर छात्रावास तक छोड़ आओ ।"

मनोहर बोला, "नहीं पिताजी ! क्या चार क़दम के लिये भी मुझे गाड़ी की आवश्यकता होगी ? भाई नरेन्द्र कष्ट न करें, मैं स्वयं चला जाऊँगा ।"

मनोहर ने खड़ा होकर सब को प्रणाम किया । शीला ने भी हाथ जोड़ दिये परन्तु दो हृदयों की भाषा मौन ही रही ।

नरेन्द्र कॉलेज के फाटक तक मनोहर के साथ गया ।

धीरे-धीरे समय व्यतीत होता गया। मनोहर और नरेन्द्र की मित्रता प्रगाढ हो गयी। मनोहर अब जब भी उसका जी चाहता था नरेन्द्र की कोठी पर चला जाता था और नरेन्द्र उसके छात्रावास में चला जाता था।

शीला भी अब कभी-कभी अवसर देखकर मनोहर से दो-चार बातें कर लेती थी। मनोहर भी साहस करके शीला की बातों का उत्तर देदेता था। सरोज रानी की दृष्ठि कभी उन पर पड़ भी जाती थी तो वह उसे अनदेखी कर देती थीं।

मनोहर ने हाई-स्कूल की परीक्षा फ़र्स्ट डिवीज़न में पास की थी और कॉलेज की छमाही परीक्षा में वह अपनी कक्षा में प्रथम आया था। उसकी प्रतिभा ने उसके प्रोफ़ेसर्स को इतना प्रभवित किया था कि वह सभी के स्नेह का पात्र बन गया था।

मनोहर ने कॉलेज में आते ही एन. सी. सी. में अपना नाम लिखा लिया था। एन. सी. सी. की परेड और रायफल चलाने में उसने विशेष दक्ष्यता प्रप्त की।

मनोहर कॉलेज के स्पोर्ट्स में भी भाग लेता था। इस वर्ष के स्पोर्ट्स में मनोहर ने गत वर्ष के रिकार्ड तोड़ दिये। वार्षिक समारोह में प्रिंसिपल साहब ने मनोहर को कॉलिज का चेम्पियन घोषित किया। उन्होंने मनोहर को शील्ड प्रदान की और हाथ मिलाया।

मनोहर शील्ड लेकर मंच से नीचे उतरा तो उसके साथियों ने उसे कन्धों पर उठा लिया।

नरेन्द्र पीछे खड़ा यह दृश्य देख रहा था। वह आगे बढ़ मनोहर के निकट पहुँचकर बोला, "मनोहर! बधाई देता हूँ!

तुमने इस वर्ष के कॉलिज-स्पोर्ट्स में जो नया रिकार्ड प्रस्तुत किया है उसे सरलता से कोई अन्य विद्यार्थी तोड़ने का साहस नहीं कर सकेगा।"

वहाँ से कुछ दूरी पर शीला अपनी सहेली मनोरम के साथ खड़ी थी। मनोरम शीला की प्रसन्नता का अनुभव करके बोली, "आज तो तुम बहुत प्रसन्न हो शीला ?"

शीला मुस्कराकर बोली, "क्या तुम्हें प्रसन्नता नहीं हुयी मनोरम ?"

"हुई क्यों नहीं शीला ! परन्तु तुम्हें अधिक हुयी होगी।"

"क्यों मनोरम ! अपना सहपाठी चेम्पियन हुआ है तो क्या तुम्हें कम प्रसन्नता हुयी होगी ?"

मनोरम मुस्कराकर बोली, "हमसे बनने की आवश्यकता नहीं है शीला ! मन में लड्डू फूट रहे हैं और ऊपर से बातें बना रही हो।"

तभी प्रतिमा और ललित आगयीं। प्रतिमा शीला को झंझोड़कर बोली, "शीला ! अब तो फूली नहीं समा रही होगी ?"

शीला कुछ लजा सी गयी, बोली नहीं।

ललित मुस्कराकर बोली,"तुम्हें बधाई देनी चाहिये शीला ! तुम्हारे स्थान पर मैं होती तो अब तक कभी की सबके बीच में पहुँच गयी होती।"

प्रतिमा बोली, "क्या तुम समझती हो ललित ! कि सब लड़कियाँ तुम जैसी ही निर्लज्ज होती हैं ? मन की बात को मन में छिपाना भी एक कला है। हमारी शीला रानी इस कला में बहुत दक्ष्य हैं।"

ललित व्यंग्य पर और निखार लाकर बोली, "प्रतिमा देवी, इस कला की तो पण्डिता आप भी कुछ कम नहीं हैं। फिर अपने को क्या ? यदि कोई ननद-भाभी एक-दूसरे के मन को परखती हैं तो हम उसे ग़लत क्यों कहें ? हमें अधिकार ही क्या है उसे ग़लत कहने का ?"

"बहुत नटखट होती जारही हो ललित !" प्रतिमा मुस्कराकर बोली।

"जी हाँ, पहले निर्लज्ज और फिर नटखट ! तुम कुछ भी कहलो

प्रतिमा ! परन्तु सचाई को तुम ललित, से छिपाकर नहीं रख सकतीं। ननदोई के चेम्पियन होने पर आखिर किसका हृदय नहीं गुदगुदायेगा ?"

शीला सतर्क होकर बोली, "दुहरे-दुहरे तीर छोड़ रही हो ललित ! मैंने तो सुना था कि तुम्हारे प्रकाश बाबू इस वर्ष चेम्पियनशिप का शील्ड लेरहे हैं।"

"मेरे प्रकाश बाबू !" हँसते हुए ललित बोली ! "वह महाशय तो हर वर्ष ही शील्ड जीतते हैं ! सुना है अब वह बम्बई जाने वाले हैं। मेरठ से उनका मन ऊब गया है।"

"बम्बई ! वह किस लिये ?" प्रतिमा ने पूछा।

"वह कह रहे थे कि मेरठ उनके लिये उपयुक्त स्थान नहीं रहा है। उन्हें बम्बई की किसी फ़िल्म-कम्पनी ने आमंत्रित किया है।"

"तो अभिनेता बनेंगे क्या ? अभिनय वह करते भी बहुत सुन्दर हैं। क्या किसी फ़िल्म-निर्माता को किसी खल-नायक की भूमिका अभिनीत करानी है ललित ? इस कार्य में प्रकाशबाबू को निश्चय ही सफलता मिलेगी।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी सामने से प्रकाश वहाँ आ गया। ललित और प्रतिमा को खड़ी देखकर वह सीधा वहीं पहुँचा और बोला, "प्रतिमा ! कुछ सुना तुमने ? हमारे मनोहर ने चेम्पियनशिप का शील्ड जीता है।"

प्रतिमा ने मुस्कराकर पूछा, "क्या आप उपहास कर रहे हैं प्रकाश बाबू ?"

"क्यों ?"

"अभी-अभी ललित कह रही थी कि इस वर्ष आप इस शील्ड के विजेता हुए हैं। क्या ललित तुम्हारी झूठी प्रशंसा कर रही थी ?"

प्रकाश हँसकर बोला, "प्रतिमा देवी ! हममें और मनोहर में अन्तर ही क्या है ? शील्ड हमारे सहपाठी ने जीता, तो हमने ही जीता है। आया तो हमारी ही कक्षा के पास।"

"वड़ी व्यापक विचारधारा है आपकी ! है तो वास्तव में प्रशंसनीय । अच्छा, अव आप वम्वई कव जारहे हैं ?"

"वम्वई !" आश्चर्य प्रदर्शित करते हुए प्रकाश वोला । "आज तुम कैसी रहस्यपूर्ण वातें कर रही हो प्रतिमा ?"

"ललित कह रही थी कि आपको अव यहाँ रहने में कोई रुचि नहीं रह गयी है । सुना है आपको किसी फ़िल्म-निर्माता ने खलनायक की भूमिका अभिनीत करने के लिये आमंत्रित किया है ।"

प्रकाश ललित की ओर देखकर वोला, "क्यों देवीजी ! आखिर यह सव क्या है ? आप मेरे विषय में ये कैसी अफ़वाहें उड़ा रही हैं ?"

"अफ़वाहें !" ललित अपना चेहरा गम्भीर वनाकर वोली, "तो क्या यह अफ़वाह है प्रकाश वावू ! मुझे तो दिनेश ने यह शुभ समाचार दिया था । मैंने सोचा, कितना शुभ समाचार है । प्रकाश वावू का भी भविष्य उज्ज्वल हो जायगा और इस कॉलेज को भी उनसे मुक्ति मिलेगी ।"

"हूँ ! तो ये वातें दिनेश का वच्चा फैला रहा है । मैं अभी देखता हूँ उस गधे को जाकर ।" इतना कहकर प्रकाश वहाँ से समारोह की ओर वढ़ गया ।

प्रकाश के कुछ दूर चले जाने पर ललित हँसकर वोली, "यह वड़ा चालाक और वुद्धिमान समझता है अपने को । इस वर्ष मनोहर वावू ने इसके शिकंजे अच्छी तरह कस दिये हैं । उनकी सूरत देखकर इसे थरथरी आने लगती है । परन्तु निर्लज्ज इतना है कि न इसे गिड़गिड़ाने और क्षमा माँगने में लज्जा आती है और न ही गीदड़ के समान घुड़की दिखाने में । कमिश्नर साहव की पत्नी ने लाड़-प्यार में इसका जीवन नष्ट कर दिया ।"

प्रकाश आगे वढ़कर सीधा समारोह के उसी स्थल पर पहुँचा जहाँ मनोहर शील्ड लिये खड़ा था और उच्च स्वर में बोला, "कांग्रेचु-

लेशन्स मिस्टर मनोहर ! तुमने हमारी कक्षा का नाम रख लिया । मैं अपनी पूरी कक्षा की ओर से तुम्हें बधाई देता हूँ ।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "प्रकाश बाबू ! बड़ी देर से पधारे आज । आप थे कहाँ ? प्रिंसिपल साहब ने तो आपका ही नाम लेकर पुकारा था ।"

"क्यों ?" प्रकाश बोला ।

"कुछ नहीं । उनका कहना था कि फर्स्ट ईयर की यह चैम्पियनशिप की शील्ड आपको ही भेट की जानी चाहिये । आप ही तो फ़र्स्ट ईयर के सबसे पुराने प्रतिनिधि है । यह अधिकार आपका ही था ।"

"मनोहर की इस बात पर इधर-उधर खड़े सब लड़के हँस पड़े । नरेन्द्र प्रकाश की ओर से मुँह फेरकर खड़ा होगया । उसे उसकी सूरत से घृणा थी ।

प्रकाश मनोहर के व्यंग्य को समझकर भी गम्भीर वाणी में बोला, "क्षमा चाहता हूँ मनोहर ! मुझे आने में वास्तव में कुछ देर होगयी । आज तुम्हें अपनी चैम्पियनशिप के उपलक्ष में पार्टी में आना स्वीकार करना होगा । देखिये, आज आप ना नहीं कर सकेंगे ।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "प्रकाश बाबू ! मुझे तो आप अपनी इन पार्टियों से मुक्त ही रखें । मैंने आपसे उस दिन भी कहा था कि मैं देहाती लड़का इनमें रुचि नहीं रखता ।"

प्रकाश अपनी बात पर बल देता हुआ बोला, "मैंने वेजीटेरियन पार्टी का प्रबन्ध किया है मनोहर बाबू ! आपकी रुचि के प्रतिकूल उसमें कुछ नहीं होगा । इसी काम मे तो मुझे इतनी देर होगयी ।"

मनोहर बोला, "यह सब तो ठीक है प्रकाश बाबू ! परन्तु मैं उसमें सम्मिलित नहीं हो सकूँगा । मेरे अपने कुछ सिद्धान्त हैं जीवन के और मैं किसी मूल्य पर भी उन्हें छोड़ नहीं सकता ।"

इससे अधिक स्पष्ट उत्तर और दिया नहीं जा सकता था । प्रकाश बोला, "तो इसका अर्थ मैं यह समझूँ मनोहर बाबू ! कि तुम

हमारी प्रसन्नता के समारोह में सम्मिलित नहीं होना चाहते। मैंने कई बार तुम्हारे सामने ऐसे प्रस्ताव रक्खे और तुमने एक बार भी अपनी स्वीकृति नहीं दी। आखिर क्या कारण है ?"

नरेन्द्र मनोहर के मुख से निकलने वाले प्रत्येक शब्द को बड़े ध्यान से सुन रहा था। मुँह उसने दूसरी ओर को अवश्य किया हुआ था परन्तु कान उसके वहीं थे।

मनोहर मुस्कराकर बोला, "प्रकाश बाबू! जिस बात का उत्तर आप मुझसे प्राप्त करना चाहते हैं उसका उत्तर आपको अपने मन से ही प्राप्त होगा। पहले आप अपने मन की स्थिति ठीक करिये, तब किसी पार्टी का आयोजन करना।"

मनोहर की बात सुनकर प्रकाश ने गम्भीर दृष्टि से मनोहर की ओर देखा तो उसे लगा कि जिस छल का आवरण डालने का प्रयत्न वह मनोहर पर कर रहा था, उसमें उसे कभी सफलता नहीं मिल सकेगी। उसे लगा कि मनोहर एक विशाल वृक्ष के समान गगनचुम्बी ऊँचाई धारण किये खड़ा मुस्करारहा था और वह एक चींवटी के समान उसकी छाया में रेंग रहा था।

प्रकाश अपना सिर नीचा किये हुए एक ओर को चला गया। फिर उसके मुख से एक शब्द न निकला।

समारोह समाप्त होचुका था। विद्यार्थी दो-दो चार-चार के गोल बनाकर अपने-अपने घरों और छात्रावासों की ओर जा रहे थे। देखते-ही-देखते सारा मैदान खाली होगया।

नरेन्द्र बोला, "मनोहर भाई! चलो घर चलें। माताजी ने कह दिया था कि समारोह से लौटते समय मनोहर को भी अपने साथ लिवालाना।"

"चलो भाई नरेन्द्र! माताजी की आज्ञा का उल्लंघन करना क्या मनोहर के लिये कभी सम्भव है ? मनोहर ने जब से होश सँभाला है माँ की ही आराधना की है।"

नरेन्द्र और मनोहर कोठी पर पहुँचे तो देखा शीला, प्रतिमा, ललित और मनोरम वहाँ पहले ही पहुँच चुकी थीं। वे सब सरोज रानी के पास कोठी के बाहर लॉन में बैठी बातें कर रही थीं।

नरेन्द्र और मनोहर को कोठी में प्रवेश करते देखकर ललित बोली, "अरे ! यह तो मनोहर बाबू आरहे हैं नरेन्द्र भय्या के साथ।"

मनोहर का नाम सुनकर सरोज रानी बोली, "ललित ! मनोहर मेरा दूसरा बेटा है। इसके पिता, सूबेदार सज्जनसिंह, नरेन्द्र के पिताजी के बहुत घनिष्ट मित्र थे।"

तब तक मनोहर और नरेन्द्र उनके निकट आगये। मनोहर ने आगे बढ़कर सरोज रानी के चरण छूए और उन्होंने मनोहर को आशीर्वाद दिया।

नरेन्द्र आगे बढ़कर अपनी माताजी के हाथ में शील्ड देता हुआ बोला, "यह लीजिये माताजी ! इस वर्ष चैम्पियनशिप का शील्ड आपके छोटे बेटे मनोहर ने जीता है।"

सरोज रानी गद्‌गद् होकर बोली, "मुझे मनोहर से यही आशा थी नरेन्द्र !"

ललित मुस्कराकर बोली, "मनोहर बाबू ! हमारी भी बधाई स्वीकार करें।"

ललित की बात का मनोहर कोई उत्तर न दे सका। उसने केवल मुस्कराकर उनकी ओर एक बार देखा।

प्रतिमा बोली, "मनोहर बाबू ! आपने तो गतवर्ष के सभी खेलों के रिकार्ड तोड दिये।"

मनोहर मुस्कराकर बोला, "मैंने कुछ नहीं तोड़ा प्रतिमा देवी ! अनायास ही टूट गये हों तो मैं कह नहीं सकता।"

सब लड़कियाँ मुस्करादीं मनोहर का उत्तर सुनकर। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि यह सरल-सा उत्तर देने में मनोहर को कितने मनोबल का आश्रय लेना पड़ा।

कुछ देर खेल-कूद के विषय में बातें करके ललित, मनोरम और प्रतिमा चली गयीं। शीला उन्हें कोठी के बाहर तक छोड़कर आयी। लगभग आधा घण्टा पश्चात् मेजर साहब अपने कार्यालय से लौटकर आये। उन्हें मनोहर के चैम्पियन होने की सूचना मिली तो उन्होंने मनोहर को अपनी बाहुओं में भर लिया।

सबने साथ-साथ बैठकर भोजन किया और फिर सब ड्राइङ्ग-रूम में आकर बैठ गये। नरेन्द्र ने अपने पिताजी को मनोहर के सर्भ, खेलों का ब्यौरा दिया। उसे सुनकर मेजर साहब बोले, "मनोहर! तुम्हारी इस सफलता पर हमें हार्दिक प्रसन्नता हुयी। मैं तुम्हारे अन्दर शिक्षा और स्वास्थ्य का जो सामंजस्य देख रहा हूँ वह तुम्हारे उज्जवल भविष्य का द्योतक है। तुम्हारी सद्चरित्रता ने ही तुम्हें इन दोनों गुणों से सम्पन्न किया है।"

"इसमें कभी कोई कमी नहीं आयेगी मेजर साहब!" मनोहर ने गम्भीर वाणी में कहा।

मनोहर के ये शब्द सुनकर मेजर साहब के चेहरे पर प्रसन्नता की रेखा खिच गयी।

समय पर्याप्त हो चुका था। मनोहर ने अपने छात्रावास जाने की आज्ञा माँगी। मेजर साहब नरेन्द्र से बोले, "बेटा नरेन्द्र! जाओ, कुछ दूर तक मनोहर को छोड़ आओ।"

मनोहर ने खड़ा होकर सबको प्रणाम किया और वह नरेन्द्र के साथ अपने छात्रावास के लिये चल दिया। चलते समय उसने एक बार हल्की-सी दृष्टि से शीला की ओर देखा। शीला ने भी मनोहर की ओर देखा, परन्तु ठीक से आँखें चार न हो सकीं, संकोच था दोनों ओर और माता-पिता की लज्जा।

नरेन्द्र कॉलेज के फाटक तक मनोहर को पहुंचाने गया। वह छात्रावास तक ही जाना चाहता था, परन्तु मनोहर ने उसे और आगे नहीं बढ़ने दिया।

विदा होते समय दोनों ने एक-दूसरे को नमस्कार किया। मनोहर अपने छात्रावास की ओर तथा नरेन्द्र अपनी कोठी की ओर चल दिया।

नरेन्द्र कोठी पर पहुँचा तो वहाँ सरोज रानी और मेजर साहब में मनोहर को लेकर कुछ बातें होरही थीं। शीला वहाँ नहीं थी। वह अपने कमरे में चली गयी थी।

नरेन्द्र ने ड्राइङ्ग-रूम में प्रवेश किया तो मेजर साहब बोले, "छोड़ आये बेटा ! मनोहर को। क्या कॉलिज तक गये थे ?"

"जी पिताजी ! कॉलिज के फाटक तक।"

"अच्छा-अच्छा ! जाओ अब अपना काम करो।"

नरेन्द्र अपने कमरे में चला गया।

मेजर साहब बोले, "सरोज रानी ! कितना अच्छा लडका निकला। अपनी आयु पर आकर मनोहर का वही डील-डौल होगा जो सूबेदार साहब का था।"

"उनसे भी बढ़कर !" भावना में बहकर स्वरूप रानी बोलीं।

फिर कुछ देर दोनों चुप रहे। दोनों ने एक-दूसरे के चेहरे पर देखा। दोनों ही एक-दूसरे के मनोभावों को समझना चाहते थे।

सरोज रानी बोलीं, "नरेन्द्र के पिताजी ! मनोहर अपनी शीला के लिये कैसा रहे ?"

मेजर साहब हँस पड़े उनकी बात सुनकर। फिर बोले, "सरोज रानी ! तुमने यह चोरी करनी कहाँ से सीखली ?"

"कैसी चोरी ?"

"इसे चोरी नहीं तो क्या कहोगी तुम ? मैंने एक बात अपने मन में सोची और तुमने उसे चुपके से चुरा लिया।"

सरोज रानी के मुख-मण्डल पर स्निग्ध आभा बिखर गयी। वह बोलीं, "क्या अपनी चीज को सँवार-सधार कर रख देने को भी

चोरी कहा जाता है नरेन्द्र के पिताजी ? लड़का मुझे बहुत पसंद आया । मुझे विश्वास है कि जब मैं मनोहर की माताजी के सामने यह प्रस्ताव रखूंगी तो वह ना नहीं करेगी ।"

"अपनी नीला के लिये बहुत उपयुक्त होगा मनोहर ! परन्तु अभी तो बच्चे हैं दोनों । इस काम में शीघ्रता ही क्या है ? ये काम बड़ी सावधानी से करने के होते हैं ।"

"हाँ-हाँ ! सो क्या मैं जानती नहीं हूँ । एक बात आयी थी मन में, वह आपके कानों में डालदी ।"

उस दिन बात यहीं समाप्त होगयी ।

घटनायें जीवन में आती रहती हैं और समय व्यतीत होता रहता है। जो घटना आज नयी है वह कल पुरानी होजाती है, परन्तु कुछ घटनायें जीवन मे ऐसी आती हैं जो कभी पुरानी नही होती। उनका रग वदलता रहता है, रूप में परिवर्तन आता है, परन्तु मूल घटना ज्यों-की-त्यों बनी रहती है।

मनोहर के जीवन में शीला का आजाना ऐसी ही घटना थी। वह गौण रूप से जीवन मे समाविष्ट हुयी और धीरे-धीरे प्रधान बन बैठी। उसका प्रभाव मनोहर के हृदय और मस्तिष्क पर निरन्तर बढ़ता गया।

मनोहर कभी-कभी घण्टों एकान्त में बैठकर इस विषय में सोचता रहता था कि आखिर यह हुआ क्यों? शीला ने उसके मानस को क्यों इस प्रकार प्रभावित किया? कभी इस विषय मे उसकी शीला से कोई बात नहीं हुयी। होती भी कैसे? बात करने का तो उसमें साहस ही नहीं था।

शीला कोई विशेष सुन्दर लड़की नही थी। कोई तड़क-भड़क न उसके व्यवहार मे थी और न वेश-भूषा मे। परन्तु पता नही क्यो मनोहर को कुछ ऐसी ही लड़की भली लगती थी। उसे इसी में सौन्दर्य दिखायी देता था। उसके लिये यही आकर्षण की वस्तु थी।

बोलने का साहस शीला में भी नही था। अपने मन के भावों को वाणी द्वारा व्यक्त करने का कभी उसमें भी साहस नही हुआ। वह लाख सोचती थी कि इस बार मनोहर से भेंट होने पर अपने मन मे उठने वाली हर बात उससे कह डालेगी, केवल कहेगी ही नही, वरन् उसका उत्तर भी चाहेगी मनोहर से; परन्तु मनोहर के सामने आने पर वाणी

पर जैसे ताला पड़ जाता था। सच बात यह थी कि वह भली प्रकार देख भी नहीं पाती थी मनोहर से आँखें मिलाकर।

सरोज रानी शीला और मनोहर को परस्पर बातें करने का अवसर प्रदान करती थीं। किसी बहाने से वह उनके बीच से उठकर चली जाती थीं और नरेन्द्र को भी अपने पास बुला लेती थीं। शीला और मनोहर ड्राइङ्ग-रूम में अकेले बैठे रह जाते थे, परन्तु होठ नहीं खुलते थे दोनों के। बहुत बड़ा प्रयास करके यदि मनोहर बोलता भी था तो केवल इतना भर, "शीला ! पढ़ाई कैसी चल रही है तुम्हारी ?"

"ठीक ही चल रही है मनोहर बाबू !" सकुचाकर शीला उत्तर देती थी।

"इतिहास में तुमने इस वर्ष अच्छे अंक प्राप्त किये।"

"जी हाँ ! इतिहास में मुझे आरम्भ से ही रुचि रही है।"

उसके पश्चात् फिर मौन छाजाता। मानो इन प्रश्नों के अतिरिक्त दोनों के पास अन्य कोई विषय ही नहीं था बातें करने का।

जब ये दोनों एकांत में होते थे तो अनेकों प्रश्न उठते थे इनके मस्तिष्क में। मनोहर सोचता था कि इस बार की भेंट में पूछेगा, 'शीला ! तुम इस प्रकार मेरी आत्मा में समावेश कैसे कर गयीं ? क्या तुम कोई जादू जानती हो जिससे तुमने मेरे मन पर अपना अधिकार कर लिया ? मैं तो आज तक कभी किसी लड़की की ओर इस प्रकार आकृष्ट नहीं हुआ। तुमने आखिर यह सब क्या कर दिया ?'

शीला सोचती थी कि इस बार वह मनोहर से हर बात स्पष्ट करके रहेगी। वह पूछेगी, 'मनोहर बाबू ! आप अनायास ही मुझे देवता-तुल्य क्यों दिखायी देने लगे ? मैं इतनी दुर्बल नहीं हूँ। मेरा मन भी इतना चलायमान नहीं है। मुझे आज तक किसी लड़के ने प्रभावित नहीं किया। सच यह है कि मैंने कभी किसी की ओर इस दृष्टि से देखा ही नहीं। परन्तु तुम्हारे चेहरे पर मेरी दृष्टि पड़ी कि बस गढ़कर रह गयी। वह जैसी उस दिन गढ़ी थी वैसी ही आज भी उसकी स्थिति है।

प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है, कम होने की सम्भावना दिखायी नहीं देती। मैंने कोई भूल तो नहीं की है मनोहर बाबू ! मैं लड़की हूँ । संकोच है मुझमें । मुझे अपने मन के भावों को व्यक्त करने में लज्जा आती है। आप तो पुरुष हैं । आप में तो साहस होना चाहिये । आप तो सब कुछ कह सकते हैं। फिर आप क्यों कुछ नहीं कहते ? क्यों कुछ नहीं पूछते ? आप कुछ पूछें तो क्या मैं उत्तर न दूं ?"

शीला निश्चय करके बैठती थी कि आज वही प्रश्न करेगी परन्तु जब मनोहर से भेंट होती थी तो वाणी को जाने क्या होजाता था। स्वर कण्ठ से बाहर नहीं निकल पाता था। मन चाहता था कि कुछ कहे परन्तु कह न पाती थी ।

यह सब-कुछ होने पर भी दोनों के हृदय की भावना दृढ होती जा रही थी, दोनों का विश्वास निश्चित और स्थिर होता जा रहा था। दोनों का दिल कहता था, 'ये बातें होठों के फड़फड़ाने से सम्बन्ध नहीं रखतीं। इनका सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा से है। इनका अनुभव आत्मा करती है। इनके प्रश्न भी आत्मा से ही उठते हैं और वही इनका समाधान करती है।'

कुछ देर में बिना प्रश्न किये ही दोनों का मन शान्त हो जाता था। दोनों एक-दूसरे की ओर देखते थे और फिर धीरे से अपनी आँखें नीचे झुका लेते थे। मानो जो कुछ भी उन्हें एक-दूसरे से कहना होता था वह कह देते थे और जो उत्तर प्राप्त करना होता था वह उन्हें प्राप्त होजाता था।

इसी प्रकार जीवन आगे बढ़ रहा था। इसी बीच एक बार मनोहर की माताजी भी शहर आयीं और उन्होंने सरोज रानी का आतिथ्य स्वीकार किया। उन्हें उनके आने की सूचना प्राप्त हुयी तो वह अपने पति के साथ स्वयं रेलवे स्टेशन पर गयीं और उन्हें अपनी कोठी पर लिवाकर लायीं।

मनोहर की माताजी का नाम सहजोबाई था। शि

विशेष नहीं थी परन्तु भारतीय धर्म-ग्रंथों का अध्ययन उन्होंने किया था। उनके जीवन पर भारतीय आदर्श नारियों के जीवन की छाप थी। प्रकृति उनकी पहले से ही गम्भीर और बहुत कम बोलने की थी। वैधव्य के इस लम्बे काल ने उस गम्भीरता में कुछ और वृद्धि कर दी थी, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं था कि वह हँसना-मुस्कराना जानती ही नहीं थी।

सहजोबाई गाड़ी से उतरकर प्लेटफ़ार्म पर आयीं तो मनोहर ने दूर से ही उन्हें देख लिया। वह सरोज रानी से अपनी माताजी की ओर संकेत करके बोला, "माताजी आगयीं। आप आइये, मैं सामान उतरवाता हूँ गाड़ी से।" कहकर मनोहर आगे बढ़ गया। नरेन्द्र और शीला रानी भी पीछे से आगयीं। वे भी मनोहर के पीछे-पीछे आगे बढ़ीं।

मनोहर ने आगे बढ़कर अपनी माताजी के चरण छुए। साथ ही नरेन्द्र और शीला ने भी।

सहजोबाई ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए मनोहर की ओर देखकर कहा, "नरेन्द्र और शीला! भूल तो नहीं की मैंने पहचानने में?"

शीला बोली, "अपने बच्चों को पहचानने में भी क्या माँ भूल करेंगी माताजी?"

शीला का उत्तर सुनकर सहजोबाई का हृदय आनन्द से परिप्लावित हो उठा। उन्होंने शीला को अपनी अंक में भरकर कहा, "माँ भूल कैसे कर सकती है बेटी! माँ ही यदि भूल करेगी तो फिर वह माँ कैसे रहेगी?"

तभी सरोज रानी भी वहाँ आगयीं। वह सहजोबाई को प्रणाम करती हुयी बोलीं, "आपको मैंने ट्रेन से उतरती देखते ही पहचान लिया था। आपको पहचानने में मुझे एक क्षण का भी विलम्ब नहीं हुआ।"

"बहन सरोज!" कहकर सहजोबाई आगे बढ़ीं और परस्पर बड़े

स्नेह से गले मिलीं। यह कितने ही दिन की बिछुड़ी हुई दो बहनों का मिलन था। दोनों के नेत्र स्नेह-जल से पूर्ण थे। दोनों को एक-दूसरी से भेंट करके हार्दिक संतोष प्राप्त हुआ।

नरेन्द्र ने दो कुलियों को बुलाकर सामान उठवाया और स्टेशन से बाहर आ गये। मेजर साहब बाद में आये।

सहजोबाई की दृष्टि मेजर साहब पर गयी तो वह अपनी साड़ी के पल्ले से चेहरे की ओट करती हुयी बोली, "मेजर साहब!"

सरोजरानी बोली, "मैंने कहा था इनसे कि हम लोग ले आते हैं बहन को स्टेशन जाकर परन्तु यह माने ही नहीं। बोले, 'नहीं, भाभी आयी हैं और मैं उन्हें लेने न चलूँ।'

सरोजरानी के ये शब्द सुनकर सहजोबाई के नेत्रों से कई बूँद आँसू भल्ल से चू पड़े। 'भाभी' शब्द ने उनके मस्तिष्क में पुरानी स्मृतियों को सजग कर दिया।

मेजर साहब ने सहजोबाई को आगे बढ़कर प्रणाम किया। सहजोबाई ने साड़ी की ओट से ही अपने दोनों हाथ बाहर निकालकर मेजर साहब की ओर जोड़ दिये।

स्टेशन से सब लोग मेजर साहब की कोठी पर गये। इस प्रथम भेंट में सरोजरानी ने आपसी पुरानी और नवीन बातों के अतिरिक्त कोई महत्वपूर्ण बात नहीं की। सहजोबाई वहाँ ठहरी भी केवल कुछ एक घण्टों के ही लिये क्योंकि उन्हें अपने भाई के पास दोपहर बाद की गाड़ी से प्रयाग जाना था।

भोजन इत्यादि के पश्चात् सब लोग उन्हें गाड़ी पर सवार कराकर आये। सहजोबाई ने विदा होते समय, शीला और नरेन्द्र, दोनों को सस्नेह हर के ही समान प्यार से पुचकारा और आशीर्वाद दिये।

दूसरे वर्ष सहजोबाई का फिर शहर आना हुआ। इस बार वह दो दिन शहर में ठहरीं। उन्होंने आज प्रयास किया कि वह यहीं अपना

अपने ठहरेने का प्रबन्ध करें परन्तु सरोजरानी ने यह नहीं होने दिया। उनके आग्रह को सहजोबाई टाल न सकीं।

दूसरे दिन जब शीला और नरेन्द्र कॉलेज चले गये और कोठी पर सरोजरानी और सहजोबाई ही रह गयीं तो सरोजरानी बोलीं, "बहन सहजोबाई! जब से मनोहर को देखा है तब से मुझे लगता है जैसे मेरे एक नहीं दो पुत्र हैं। मैंने आपके बच्चे पर अनधिकार ही अपना अधिकार कर लिया है।"

सरोजरानी की बात सुनकर सहजोबाई मुस्कराकर बोलीं, "अधिकार न होता तो अधिकार जमा कैसे पातीं बहन! अधिकार से ही तो अधिकार जमता है। मनोहर भी आपको उतने ही आदर और स्नेह की दृष्टि से देखता है जितना वह मुझे देखता है। मेजर साहब का संरक्षण प्राप्त कर वह अपने पिता के अभाव को भूल गया है।"

सहजोबाई को मनोहर यहां पर घटने वाली प्रत्येक घटना की सूचना अपने पत्रों में देता रहता था। उसने हर घटना का अपने पत्रों में विस्तार-पूर्वक वर्णन किया था। केवल एक घटना ऐसी थी जिसका संकेत देना वह अपने किसी पत्र में नहीं भूलता था और संकेत कर नहीं पाता था। सहजोबाई माता थीं मनोहर की। अपने बच्चे के मनोभावों को समझने में वह भूल नहीं कर सकती थीं।

जब वह पहली बार कुछेक घण्टों के लिये यहां आयी थीं और शीला को उन्होंने देखा था तो वह उन्हें बहुत भली लगी थी। शीला के प्रति अनायास ही उनका आकर्षण बढ़ गया था। उनके मन में यह इच्छा उत्पन्न हुयी थी कि यदि शीला उन्हें उनकी पुत्र-वधू के रूप में प्राप्त हो जाय तो यह उनका सौभाग्य होगा, परन्तु मन के भावों को व्यक्त करने का उन्हें उचित अवसर नहीं मिला था। कुछ संकोच सा भी वह अनुभव कर रही थीं। वह सोचती थीं कि यदि मेजर साहब और सरोज रानी ने स्वीकार न किया तो व्यर्थ लज्जित होना पड़ेगा।

सरोजरानी बोली, "हमारी शीला बेटी और मनोहर के स्वभाव बिलकुल एक जैसे हैं सहजो बहन ! बड़े ही संकोची हैं दोनों। इतने दिन इन दोनों को मिलते-जुलते होगये, परन्तु क्या मजाल जो दो घड़ी भी दोनों ने आपस में बैठकर कभी बातें की हों।"

सहजोबाई मुस्कराकर बोलीं, "मनोहर बचपन से ऐसा ही संकोची स्वभाव का है सरोज ! लड़कियों को देखकर आँखें नीची करके ऐसे निकल जाता है कि मानो वे इसे पकड़े ले रही हैं। यह किसी लड़की को संकट में देखता है तो शेर हो जाता है परन्तु यूँही किसी से बातें करने का इसमें कभी साहस नहीं होता। यह अच्छा भी है बहन ! लड़के और लड़की का आपस में आग और फूँस का मेल होता है।"

"इसमें तो कोई सन्देह नहीं है सहजो बहन ! लड़के-लड़कियों का यह निर्लज्जतापूर्ण व्यवहार, इधर-उधर बातचीत करते फिरना, मुझे भी पसंद नहीं है। फिर शीला के पिताजी तो इसे सहन ही नहीं कर सकते। आज के बच्चों के ऐसे आचरण देखकर उनके मन में कुढ़न पैदा हो जाती है।"

सहजोबाई गम्भीरतापूर्वक बोलीं, "बहन सरोज ! लड़के और लड़की का सम्बन्ध कोई खेल तो होता नहीं है। लड़की की आबरू मोती की जैसी होती है। एक बार उतर कर वह फिर चढ़ नहीं सकती। इस बात को बच्चे क्या समझें ? लड़की वाला ही समझ सकता है इसे। माँ-बाप के उत्तरदायित्व को समझना सरल काम नहीं है।"

सरोजरानी भी उतनी ही गम्भीरतापूर्वक बोलीं, "आपका कथन सर्वथा सत्य है बहन सहजो ! आज के समय में बच्चेवालों को बहुत फूंक-फूंककर पग रखना होता है। विशेष रूप से लड़की के माता-पिता के सामने तो यह समस्या बहुत जटिल रहती है।"

"यही तो मैंने कहा बहन ! शीला जैसे संकोची स्वभाव की आज न तो लड़कियाँ ही हैं और न मनोहर जैसे लड़के। मैं तो आज के

लड़के-लड़कियों के आचरण देखती हूँ तो दाँतों तले अँगुली दवाकर रह जाना होता है।" सहजोवाई वोलीं।

सरोज रानी सहजोवाई के मुख से शीला और मनोहर के संकोची स्वभाव की सौम्यता के विषय में ये शब्द सुनकर मुस्कराती हुई वोलीं, "वहन सहजो ! एक वात कहूँ तुमसे।"

"कहो वहन ! तुम्हारी वात क्या मेरे हित में न होगी ?"

"शीला के पिताजी को मनोहर ने वहुत प्रभावित किया है। उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं आपके सामने शीला और मनाहर के सम्वन्ध की चर्चा करूँ।"

सहजोवाई प्रसन्नतापूर्वक वोलीं, "मेरे सामने इसकी चर्चा करने की क्या आवश्यकता है वहन ! मनोहर के पिता तो अव हैं नहीं। करना तो सव-कुछ मेजर साहव को ही है। क्या मनोहर के भविष्य के विषय में विचार करने वाला क्या मेजर साहव से अधिक अन्य कोई शुभचिंतक मुझे मिल सकता है ?"

"तो वहन ! मनोहर वेटा आज से मेरा हुआ।"

सहजोवाई वोलीं, "आज से नहीं वहन ! मैं तो पहले से ही मनोहर को आपके हाथों में सौंप चुकी हूँ। संकोचवश कह नहीं पा रही थी आपसे।"

सहजोवाई ने देखा कि शीला कॉलेज से आ रही थी। शीला पहले अपने कमरे में गयी, पुस्तकें मेज़ पर रखीं और फिर ड्राइङ्ग-रुम में जाकर दोनों माताओं को नमस्कार किया।

"आओ शीला वेटी !" सहजोवाई शीला को अपने पास सोफ़े पर विठाती हुयी वोलीं, "पढ़ आई वेटी !"

"जी, आज छुट्टी समय से पहले ही हो गयी। हॉकी के टूर्नामेण्ट चल रहे हैं। उसी के कारण अंतिम तीन घण्टे की छुट्टी हो गयी।" शीला वोली।

उनकी आँखों में आँसू उमड़ आये। वह बोलीं, "आज के दिन यदि मनोहर के पिताजी होते तो फूले नहीं समाते इस सम्बन्ध को देखकर।"

कुछ देर सब मौन रहे। सहजोबाई बोलीं, "सरोज रानी! मनोहर केवल तीन वर्ष का था जब उनका स्वर्गवास होगया था। कभी देखा नहीं इसने उन्हें, परन्तु साक्षात उनकी ही प्रतिमा भेजी है भगवान् ने। इसे देख लेती हूँ तो लगता है जैसे वही सामने खड़े हैं।"

शीला चुपचाप उठकर अपने कमरे में चली गयी। उसका मन-मयूर नृत्य कर रहा था। उसका हृदय-कुसुम खिल गया था। वह प्रसन्नता के वेग में उड़ रही थी। उसने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उसकी कल्पना इस प्रकार बिना प्रयास के ही साकार हो जायगी। वह चुपचाप पलंग पर जाकर लेट गयी। उसने नेत्र बन्द किये तो देखा मनोहर उसके सामने खड़ा मुस्करा रहा था। वह धीरे से बोली, 'मुस्कराने के अलावा कुछ और भी आता है आपको?'

'आता क्यों नहीं?' मनोहर ने धीरे से कहा।

'क्या आता है, मैं पूछती हूँ?'

'शीला को प्राप्त करना।'

'चलो, हटो। तुम्हें कुछ नहीं आता। तुम एक शब्द भी नहीं बोल सकते। अभी तुम्हें बहुत कुछ सिखाना होगा।'

मनोहर मुस्कराकर बोला, 'तुम सिखाओगी शीला! छुईमुई की डाल के समान सकुचा जाने वाली शीला सिखायेगी मुझे।'

तभी शीला को अपने कमरे में किसी के पद-चापों का शब्द सुनायी दिया। वह उठकर खड़ी हुयी। उसने देखा उसकी माता सरोजरानी और सहजोबाई सामने खड़ी थीं।

"तुम यहाँ लेटी हो शीला! बहन को अपनी चित्रकारी तो दिखाओ।"

शीला अपना एलबम निकालकर ले आयी और उनको चित्र दिखाने

। जल्दी में वह भूल ही गयी कि उसमें उसने एक मनोहर का चित्र
[कर लगाया हुआ था ।
चित्रों को उलटते-पलटते वह चित्र सामने आया तो शीला का
दिल धक्क से रह गया । एलबम उसके हाथ से छूट गया ।
सरोजरानी और सहजोबाई के मुख प्रसन्नता से खिल उठे ।
सहजोबाई बोलीं, "बहुत सुन्दर चित्र बनाती हो शीला ! मनोहर का
चित्र तुमने बहुत अच्छा बनाया है । क्या मनोहर ने देखा है यह चित्र ?"
सरोजरानी हँसकर बोलीं, "मनोहर बेचारे को भला कहाँ देखने
को मिला होगा यह चित्र ? यह तो मैंने और आपने भी आज अचानक ही
देख लिया ।"
चित्र देखकर सरोज रानी और सहजोबाई शीला के कमरे से बाहर
चली गयी ।
शीला कुछ देर मौन रही । फिर मनोहर के चित्र को हाथ में लेकर
बोली,'आपने आज माता जी के सामने मुझे लज्जित कराया है ? बताओ
इसका क्या दण्ड मिलना चाहिये आपको ?'
'दण्ड जो चाहो सो दो शीला । परन्तु यह चित्र मुझे दे दो । बहुत
सुन्दर चित्र बनाया है तुमने ।'
'सच ।'
'सच कह रहा हूँ शीला !'
शीला ने आज प्रथम बार मनोहर के मुख से अपनी किसी चीज़ [illegible]
कल्पना मे प्रशसा सुनी तो वह अपने को भूल-सी गयी ।
शीला का कण्ठ-स्वर मुक्त हो उठा । वह पलग पर लेट [illegible]
गुनगुनाने लगी । मनोहर की आभा उसकी आँखो की पुतलियों में [illegible]
हुयी थी । इसी प्रकार लेटे-लेटे कितना समय निकल गया, उसे [illegible]
ही न रहा । उसका स्वप्न तब भग हुआ, जब उसने बाहर बरा[illegible]
अपने भाई नरेन्द्र और और मनोहर के जूतो का स्वर और बात[illegible]
ध्वनि सुनी ।

शीला के मुख से निकला, 'भय्या आगये। वह भी आये हैं भय्या के साथ।'

शीला उठकर पलंग पर बैठ गयी। फिर उठी और कमरे से बाहर गयी। उसने नरेन्द्र के कमरे की ओर देखा तो मनोहर सामने खड़ा था।

शीला की पलकें आंखों पर झेंप गयीं और वह मुंह दूसरी ओर करके चुपचाप दरांडे से बाहर निकल गयी।

मनोहर की माताजी दूसरे दिन अपने गाँव जाने को थीं। उन्होंने इस य में मनोहर से कोई चर्चा नहीं की। मनोहर सोचता ही रहा कि सर मिलने पर यह किसी प्रकार अपनी माताजी से इस विषय में र्चा चलायेगा, परन्तु उसमें साहस नहीं हुआ अपनी माताजी के सामने स विषय को लेकर बातें करने का।

मनोहर प्रात काल ही छात्रावास से मेजर साहब की कोठी पर आगया। उसने कोठी में प्रवेश किया तो सामने खड़ी शीला झपटकर कोठी के अन्दर चली गयी। मनोहर कुछ चकित-सा रह गया यह देख-कर। इस प्रकार उसे देखते ही उसने शीला को पहले कभी अन्दर चली जाते हुए नहीं देखा था। सकुचाते देखा था, कनखियों से अपनी ओर देखते देखा था और फिर लज्जा से सिर नीचा करते भी देखा था, परन्तु इस प्रकार अन्दर कमरे में चली जाने की यह प्रथम ही घटना थी।

मनोहर की कुछ समझ में न आया। वह थोड़ा भयभीत-सा हुआ कि कहीं उसके मनोभावों की सूचना मेजर साहब और उनकी पत्नी को तो नहीं मिल गयी। कहीं ऐसा न हुआ हो कि उन्होंने ही शीला के उसके सामने आने पर प्रतिबन्ध लगा दिया हो। मेजर साहब के कड़े स्वभाव से वह अपरिचित नहीं था। सरोज रानी के स्वभाव में कुछ नर्मी अवश्य थी परन्तु पति की आज्ञा की अवज्ञा वह कभी नहीं कर सकती थी।

मनोहर कुछ असमंजस में पड़ गया। उसके आगे बढ़ते हुए कद रुक गये।

शीला ने अपने कमरे के किवाड़ों की झिर्री से झाँक कर मनो की यह दशा देखी तो उसे समझने में एक क्षण का भी विलम्ब न

कि उसका कारण क्या था। शीला मुस्करायी और सतर्कता से मनोहर की ओर देखती रही।

उसी समय नरेन्द्र की दृष्टि मनोहर पर पड़ी तो वह वरांडे से निकलकर फाटक की ओर बढ़ा और हँसकर बोला, "मनोहर! यहाँ फाटक पर खड़े एड़ियाँ क्यों रगड़ रहे हो? क्या कुछ संकोच हो रहा है अन्दर आने में?"

मनोहर किसी विचार में डूबा-सा बोला, "नहीं नरेन्द्र भाई! पता नहीं क्यों आते-आते मन जाने कैसा हो गया। पैर कुछ रुक से रहे हैं आगे बढ़ने में।"

मनोहर ने इतना कहा ही था कि तभी सरोज रानी की दृष्टि मनोहर पर पड़ी और वह तुरन्त निकट आकर बोलीं, "तुम आगये मनोहर! हम लोग तो तुम्हारी ही प्रतीक्षा में थे। चलो, नाश्ता करलो। फिर स्टेशन चलना होगा।"

"माताजी कहाँ हैं?" मनोहर ने पूछा।

"वह पूजा कर रही हैं।"

सरोज रानी बड़े दुलार से मनोहर को अपने साथ डाइनिङ्ग-रूम में ले गयीं। उन्होंने नरेन्द्र और मनोहर को नाश्ता लाकर दिया और स्वयं उनके पास बैठ गयीं।

मनोहर ने देखा आज यह भी विचित्र-सी ही बात थी। सरोज-रानी जब भी उन्हें नाश्ता कराती थीं तो वह, नरेन्द्र और शीला तीनों को एक साथ बिठाती थीं। आज शीला वहाँ क्यों नहीं आयी?

मनोहर ने चाय पीने का प्रयास किया परन्तु वह पी नहीं सका। कुछ खाना भी चाहा परन्तु खा नहीं सका। वह रोक न सका अपने को। वह प्रश्नवाचक दृष्टि से सरोज रानी की ओर देख कर बोला, "माताजी! आज शीला को आपने हमारे साथ नाश्ता करने के लिये क्यों नहीं बिठाया?"

मनोहर का सरल सा प्रश्न सुनकर सरोजरानी का हृदय गुदगुदा

उठा। वह मुस्कराकर बोलीं, "शीला आज बहन महरोबाई के साथ नाश्ता करेगी मनोहर! कल मैंने तुम्हारी माताजी से कुछ आदान-प्रदान कर लिया है।"

मनोहर की समझ में कुछ नहीं आया। वह उसी तरह सरोजरानी के चेहरे पर देखता रहा।

सरोजरानी हँसकर बोलीं, "मनोहर! कितने भोले हो तुम? आदान-प्रदान को भी नहीं समझते। कल मैंने तुम्हें तुम्हारी माताजी से ले लिया है और तुम्हारे बदले में अपनी शीला उन्हें दे दी है। समझे! अब मैं दो बेटों वाली माँ हूँ। मेरे दो बेटे हैं, एक नरेन्द्र और दूसरे तुम।"

बात कुछ मीठी-मीठी सी तो लगी मनोहर को परन्तु समझ में कुछ नहीं आया। स्थिति में इतना परिवर्तन अवश्य हुआ कि नाश्ता जो हलक में अटक रहा था वह नीचे उतरने लगा और उसमें कुछ आनन्द भी आने लगा।

"कैसा रहा हमारा आदान-प्रदान मनोहर? मैं समझती हूँ तुम्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती। शीला को भी कोई आपत्ति नहीं है। रही बात मेरी और महरोबाई की, सो हमने तो यह आदान-प्रदान किया ही है। हमें आपत्ति होने का कोई कारण नहीं है।" सरोजरानी मुस्कराकर कह रही थीं।

तभी महरोबाई पूजा से उठकर वहाँ आ गयीं। नरेन्द्र और मनोहर को नाश्ता करते देखकर बनावटी गम्भीर वाणी में बोलीं, "बहन! आपकी यह बात हमें अच्छी नहीं लगी।"

"क्या बात बहन?" सरोजरानी ने मुस्कराकर पूछा।

"मैं पूछती हूँ कि आपने मेरी शीला के साथ यह विमाता जैसा व्यवहार क्यों किया? मनोहर और नरेन्द्र के साथ उसको नाश्ते पर क्यों नहीं बिठाया?"

सरोजरानी मुस्कराकर बोलीं, "अपने और बहन के बच्चों में कुछ तो अन्तर रहता ही है जीजी ! अपने लाल अपने ही होते हैं और बहन की बिटिया बहन की ही बिटिया होती है। परन्तु बात इस समय यह नहीं थी। शीला कहती है कि वह आपके ही साथ नाश्ता लेगी, मेरे बच्चों के साथ बैठकर नाश्ता नहीं करेगी। पता नहीं आपने उसे क्या घूँटी पिलादी है उसे एक ही दिन में कि वह मुझ से अब बातें ही नहीं करती।"

सहजोबाई बोलीं, "शीला बेटी ! आओ ! हम लोग भी नाश्ता करेंगे। हम लोग पीछे क्यों रहें ?"

शीला ने सकुचाते हुए डाइनिंग-रूम में प्रवेश किया। मनोहर ने देखा शीला अब लज्जा में सिमटकर एक गुड़िया जैसी बन गयी थी। आज वह उसे पहले से कुछ अधिक आकर्षक लगी।

सहजोबाई मनोहर की ओर से एक कुर्सी बीच में छोड़कर दूसरी कुर्सी पर बैठ गयीं। शीला को मनोहर के पास वाली कुर्सी पर बैठना पड़ा। मनोहर के इतना निकट शीला पहले कभी नहीं बैठी थी। उसका बदन रोमांचित हो उठा। उसे लग रहा था कि वह विद्युत-वेग से मनोहर की ओर खिंची जा रही थी उसे बलपूर्वक अपने को रोकना पड़ रहा था।

मनोहर की दशा भी शीला की दशा से कुछ भिन्न नहीं थी। उसने तिरछी दृष्टि से शीला की ओर देखा तो उसे शीला के गले में वह सोने की लड़ी दिखायी दी, जिसे वह अपनी स्मृति के सम्पूर्ण काल से अपनी माताजी के गले में देखता आ रहा था। उसकी दृष्टि तुरन्त अपनी माताजी के गले की ओर गयी। उसने देखा, वह लड़ी अब उनके गले में नहीं थी।

उसके पश्चात् बहुत ही सरल वातावरण उपस्थित होगया। धीरे-धीरे सभी बातें सबकी समझ में आ गयीं। सहजोबाई के प्रस्थान करने में अब अधिक समय नहीं रह गया था

सहपाठियों की हित-कामना के उपरान्त [illegible]
फिर सब लोग उन्हें ट्रेन में बैठा कर लौट गये।

ट्रेन छूट जाने पर सब लोग वापस लौटे।

समय धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया। मनोहर और शीला ने एफ. ए. पास करके बी. ए. में प्रवेश किया। बी. ए. की प्रथम वर्ष की परीक्षा में भी दोनों उत्तीर्ण हुए।

मनोहर की रुचि एन. सी. सी. में बढ़ती जा रही थी। उसकी आकांक्षा अपने पिता के ही समान भारतीय सेना में प्रविष्ट होने की थी।

मेजर साहब ने मनोहर को भारतीय सेना में प्रविष्ट होने के सह-योग प्रदान किया और उसे लेफ्टिनेण्ट-पद के लिये चुन लिया गया।

कालेज के प्रिंसिपल साहब को मनोहर के चुनाव की सूचना मिली तो उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुयी। वह बोले, "मनोहर ! तुम कालेज से दूर जा रहे हो, इसका मुझे खेद है; परन्तु साथ-साथ प्रसन्नता भी है। तुम देश-कार्य के लिये जा रहे हो जिससे देश की सुरक्षा सम्भावित है।

मुझे विश्वास है कि तुम वहाँ भी अपने कालेज के नाम को रोशन करोगे।"

मनोहर उत्साहपूर्ण स्वर में बोला, "आपके विश्वास को मनोहर किसी अवस्था में कभी ठेस नहीं [illegible] प्रिंसिपल साहब ! आपका मनोहर अपने कालेज के नाम को रौशन करेगा।"

कालेज का यह पहला विद्यार्थी था जो इस प्रकार लेफ्टिनेण्ट-पद के लिये चुना गया था।

मनोहर प्रिंसिपल साहब के कमरे से बाहर निकला तो प्रकाश उसे बाहर खड़ा मिला। प्रकाश आगे बढ़कर बोला, "मनोहर भाई ! बधाई देता हूँ आपको। मुझे अभी-अभी सूचना मिली है कि आप लेफ्टिनेण्ट-पद के लिये चुन लिये गये हैं।

क्या अपनी विदाई के इस शुभ अवसर पर भी आप मेरी पार्टी स्वीकार नहीं करेंगे ?"

मनोहर ने प्रकाश की ओर गम्भीर दृष्टि से देखा तो उसे लगा कि यह प्रकाश उस पहले प्रकाश से कुछ भिन्न था। गत दो वर्षों में उसने यह भी देखा था कि उसके जीवन में कुछ परिवर्तन आ गया था। उस परिवर्तन का क्या कारण था, यह समझने में वह असमर्थ था, परन्तु परिवर्तन स्पष्ट था क्योंकि गत दो वर्षों से वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो रहा था।

प्रकाश बोला, "भाई मनोहर ! आपका मैं जीवन भर आभारी रहूँगा ?"

"क्यों, ऐसी क्या विशेष बात की है मैंने तुम्हारे साथ?"

"तुमने क्या किया है मनोहर ! यह तुम नहीं जानते। क्या इस बीच में तुमने मेरे जीवन में कोई परिवर्तन नहीं देखा ?"

"परिवर्तन तो बहुत हुआ है प्रकाश ! परन्तु इसमें मेरा भी कोई सहयोग है यह मैं नहीं जानता। मुझे प्रसन्नता अवश्य है कि तुमने अपने जीवन का मार्ग बदल लिया। भाई नरेन्द्र को भी इससे हार्दिक संतोष है कि तुम अपनी परिक्षाओं में उत्तीर्ण होते जा रहे हो।"

"क्या सच कह रहे हो मनोहर ! क्या नरेन्द्र प्रसन्न हैं मेरी सफलता को देखकर ?"

"निःसंदेह ! उन्होंने मुझसे कई बार इस विषय को लेकर चर्चा की है।"

प्रकाश बोला, "तब मैंने भाई नरेन्द्र को भी ग़लत समझा और तुम्हें तो मैं आरम्भ में समझ ही नहीं पाया था मनोहर ! तुम्हें याद होगा एक दिन तुमने मुझसे कहा था, 'प्रकाश ! जिस बात का उत्तर तुम मुझसे चाहते हो उसका सही उत्तर तुम्हें तुम्हारा मन देगा। पहले अपने मन की स्थिति को ठीक करो, तब किसी पार्टी का आयोजन करना।' इस बीच में तुमने देखा होगा कि मैंने अपनी मनःस्थिति को

ठीक करने का भरसक प्रयास किया है। तुम यह नहीं कह सकते कि उसमें मुझे किंचित मात्र भी सफलता नही मिली।"

"मिली क्यों नही प्रकाश ! तुम्हें असाधारण सफलता प्राप्त हुयी है। तुम्हारी इस सफलता में मेरा इतना बड़ा योग है, यह जानकर मेरी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा।" मनोहर बोला।

"तो क्या अब भी तुम्हें मेरी पार्टी को स्वीकार करने मे कोई संकोच है मनोहर ?"

मनोहर तनिक सोचकर बोला, "मैं तुम्हारी पार्टी में अवश्य सम्मिलित हूँगा प्रकाश ! उसका आयोजन तुम कब और कहाँ कर रहे हो ?"

"पार्टी का आयोजन मैं अपनी कोठी पर करूँगा मनोहर भाई ! भाई नरेन्द्र को भी निमंत्रित करूँगा उसमे और बहन शीला को भी। पिताजी ने मुझे स्वीकृति प्रदान करदी है इसके लिये।"

दूसरे दिन डिप्टी-कमिश्नर केशवचन्द्रजी की कोठी पर पार्टी का आयोजन हुआ। मनोहर, नरेन्द्र और शीला ने उसमें भाग लिया। प्रतिमा, ललित और मनोरम के अतिरिक्त उनके अन्य बहुत से सहपाठी उसमें सम्मिलित हुए। दिनेश भी आया।

शानदार दावत थी। अभी दावत आरम्भ भी नहीं हुयी थी कि सब ने आश्चर्य के साथ देखा, कॉलेज के प्रिंसिपल साहब, मेजर जनरल नाहरसिंह और डिप्टी-कमिश्नर केशवचन्द्रजी भी वहाँ आ पहुँचे।

उन्हें आते देखकर सब लोग खड़े हो गये। सभी ने उन्हें सादर प्रणाम किया।

पार्टी आरम्भ होने से पूर्व प्रिंसिपल साहब ने मनोहर की प्रशंसा में दो शब्द कहे। वह बोले,"इस कॉलेज में आज तक बहुत से बच्चे आये और गये। योग्य में भी एक-से-एक विद्यार्थी मैंने देखा है। खेल-कूद में भी कुछ विद्यार्थियों ने ख्याति प्राप्त की परन्तु शिक्षा और खेल-कूद का जो सामंजस्य मुझे मनोहर में देखने को मिला वह अद्वितीय है।"

प्रिंसिपल साहव के पश्चात् प्रकाश अपनी मेज़ के पास खड़ा होकर वोला,

"आदरणीय गुरुजनो और सम्मानित अतिथिगण !

आज की यह पार्टी भाई मनोहर को मेरी ओर से इसलिये दी जा रही है कि इनका मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण योगदान है। आपने सुना होगा कि गंदी मछली सारे तालाव को गंदा कर देती है। यह वात सभी कहते आये हैं और मैंने इसे प्रत्यक्ष भी देखा है। माननीय प्रिंसिपल साहव इसके साक्षी हैं। वह गंदी मछली कोई अन्य नहीं, मैं स्वयं रहा हूँ, जिसने सम्पूर्ण कॉलेज के वातावरण को अपनी गंदगी से भर दिया था।"

प्रकाश की वात सुनकर सव लोग स्तब्ध रह गये।

प्रकाश कुछ ठहरकर वोला, "परन्तु एक ऐसी भी मछलियाँ होती हैं जो सारे तालाव की गन्दगी को सोखकर उसके जल को स्वच्छ और निर्मल वना देती हैं। भाई मनोहर को मैंने ऐसी ही मछली के रुप में पाया। कॉलेज खुलने पर जव मेरी इनसे तीन वर्ष पूर्व भेंट हुयी तो मैंने इन्हें मूर्ख और असभ्य लड़का समझकर इनका तिरस्कार किया। मैं उस समय अपने आपको गुण्डों का सरदार समझता था। उसी दिन मैंने कॉलेज से घर जाती हुई वहन शीला को छेड़ा और अपने जूते से इनकी चप्पल दवाकर तोड़ दी।"

प्रकाश के मुख से इस घटना का वर्णन सुनअर शीला और नरेन्द्र के चेहरे फ़क्क पड़गये, क्योंकि यह वात मेजर साहव के सामने कही जारही थी और उन्हें उन्होंने इसके विषय में सूचित नहीं किया था।

मेजर साहव के भी यह सुनकर कान खड़े हुए और वह वड़ ध्यान से सुनने लगे।

प्रकाश वोला, " उसी समय भाई नरेन्द्र घटनास्थल पर आगये। इनका चेहरा क्रोध से लाल होगया और इन्होंने छटते ही मेरे गाल पर एक करारा तमाचा रसीद कर दिया। उसके लगते ही मैं तिलमिला उठा और अपने साथी दिनेश के साथ भाई नरेन्द्र पर टूट पड़ा। हम दोनों ने

रेन्द्र को पकड लिया और भूमि पर पटकने को ही थे कि तभी भाई
मनोहर वहाँ आपहुँचे। इन्होंने अपने एक हाथ में मेरी कलाई और
दूसरे में दिनेश की पकड़कर जो झटका दिया तो नरेन्द्र भाई मुक्त हो
गये और हम दोनों इनके चंगुल में फँस गये।

मनोहर का अपनी कलाई को पकड़कर वह झटका देना मुझे आज
भी स्मरण है। मुझे लगा कि जैसे कलाई की हड्डी जवाब देगयी।

अन्त में हमने इनसे क्षमा-याचना करके मुक्ति प्राप्त की।"

सब लोग बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

प्रकाश बोला, "इस घटना से मुझे गहरी ठेस लगी और मैंने अपने
को अपमानित अनुभव किया। मेरा हृदय नरेन्द्र और मनोहर के
प्रति विद्वेष से भर गया। फिर मैं डेढ़ वर्ष तक निरन्तर मनोहर को
अपने छल से जीतकर नरेन्द्र से और इनसे बदला लेने का प्रयास करता
रहा, परन्तु सफलता न मिली। मेरे मन से यह भ्रम भी दूर होगया कि
मनोहर सीधा-सादा बुद्धू लड़का है। इनका आतंक मुझ पर इतना
छाया कि उस घटना के पश्चात् फिर कभी किसी लडका को कॉलिज
छेडने या कोई बेहूदा हरकत करने का मुझमे साहस न हुआ। मुझे ह
समय मनोहर से भयभीत रहना पडा।

अन्त मे एक दिन मैंने मन से इनके सामने अपने मन के अन्दर-
अन्दर इनसे हार मानली और अपना मार्ग बदलने का निश्चय
लिया। बस वह दिन है और आज का दिन है कि मैंने उन सभी
का साथ छोड दिया जो मुझे गलत मार्ग पर ले जाते थे। मैंने
लिखने की ओर ध्यान लगाया और परीक्षा मे सफलता प्राप्त की

मैं अपने जीवन मे यह परिवर्तन लाने वाले भाई मनोह
आजीवन ऋणी रहूँगा।"

प्रकाश की यह बात सुनकर डिप्टी कमिश्नर केशवचन्द्रजी ने
मनोहर का आभार माना। वह बोले, "बेटा मनोहर! आज की
... उद्घाटित हुआ है, उसका मेरे जीवन में बहुत

पूर्ण स्थान है। अपने बेटे प्रकाश को सही मार्ग पर लाने के लिये मैंने भरसक प्रयास किया था, परन्तु सफलता प्राप्त न कर सका। तुमने प्रकाश को सही दिशा देकर मेरे जीवन में असीम शान्ति का समावेश किया मैं हृदय से तुम्हारा आभारी हूँ।"

पार्टी की कार्यवाही आरम्भ हुयी। शानदार दावत रही और फिर सब लोगों ने प्रस्थान किया।

संध्या को मेजर साहब कोठी पर पहुँचे तो उन्होंने सरोज रानी से कहा, "सरोज ! क्या तुमसे शीला और नरेन्द्र ने कभी प्रकाश द्वारा शीला को छेड़ने की कोई घटना कही थी ?"

"कही थी", सरोज रानी मुस्कराकर बोलीं।

"परन्तु तुमने हमसे कभी नहीं कहा।"

"कह देती तो आप रिवाल्वर लेकर केशवचन्द्रजी की कोठी पर न पहुंच गये होते।"

सरोजरानी की बात सुनकर मेजर साहब मुस्करा दिये।

लेफ्टीनेण्ट मनोहर को सेना में प्रवेश किये अभी अधिक समय नहीं
ा था कि देश पर आपत्ति के बादल मँडरा उठे। चीनी नेता मित्रता
ढोंग रचते-रचते अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गये। वे भारत के
हानतम शत्रु बन गये।

तिब्बत की भूमि को पदाक्रान्त करके उन्हें संतोष न हुआ। उनकी
कुदृष्टि भारत की सीमा पर पड़ी और धीरे-धीरे उन्होंने भारत में घुस-
पैठ आरम्भ कर दी।

भारत के विदेश-मंत्रालय ने चीन को बहुत से विरोध-पत्र भेजे
परन्तु उनकी गतिविधियाँ बराबर बढ़ती गयीं।

संध्या को मेजर साहब कोठी पर लौटे तो वह बहुत चिंतित
दिखायी दे रहे थे।

सरोजरानी ने पूछा, "आप आज इतने चिंतित क्यों हैं नरेन्द्र के
पिताजी ?"

"चिंतित केवल मैं ही नहीं हूँ सरोज रानी। लगता है जैसे देश
पर कोई महान् संकट आने वाला है।"

"क्या आपके विचार से चीन भारत पर आक्रमण करेगा ?"

"इस समय तो ऐसा ही प्रतीत हो रहा है सरोज। उत्तरी सीमा
पर चीन की गतिविधियाँ आवश्यकता से अधिक बढ़ती जा रही हैं
ऐसी स्थिति में आँखें बन्द करके नहीं बैठा जा सकता। समय रहते य
इन्हें न रोका गया तो बहुत घातक परिणाम निकलने की सम्भावन
होगी।"

"तब क्या युद्ध अनिवार्य है ?"

"मुझे यही प्रतीत हो रहा है।" गम्भीर वाणी में मेजर साहव वोले।

उसी समय कार्यालय से मेजर साहव के पास टेलीफ़ोन आया। वह वोले, "सरोज रानी ! मैं कार्यालय जा रहा हूँ। लगता है जैसे शीला के विवाह की तिथि स्थगित करनी होगी।"

मेजर साहव कार्यालय चले गये। सरोजरानी अकेली वैठी रह गयीं। उनका मन चिंताग्रस्त हो उठा। साहस की उनमें कमी नहीं थी परन्तु शुभ कार्य में विघ्न पैदा हो जाने से उनके मस्तिष्क में चिंता हुयी। वह मन में कह रही थीं, 'विधाता ! यह तूने क्या किया ?'

सरोज रानी वहाँ से उठकर नरेन्द्र के कमरे में आयीं, जहाँ नरेन्द्र, शीला और मनोहर वैठे थे। रेडियो पर समाचार आने वाले थे।

मनोहर वोला, "माताजी ! ये चीनी मक्कारी करने से चूकने वाले प्रतीत नहीं होते। ये निश्चत रूप से आक्रमण करेंगे। इन लोगों ने अपनी सैनिक शक्ति वहुत वढ़ा ली है। सैनिक शक्ति शासन-सत्ता की आँखें वन्द कर देती है। गत महायुद्ध में हिटलर ने भी ऐसे ही शक्ति का संगठन किया था। परन्तु अन्त अच्छा नहीं हुआ उसका। अपने पड़ोसी राष्ट्रों से अपने को शक्तिशाली समझकर जूझना ठीक वैसा ही है जैसा मदांघ हाथी खाई की पाल पर खड़ा झूंडो को रगड़ता हुआ खाई में जा गिरता है। चीन की ठीक वही दशा है।" कहते-कहते मनोहर के भुज-दण्ड फड़क उठे और सीने में उभार आगया।

नरेन्द्र राजनीति का विद्यार्थी था और इस दिशा में अपना विशेप मत रखता था। वह वोला, "भाई मनोहर ! चीन ने भारत के साथ भयंकर विश्वासघात किया है। उसने मित्रता का आड़ में शिकार खेला है और अँगुली पकड़ते-पकड़ते पहुँचा पकड़ा है। चीन के नेता चीनी जनता को विनाश की ओर लेजा रहे हैं। उन्होंने चीन को ही नहीं इस समय एशिया के सभी राष्ट्रों को विनाश के मुख पर लाकर खड़ा कर दिया है।"

नरेन्द्र की बात सुनकर मनोहर मुस्कराकर बोला, "भाई नरेन्द्र ! जिसे आप विश्वासघात कह रहे हैं, उसे अपनी नासमझी भी तो कहा जा सकता है। जिस राष्ट्र के नेता अपने मित्र और शत्रु की पहचान में भी भूल करेंगे उस राष्ट्र की क्या दशा होगी ? चीनी नेता अपना विनाश करें या अन्य किसी का, परन्तु वे भारत का विनाश करने योग्य क्यों बन सकें ? राष्ट्र की सुरक्षा का सुदृढ़ होना राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा के लिये प्रथम आवश्यकता है। कितनी शताब्दियों के पश्चात् देश स्वतंत्र हुआ है। इस स्वतन्त्रता को किसी भी मूल्य पर हाथ से नहीं जाने दिया जा सकता।"

मनोहर के इस महान् निश्चय को सुनकर नरेन्द्र, सरोज रानी और शीला ने बड़े ध्यान से मनोहर के चेहरे पर देखा। मनोहर की आँखों में तेज दमदमा रहा था। उसका गोरा चेहरा गुलाबी हो उठा था। उसके नासापुटों से श्वास तीव्र गति के साथ प्रवाहित होने लगा।

"नरेन्द्र भैया ! मुझे लगता है जैसे चीनी सेना हमारे सामने खड़ी है। वह हाथी के समान खड़ी है परन्तु उसने अभी भारतीय घोड़ों की टापें नहीं देखीं। इस मदांध हाथी की खोपड़ी चूर्ण करनी ही होगी। इसे एक बार हिमालय की खाई में धकेलना होगा। यदि इसे बढ़ने का अवसर दिया गया तो यह हमें कुचल डालेगा," मनोहर बोला। तभी रेडियो पर समाचार आया कि चीनी सेना ने भारी पैमाने पर भारत पर आक्रमण कर दिया।

मनोहर सोफे पर बैठा न रह सका। वह उठकर खड़ा हो गया। उसकी त्योरी चढ़ गयी। वह अपने दोनों हाथों की मुट्ठियाँ भींचता हुआ कमरे में इधर-से-उधर घूमने लगा। उसका सिर चकरा-सा गया कुछ। उसका जी चाहा कि वह हवाई जहाज पर बैठकर तुरन्त मोर्चे पर पहुँच जावे, अपनी रायफ़ल की गोलियाँ दागे और चीनीयों को मैदान में बिछाता चला जाय।

शीला वहाँ से उठकर अपने कमरे में चली गयी। उसका मन क्षुब्ध

भद्विग्न-सा हो उठा। मनोहर की दृष्टि कमरे से जाती हुई शीला पर पड़ी तो उसके हृदय पर कुछ ठेस-सी लगी। उसे लगा कि जैसे कोई पुजारिन फूलों का हार लेकर मंदिर में देवता की पूजा के लिये जा रही थी। मार्ग में किसी अंधे भैंसे ने आकर उसके पूजा के हारों को छिन्न-भिन्न करके उसे हताहत करना चाहा। शीला की दशा ठीक उस पुजारिन की जैसी थी।

मनोहर में आज तक कभी शीला से एकांत में जाकर बातें करने का साहस न हुआ था। उसने कितनी ही बार चाहा और दृढ़ निश्चय किया कि शीला से दो बातें करे, परन्तु कभी साहस न कर सका। शीला के सामने आकर उसकी वाणी कुछ ऐसी मौन हो जाती थी कि शब्द एक भी कंठ से बाहर नहीं आता था।

आज अचानक शीला को वहां से उठते देखकर मनोहर अपने को न रोक सका। वह शीला के पीछे-पीछे उसके कमरे में जा पहुंचा और बोला, "शीला ! तुम्हारे हृदय पर चीनी आक्रमण के समाचार ने भीषण आघात किया है, तुम्हारी आशाओं पर तुषारापात हुआ है। कष्ट मुझे भी कम नहीं हुआ शीला ! जिस कल्पना को तीन-चार वर्ष से अपनी आशा की डाली में पुष्पित और पल्लवित होने का मैं स्वप्न देख रहा था उसे मेरी दृष्टि के सामने से भवितव्यता ने एक ओर हटाकर नर-मुण्डों की होली का रङ्ग-मंच प्रस्तुत कर दिया है। जिस दृष्टि से मैं पूजा-नृत्य देखने को उद्यत था उससे मुझे अब ताण्डव-नृत्य देखना होगा शीला ! भारत माता पर आया हुआ संकट प्राणों के मूल्य पर भी सहन नहीं किया जा सकता।"

शीला ने श्रद्धापूर्ण दृष्टि से मनोहर की ओर देखा और आंखों में उभर आने वाले आंसुओं को साड़ी के पल्ले से पोंछ कर बोली, "मुझे इसकी चिंता नहीं कि विधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखकर भेजा है। खेद इस बात का है कि पूजा पूर्ण होने से पूर्व ही यह बवण्डर उठ खड़ा

। मैं चाहती थी कि एक वार आपके चरणों में अपने [illegible]
न को अर्पित कर देती । फिर जो होना वह होता रहता ।"

मनोहर अनायास ही आगे बढ़ गया । शीला के दोनों हाथ अपने
थों में लेकर बोला, "शीला ! तुम्हें मेरे हृदय-मंदिर से बाहर कोई
ही ले जा सकता ? तुम इस हृदय की आराध्य-देवी हो । तुम्हारी हा
प्रेरणा मेरे सामने शत्रु के विनाश का मार्ग उन्मुक्त करेगी । तुम्हारी
जो छवि मेरी आँखों में बस गयी है, वही युद्ध-भूमि के अंधकारपूर्ण
खण्ड में मेरा मार्ग-दर्शन करेगी ।"

शीला को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि क्या यह वही
मनोहर बोल रहा था, जिसका कभी उसके सामने एक शब्द बोलने
का भी साहस नहीं होता था । उसने मनोहर की आँखों में झाँक कर
देखा तो लगा कि वह हिमालय पर जाने वाला वीर, स्वयं हिमालय
के समान खड़ा था, कितना विशाल, इतना बड़ा आघात सहकर भी
कितना स्थिर, कितना गम्भीर ।

शीला युगल कर जोड़कर नत-मस्तक होती हुयी बोली, "देश-रक्षा
के महान् कार्य में शीला कभी बाधा स्वरूप खड़ी नहीं होगी । यह माता
सरोजरानी की सन्तान है, जिसने सर्वदा ही युद्ध-क्षेत्र में जाते हुए
पिताजी के मस्तक पर अपने रक्त से तिलक किया है । आप जहाँ भी
रहेंगे, मेरा स्नेह-बन्धन आपसे बँधा रहेगा ।"

मनोहर को भी विश्वास न हुआ कि क्या सचमुच यह वही
लाजवन्ती शीला थी, जिसकी दृष्टि उस पर पड़ने पर छुई-मुई की तरह
मुरझा जाने वाली शीला थी, जो उसके सामने सदा शर्म के मा[illegible]
निश्वास छोड़ रही थी । आज उसका चेहरा, लज्जा से नहीं, [illegible]
उत्तेजना से लाल हो उठा था ।

शीला और मनोहर एक-दूसरे की ओर देख रहे थे । मनोहर [illegible]
हाथ अनायास ही ऊपर उठकर शीला के दोनों कंधों पर जा टिके । [illegible]
बोला, "शीला ! तुम्हारी स्मृति मेरा बल होगी और तुम्हारा [illegible]

आँखों की ज्योति। तुम्हारा धैर्य मेरी वीरता होगी और तुम्हारा प्रेम मेरी कर्त्तव्य-निष्ठा। मुझे विश्वास है कि मैं शत्रु पर विजय प्राप्त करके शीघ्र लौटूँगा।"

शीला और मनोहर कमरे से बाहर निकले तो उनके चेहरों पर भय या खेद का कोई चिन्ह नहीं था। माता सरोजरानी ने उनकी ओर देखा तो वह मधुर वाणी में बोलीं, "मनोहर! तुम जैसा ही पुत्र पाकर माता माता कहलाती है। सहजोबाई ने तुम जैसे साहसी वीर पुत्र को जन्म देकर राष्ट्र पर महान् उपकार किया है।"

तभी मेजर साहब की जीप आकर कोठी के पोर्टिको में रुकी। सब लोग बाहर निकल आये। मेजर साहब सबके साथ अन्दर ड्राइङ्ग-रूम में गये।

मेजर साहब सोफ़े पर बैठते हुए बोले, "मनोहर! तुम्हारा अनुमान ठीक निकला। चीनी नेता अपनी नीचता पर उतरकर ही रहे। मुझे आज ही नेफ़ा-क्षेत्र में जाना है।"

यह सुनकर घर का वातावरण स्तब्ध हो उठा। सरोजरानी एक क्षण के लिये तो कुछ विचार-निमग्न सी रहीं और फिर तुरन्त अपने कमरे में चली गयीं।

सरोजरानी ने अपने कमरे में जाकर नयी साड़ी पहनी। बक्स से निकालकर अपने सब आभूषण पहने। उन्होंने एक चाँदी के थाल में थोड़ी हल्दी और चावल रखे। फिर थाल लेकर वह उस कमरे में आयीं जहाँ सब लोग बैठे थे।

सरोजरानी को देखकर मेजर साहब मुस्कराकर बोले, "तुम आगयीं सरोज रानी!"

सरोजरानी ने मेजर साहब के मस्तक पर तिलक किया। मनोहर ने देखा माता स्वरूपरानी के अँगूठे से रक्त बह रहा था। उन्होंने उसी अँगूठे से अपने पति के मस्तक पर तिलक करके पूजा की। थाली उनके सामने रखी और उनके चरण छुए।

मेजर साहब बोले, "मुझे तुरन्त जाना है सुरोज रानी !" वह मनोहर की ओर देखकर बोले, "मनोहर ! मैंने तुम्हें दिल्ली-कार्यालय में रखने का प्रस्ताव रखा था, परन्तु स्थिति कुछ ऐसी बन गयी है कि सम्भवतः तुम्हें भी कल मोर्चे के लिये प्रस्थान करना पड़ेगा।"

"मैं युद्ध में जाने के लिये तैयार बैठा हूँ पिताजी !-मेरा मन चाहता है कि इसी समय मोर्चे पर पहुँच जाऊँ।"

मेजर साहब मुस्कराकर बोले, "तुम्हारे साहस से मैं अपरिचित नहीं हूँ मनोहर ! तुम्हें शीघ्र ही अपनी वीरता और धीरता दिखाने का अवसर मिलेगा। तुम्हें कल सेला-चौकी की ओर प्रस्थान करना होगा। सेला में हमारी बड़ी चौकी है। उससे आगे चीनी आक्रमणकारियों को किसी दशा में नहीं बढ़ने दिया जायगा।"

मेजर साहब के प्रस्थान करने का समय हो चुका था। तभी कार्यालय से एक जीप गाड़ी आ गयी। उस पर उनका सामान रख दिया गया। फिर सब लोग एरोड्रम के लिये चल दिये।

निश्चित समय पर हवाई जहाज मेजर साहब तथा अन्य दो अधिकारियों को लेकर आकाश में उड़ गया। कुछ क्षण तक सब लोग मौन खड़े रहे। फिर जीप में बैठकर कोठी पर लौट आये।

मनोहर बोला, "माताजी ! अब मुझे आज्ञा दें तो मैं भी विदा लूँ।" मनोहर अपनी कोठी में अलग रह रहा था। गङ्गोबाई भी उसके ही पास रहती थी, परन्तु इस समय वह वहाँ नहीं थी। वह अपने भाई को मनोहर की शादी में सम्मिलित होने का निमंत्रण देने प्रताप गयी हुयी थीं।

सरोजरानी बोलीं, "बेटा मनोहर ! आज यहीं रहो। वहाँ भी कोई है नहीं, जो जाना आवश्यक हो। इस समय इतनी रात को वहाँ जाकर क्या होगा ?"

"हाँ, भाई मनोहर ? आज यहीं रहो। पिताजी के चले जाने से घर भी कुछ रिक्त-सा हो गया है।"

मनोहर ने उनकी बात मान ली। उस दिन रात्रि में किसी को नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन मनोहर को प्रस्थान करना था। कार्यालय पहुँचते ही उसे सेला-चौकी पर जाने का आदेश मिला गया। वह तुरन्त घर वापस लौट आया। पहले उसने अपने घर जाकर अपना आवश्यक सामान तैयार किया और फिर वहाँ से मेजर साहब की कोठी पर पहुँचा।

कोठी पर सब लोग मनोहर की प्रतीक्षा में थे। शीला भी उस दिन कॉलेज नहीं गयी।

मनोहर की दृष्टि शीला पर गयी तो वह सीधा उसी के कमरे में चला गया। सरोजरानी उसे अनदेखा करके नरेन्द्र के कमरे में चली गयीं।

मनोहर कमरे के द्वार पर खड़ा होकर धीरे से बोला, "शीला!"

शीला ने घूमकर देखा, मनोहर द्वार पर खड़ा था।

मनोहर आगे बढ़ गया। शीला ने आरती का थाल सँजोया हुआ था। वह थाल लेकर मनोहर के सामने आयी। शीला ने मनोहर के मस्तक पर तिलक किया।

मनोहर शीला का अँगूठा पकड़कर बोला, "शीला! यह तुमने क्या किया? तुम्हारे अँगूठे से रक्त बह रहा है।"

"आप तो रक्त की होली खेलने जा रहे हैं।" केवल इतने ही शब्द शीला के कण्ठ से निकले।

"जा रहा हूँ शीला! और होली भी वह खेलूँगा जिसे चीनी जान सकें कि भारतीय सैनिक कैसी होली खेलते हैं।"

"मुझे आपसे यही आशा है।"

मनोहर के पास और अधिक ठहरने का समय नहीं था। उसे तुरन्त वापस जाना था। उसने पूछा, "माताजी कहाँ हैं शीला! उनकी चरण-धूलि लेकर युद्ध-क्षेत्र के लिये प्रस्थान करूँगा।"

मनोहर शीला के कमरे से बाहर निकला तो देखा नरेन्द्र और
जरानी उधर ही आ रहे थे। मनोहर ने आगे बढ़कर सरोजरानी
चरण छुये।

सरोजरानी मनोहर को आशीर्वाद देकर बोली, "क्या तुम्हें आज
ही जाना है बेटा मनोहर ?"

"आज नहीं माताजी ! अभी ! मैं केवल आपके दर्शन करने
आया हूँ। माताजी प्रयाग से इसी सप्ताह लौटेंगी। भाई नरेन्द्र को
भेजकर उन्हें स्थिति का ज्ञान करा दीजिये।"

"नरेन्द्र को भेजकर क्यों बेटा ! मैं स्वयं जाऊँगी उनके पास और
आग्रह करूँगी कि वह तुम लोगों के लौटने तक यहीं रहें। तुम्हें बहन
की ओर से किसी प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।
वह अकेली वहाँ रहकर क्या करेंगी ?"

विलम्ब करने का समय नहीं था। मनोहर ने सबसे विदा ली।
नरेन्द्र बोला, "मैं तुम्हें गाडी पर ले चलता हूँ मनोहर ! चलो, बैठो
गाड़ी पर।"

मनोहर गाडी पर जाकर बैठ गया। उसने एक बार फिर सरोज
रानी और शीला की ओर हाथ जोड़कर नमस्कार किया। शीला ने
हाथ जोड़कर उत्तर दिया। सरोजरानी ने अपना आशीर्वाद का ह
ऊपर उठा दिया। गाडी चल पडी।

मनोहर को लेकर नरेन्द्र पहले उसके घर गया। वहाँ से उ
सामान गाड़ी पर रखा और फिर कैम्प में गया। वहाँ बहुत से
यात्रा की तैयारी कर रहे थे। कुछ लोग ट्रकों पर सवार होकर
पहुँच चुके थे।

नरेन्द्र बोला, "चलिये, आपको स्टेशन छोड़ आऊँ।"

"अब तुम कष्ट न करो नरेन्द्र ! मैं यहाँ से अपने अन्य स
... स्टेशन चला जाऊँगा। तुम जाओ। माताजी से मेरा प्रण

और ....।" कहता-कहता वह रुक गया। शीला का नाम नरेन्द्र के सामने उच्चारण न कर सका।

"मैं सबको उचित समाचार दे दूँगा मनोहर! पत्र लिखना न भूलना। हम सब तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में रहेंगे। तुम्हारा समाचार हमें मिलता रहना चाहिये।"

"अवश्य लिखूँगा भाई नरेन्द्र!"

मनोहर नरेन्द्र को विदा करके अपने साथियों की ओर चल दिया।

चीनी आक्रमण का समाचार देश के वायु-मण्डल मे भर गया । सम्पूर्ण राष्ट्र अपने नेता के आह्वान पर आपत्ति का सामना करने के लिये कटिबद्ध हो गया । भारत की रक्षा के लिये भारत के बच्चे-बच्चे का खून उबाल खा गया । राष्ट्र संकट का सामना करने के लिये दृढ़-प्रतिज्ञ था ।

सहजोबाई को आक्रमण की सूचना मिली तो उनका माथा ठनका । उन्हें मनोहर की स्मृति हो आयी । वह उसी दिन प्रयाग से चल पडी । अब वह एक क्षण के लिये भी वहाँ नही ठहर सकती थी । वह मनोहर के विषय मे तरह-तरह की बातें सोच रही थी । वह सोच रही थी कि क्या मनोहर को भी मोर्चे पर जाना होगा ?

यही सोचती हुयी वह ट्रेन पर सवार हुईं । उनके भाई उन्हें ट्रेन पर सवार कराकर घर लौट गये । मार्ग में उनकी एक क्षण के लिये भी आँखें नही झँपी । उनकी आँखो के सामने मनोहर खड़ा था ।

उनके मन मे आया कि कही वह चला न गया हो मोर्चे पर । यह विचार मन मे आते ही उनका मन कुछ उद्विग्न-सा होउठा । वह उठकर सीट पर बैठ गयी और खिडकी से बाहर झाँकने लगी ।

जिस गाडी से सहजोबाई जा रही थी, वह एक स्टेशन पर रुकी और पर्याप्त समय तक वहीं खड़ी रही । गाड़ी के रुकने का कारण यह था कि एक सेना की विशेष ट्रेन आ रही थी ।

कुछ देर पश्चात् सेना की विशेष ट्रेन आयी और सटा[illegible] करती हुयी उनकी ट्रेन के बराबर से निकल गयी । सहजोबाई इ[illegible] तीव्र गति से जाने वाली ट्रेन को केवल बाहर से ही देख सकीं । उ[illegible] मन ने कहा, 'कही मेरा मनोहर इस ट्रेन से न जा रहा हो ।'

सेना की विशेष ट्रेन के निकल जाने पर उनकी गाड़ी का सिगनल हुआ और गार्ड ने सीटी दी। ट्रेन चल पड़ी। सहजोबाई फिर अपनी सीट पर लेट गयीं।

प्रातःकाल आठ बजे गाड़ी दिल्ली जंकशन पर आयी। सहजोबाई ने कुली को पुकारा, सामान प्लेटफार्म पर उतरवाया और स्टेशन से बाहर आयीं। टैक्सी लेकर वह अपने घर पहुँची तो घर का ताला बन्द था। उन्होंने सोचा, सम्भवतः मनोहर मेजर साहब की कोठी पर चला गया होगा। उसे उनके आज यहाँ पहुँचने की सूचना नहीं थी।

सहजोबाई ने निकट के एक स्थान से मेजर साहब के यहाँ फ़ोन किया। फ़ोन पर सरोजरानी बोलीं, "ठहरिये बहन ! मैं अभी आपके पास पहुँच रही हूँ।"

सहजोबाई की समझ में कुछ न आया। वह सोचने लगीं, 'यदि मनोहर वहाँ है तो बोला क्यों नहीं ?'

सरोजरानी ने नरेन्द्र को पुकारा और शीला से बोलीं, "बेटी ! बहन के लिये नाश्ते का प्रबन्ध करो। हम अभी उन्हें अपने साथ लेकर आते हैं।"

सरोजरानी और नरेन्द्र जीप गाड़ी से तुरन्त मनोहर के मकान पर पहुँच गये। घर की चाबी सरोजरानी के पास था। उन्होंने ताला खोला और सहजोबाई का सामान अन्दर रखाकर बोलीं, "यहाँ अकेली क्या करियेगा बहन ! कोठी पर चलिये।"

सहजोबाई ने पूछा, "क्या मनोहर नहीं है वहाँ ?"

"आप गाड़ी पर बैठिये, अभी सब बताऊँगी।"

यह सुनकर सहजोबाई का दिल धक्क-धक्क करने लगा। वह गाड़ी पर बैठ गयीं। नरेन्द्र ने गाड़ी स्टार्ट की।

सहजोबाई तनिक सँभलकर बोलीं, "ज्ञात होता है मनोहर मोर्चे पर चला गया। आक्रमण की सूचना प्राप्त होने पर उसका यहाँ बना

रहना सम्भव नहीं था । मैं चल अवश्य पड़ी थी प्रयाग से, परन्तु मन मेरा यही कह रहा था कि मनोहर वहाँ नहीं मिलेगा ।"

"नरेन्द्र के पिताजी परसों रात्रि को ही प्रस्थान कर गये थे। मनोहर कल गया है। वह चाहते थे कि मनोहर दिल्ली-कार्यालय में रहे, परन्तु सम्भव न हो सका ।"

सहजोबाई मुस्कराकर बोलीं, "इसे वह स्वीकार भी न करता सरोज बहन ! वह मोर्चे पर जाने से रुकने वाला नहीं था ।"

गाड़ी कोठी के द्वार पर पहुँची तो शीला बरांडे में खड़ी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी । सहजोबाई ने आगे बढ़कर शीला को अपनी छाती से लगा लिया ।

माता का प्रेम प्राप्त कर शीला की आँखें डबडबा आयी और आँसू बरस पड़े ।

सहजोबाई शीला को धैर्य बँधाती हुयी बोली, "रो नहीं बेटी ! यह रोने का समय नहीं है। राष्ट्र पर महान् सकट है। इससे राष्ट्र को उबारने के लिये राष्ट्र की संतानों को बलिदान देना होगा। मनोहर उसी के लिये गया है।"

शीला आँखें पोंछकर बोली, "मैं रो नहीं रही हूँ माताजी ! आपको देखकर अनायास ही आँखो मे न जाने क्यों आँसू उभर आये । मैंने बहुत रोकने का प्रयास किया परन्तु रोक न सकी ।"

शीला ने सहजोबाई के नाश्ते का प्रबन्ध किया हुआ था । जब तक सहजोबाई सरोजरानी से अन्य बातें करती रहीं तब तक शीला ने उसे मेज पर लगा दिया। फिर उनके निकट आकर बोली, "माताजी ! आप नाश्ता करके थोड़ा विश्राम कर लें। रात भर की यात्रा से आप थक गयी होंगी ।"

सहजोबाई शीला और सरोजरानी के साथ उठकर चल दी और कुल्ला-मंजन करके नाश्ता किया ।

सहजोवाई वोलीं, "तो मेजर साहव परसों ही प्रस्थान कर गये थे ?"

"जी हाँ, वह तो इस सूचना के पश्चात् दो घण्टे भी यहाँ नहीं ठहर सके। उसी समय वायुयान से नेफ़ा चले गये।" सरोज रानी वोलीं।

सहजोबाई कुछ थक गयी थीं। रात्रि में वह एक क्षण के लिये भी सो नही पायी थीं। कुछ नाश्ता कर लेने के पश्चात् सरोजरानी वोलीं, "चलो वहन ! अव थोड़ा विश्राम कर लो। गाड़ी में सो नहीं पायी होगी।"

सहजोवाई सरोजरानी के साथ उनके कमरे में चली गयीं। पलंग पर लेटकर उन्हें थोड़ी नींद आगयी।

शीला अपने कमरे में चली गयी। वह एकांत में वैठी मनोहर के विषय में सोचने लगी। वह सोच रही थी कि उनका मिलन कैसा विचित्र हुआ। अभी तो ठीक से मिल भी न पाये थे कि भवितव्यता ने दोनों को खींचकर एक-दूसरे से पृथक कर दिया।

शीला को अचानक हिमालय की ऊँचाई और उसके भयंकर जंगलों का ध्यान हो आया। चीनियों के आक्रमण के विषय में उसने सोचा। हताहत सैनिकों की स्थिति उसके सामने आयी। गोले-गोलियों की आवाजें उसके कानों में गूंजी। वमों का विस्फोट सुनायी दिया। इस सव के पश्चात् उसने देखा मनोहर को जो चीनी सैनिकों को अपनी रायफल की गोलियों से भूमि पर विछाता जा रहा था। वह अवाध गति से आगे वढ़ रहा था। शत्रु उसे अपना काल समझकर उससे आतंकित हो रहे थे।

इसी प्रकार अकेले वैठे-वैठे संध्या हो गयी। वह कॉलेज नहीं गयी थी। इसीलिये प्रतिमा, ललित और मनोरम कॉलेज से लौटती हुयी उससे मिलने चली आयीं।

शीला का चेहरा कुछ उदास-सा देखकर ललित वोली, "आज

इतनी उदास क्यों दिख रही हो शीला ! क्या कोई विशेष बात है ?
आज तुम कॉलिज भी नहीं आयी।"

शीला ने अपनी भारी पलकें ऊपर उठाकर कहा, "क्या इससे भी विशेष कोई अन्य घटना घट सकती है ?"

"आखिर क्या ?" शीला के मनोभावों को न समझते हुए ललित ने पूछा।

"क्या चीन के आक्रमण का समाचार तुमने अभी तक नहीं सुना ललित ?"

"सुना क्यों नहीं शीला ! परन्तु......।" वह चुप हो गयी।

"क्या मनोहर बाबू को भी मोर्चे पर जाना होगा शीला ?" प्रतिमा ने पूछा।

शीला रूखी हँसी हँसकर बोली, "जाना होगा नहीं, वह तो मोर्चे पर पहुँच भी चुके प्रतिमा रानी ! युद्ध-काल में क्या इतना विलम्ब होता है ? पिता जी तो परसों ही वायुयान द्वारा नेफ़ा चले गये थे।"

शीला के मन की उद्विग्नता को समझकर ललित और प्रतिमा ने अन्य कोई प्रश्न नहीं किया। वे शीला की मनस्थिति का अनुमान लगाकर इधर-उधर की बातें करने लगीं।

प्रतिमा ने पूछा, "मनोहर बाबू किस मोर्चे पर गये हैं शीला ?"

"नेफा-क्षेत्र में 'सेला'-मोर्चे पर गये हैं यहाँ से। वहाँ जाकर क्या स्थिति बनेगी, इसके विषय में अभी क्या कहा जा सकता है ?" शीला ने उत्तर दिया।

फिर चीन के आक्रमण को लेकर चर्चा चल पड़ी। बहुत देर तक इसी विषय पर बातें होती रहीं।

सन्ध्या को प्रकाश नरेन्द्र के पास इस समाचार को सुनकर आया। मनोहर के लिये उसका मस्तिष्क भी चिंताग्रस्त था। उसने प्रधानमंत्री का राष्ट्र के प्रति आह्वान-संदेश सुना था। वह सोच रहा था कि वह इस राष्ट्रीय यज्ञ में क्या योगदान दे सकता था।

उस दिन वह रक्षा-कोष के लिये धन एकत्रित करने में जुटा रहा था।

नरेन्द्र ने पूछा, "प्रकाश! रक्षा-कोष के लिये आज कितना धन एकत्रित हुआ कॉलेज के विद्यार्थियों से?"

"अभी तो केवल दो हज़ार के लगभग हुआ है भाई नरेन्द्र! परन्तु आशा है कि लगभग दस हज़ार रुपया तो एकत्रित हो ही जायगा। दिल्ली के अन्य कॉलिजों में भी विद्यार्थी इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। इस संकट के प्रति राष्ट्र का प्रत्येक वर्ग जागरूक है।" प्रकाश बोला।

"इसमें कोई सन्देह नहीं प्रकाश! तुमने यह प्रशंसनीय कार्य किया है। इस कार्य में राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को जुट जाना चाहिये। यह संकट तभी टलेगा जब राष्ट्र का बच्चा-बच्चा अपने दायित्व को समझ-कर उसमें जुट जायगा। यह युद्ध देश के कोने-कोने में लड़ा जाना चाहिये। सीमा पर सैनिक युद्ध करेंगे, खलिहानों में किसान अधिक अन्न उगायेंगे, कल-कारखानों में मज़दूर और कारीगर उत्पादन में वृद्धि करेंगे, विद्यार्थी जनता में जाग्रति का संचार करेंगे, इस प्रकार देश का हर व्यक्ति राष्ट्रीय सुरक्षा में अपना योग-दान देगा।

यह कर्त्तव्य निभाने का समय है प्रकाश! इस समय जो व्यक्ति चूक जायगा वही अपने कर्त्तव्य से गिर जायगा।"

प्रकाश ने नरेन्द्र के शब्दों से प्रेरणा ली। वह बोला, "नरेन्द्र भाई! कल एक नाटक का आयोजन किया है कॉलेज में। उससे जो आय होगी, वह राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष को भेंट की जायगी। इस दिशा में कुछ अन्य आयोजनों की भी व्यवस्था करनी चाहिये।"

"निश्चित रूप से करनी चाहिये। इस कार्य से तुम्हें धन एकत्रित करने में अधिक सफलता मिलेगी।" नरेन्द्र बोला।

प्रकाश शीला से भेंट करना चाहता था परन्तु कुछ साहस न हुआ। अचानक ही शीला की दृष्टि प्रकाश पर गयी तो वह स्वयं वहाँ आ गयी। वह बोली, "प्रकाश बाबू! आपका आज का प्रयास बहुत

सराहनीय रहा। यदि आप इसी प्रकार इस कार्य में जुटे रहे और छात्रों की टोलियाँ संलग्नता से कार्य करती रहीं तो मुझे विश्वास है कि रक्षा-कोष के लिये पर्याप्त धन एकत्रित हो सकेगा। आपका यह योग-दान महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।"

"विश्वास तो मुझे भी यही है शीला बहन! मैंने तो निश्चय कर लिया है कि जब तक यह युद्ध चलता रहेगा तब तक मेरे जीवन का प्रत्येक क्षण इसी कार्य में लगेगा। कल जो नाटक का आयोजन किया है, उसमें मुझे तीन-चार हजार रुपये प्राप्त होने की आशा है।"

"सम्भव तो है" शीला बोली। "इस प्रकार के अन्य आयोजनों की भी व्यवस्था की जा सकती है। कल प्रतिमा और ललित भी इसी विषय में बातें कर रही थी।" शीला बोली।

"इसी दिशा मे मैं भी विचार कर रहा हूँ। कल पिताजी से भी मैंने इस विषय में परामर्श किया था। सोच रहा हूँ किसी सिनेमा-हॉल की व्यवस्था करके उसमें रक्षा-कोष के लिये विभिन्न प्रकार के आयोजनों की व्यवस्था की जाय। इस कार्य के लिये नेशनल-स्टेडियम भी हमें मिल सकता है।"

यह बात शीला को बहुत पसंद आयी। वह बोली, "इस कार्य के लिये नेशनल-स्टेडियम ही उपयुक्त स्थान रहेगा।"

बातें करके प्रकाश ने विदा ली और रात्रि को इसपर गम्भीरता-पूर्वक विचार किया।

दूसरे दिन से शीला भी इस कार्य पर जुट गयी। कॉलेज के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय रक्षा-कोष में अपना योग-दान देने के लिये एक निश्चित कार्य-क्रम निर्धारित किया। उसके लिये नेशनल-स्टेडियम में एक विशाल संगीत-समारोह का आयोजन किया गया।

यह समारोह सात दिन तक चलता रहा। विद्यार्थियों ने घर-घर जाकर उसके टिकिट बेचे। समारोह का उद्घाटन मुख्य-मंत्री ने किया।

इस समारोह से रक्षा-कोष के लिये पचास हज़ार रुपये की धन-राशि प्राप्त हुयी।

राष्ट्रीय सुरक्षा-कार्य में शीला, नरेन्द्र, प्रकाश, ललित, प्रतिमा और मनोरम ने रात-दिन एक कर दिया। उन्हें अपने खाने-पीने और सोने तक की सुध-बुध न रही।

सरोजरानी बच्चों की इस संलग्नता पर हार्दिक संतोष प्रकट करती हुयी सहजोबाई से बोलीं, "बच्चों ने बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है बहन सहजो! आज का बच्चा-बच्चा राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्त्व को पहचानता है।"

"राष्ट्र अब सुप्तावस्था में नहीं है बहन! हर व्यक्ति अपने दायित्व को समझता है। इसीलिये बच्चों को अपने कार्य-क्रमों में इतनी सफलता मिल रही है। महिला-संघ ने भी राष्ट्रीय सुरक्षा की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।" सहजोबाई बोलीं?

"इसमें कोई संदेह नहीं बहन! केशवचन्द्रजी की पत्नी विमलादेवी के विषय में पहले मेरी धारणा अच्छी नहीं थी। परन्तु इधर महिला-संघ की मंत्राणी बनकर उन्होंने जो कार्य किया है उसे देखकर मैं चकित रह गयी। कितना काम करने की क्षमता है उनमें कि मैं कह नहीं सकती। चौबीसों घंटे, जब देखो तब, एक ही धुन सवार है उनके मस्तिष्क में। कल उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष में महिला-संघ की ओर से तीन हज़ार हाथ के बुने हुए स्वेटर भेंट किये।"

"महिलाओं के कार्य की यह दिशा बहुत महत्वपूर्ण है बहन सरोज!" सहजोबाई बोलीं।

सरोजरानी घड़ी देखकर बोलीं, "समय हो गया बहन! विमला-देवी हमारी प्रतीक्षा में होंगी।"

"चलो बहन! समय का उन्हें बहुत ध्यान रहता है।" सहजोबाई बोलीं और वह तुरन्त चलने के लिये उद्यत होगयीं।

सरोजिनी और सहजोबाई ने, 'महिला-संघ' की सभ भाग लेने के लिये प्रस्थान किया।

मेजर जनरल नाहरसिंह नेफा-क्षेत्र का दौरा करके 'सेला' पहुँचे। हाँ की कमान उन्होंने अपने हाथों में सँभाली। उन्होंने मोर्चे की पूरी ाकेबन्दी करके इधर-उधर की पहाड़ियों की रक्षा-व्यवस्था का नरीक्षण किया।

मेजर साहब अपनी टुकड़ियों की व्यवस्था देखकर दक्षिण की हाड़ी पर पहुँचे, जिसकी सुरक्षा का भार लेफ्टिनेण्ट मनोहर के हाथों में था। मनोहर के पास तीनसौ जवानों की टुकड़ी थी। रायफलों के अतिरिक्त दो लाइट मशीनगनें भी उसके पास थी, जिन्हें उसने दो चट्टानों पर पूर्ण व्यवस्था के साथ जमाकर रख दिया था।

मेजर साहब रक्षा-व्यवस्था का निरीक्षण करके चौकी पर पहुँचे तो सूचना मिली कि बौमला-चौकी पर चीनियों ने अधिकार कर लिया है और इस समय तावांग पर घमासान युद्ध हो रहा है। ब्रिगेडियर धीरसिंह और मेजर वीरसिंह ने अपने सैनिकों के साथ प्राणों की बाजी लगा रखी है। उन्होंने चीनी सेना की गतिविधि को रोका हुआ अवश्य है परन्तु वह व्यवस्था अधिक चलने वाली नहीं है क्योंकि चीनियों का बहुत बड़ा तोपखाना उन पर गोलों की वर्षा कर रहा है।

मेजर साहब ने वायुयानों द्वारा तावांग पर शस्त्रास्त्रों के भेजने की व्यवस्था की परन्तु इससे पूर्व ही उन्हें सूचना मिली कि तावांग पर वायुयानों के उतरने की पटरी चीनी तोपों की गोलाबारी ने नष्ट कर दी है। ऐसी स्थिति में यह सम्भव नहीं रह गया था कि वहाँ वायुयानों द्वारा गोला-बारूद भेजा जा सके।

इस समाचार से मेजर साहब का मन कुछ उद्विग्नस हो उठा। उन्हें

लगा कि चीनी सेना अब बहुत शीघ्र उनके निकट पहुंचना चाहती है। उन्हें अब तावांग की सुरक्षा की कोई आशा न रही।

मेजर साहब अपने कैम्प से निकले और उन्होंने एक बार फिर अपनी चौकी के चारों ओर की पहाड़ियों का दौरा किया। दौरा करते हुए जब वह लेफ्टिनेण्ट मनोहर की रक्षा-व्यवस्था के निकट पहुंचे तो उन्होंने एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर दूरबीन से चारों ओर देखा। दूरबीन से देखने पर जो दृश्य उनके सामने आया उसे देखकर वह चिंतित हो उठे।

लेफ्टिनेण्ट मनोहर ने मेजर साहब के चेहरे को इतना चिंताग्रस्त पहले कभी नहीं देखा था। उसने पूछा, "सर ! क्या कोई विशेष घटना घटती प्रतीत हो रही है आपको ? मैं देख रहा हूँ कि आपका चेहरा अचानक ही चिंताग्रस्त हो उठा है।"

मेजर साहब की जबान से निकला, "विनाश ! मनोहर ! बहुत भयंकर घटना घटने वाली है। सतर्क हो जाओ।"

"सर ! क्या देखा आपने ?"

"मैंने देखा मनोहर ! चीनी सेना ने तावांग पर अधिकार कर लिया है। तावांग पर अधिकार करके चीनी सेना आगे बढ़ गयी है और उसने अपना रास्ता बदल दिया है।"

"सर ! तब क्या वे लोग 'सेला' की ओर नहीं बढ़ रहे हैं ?"

"नहीं, वे लोग बोमडिला की दिशा में बढ़ रहे हैं। यदि उन लोगों ने बोमडिला पर फुटहिल्स से आने वाली सड़क को काट दिया तो हमारा फुटहिल्स से सम्बन्ध विच्छेद हो जायगा। मुझे लग रहा है जैसे हम लोग उत्तर-पूर्व और दक्षिण, तीनों दिशाओं से चीनी सेना के बीच में फँस गये हैं। बहुत संकट की स्थिति पैदा होगयी है।" मेजर साहब बोले।

"ऐसी स्थिति में हमें क्या आज्ञा है मेजर साहब ! क्या हमें उनके आक्रमण की प्रतीक्षा करनी चाहिये ?"

"प्रतीक्षा के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं है। मैं सोच रहा हूँ कि किसी तरह यहाँ से अपने जवानों को निकाल सकूँ, परन्तु कोई मार्ग दिखायी नही दे रहा। पश्चिम-दिशा के ऊँचे पर्वत को लाँघना सरल काम नही है। यदि सेना को आज्ञा दूँ तो सम्भव है और भी बड़ा विनाश हो जाय।"

ये बात चल ही रही थी कि तभी चौकी के निकट-चीनी तोपों के गोले आकर गिरने लगे।

"आक्रमण आरम्भ हो गया मनोहर! सावधान! [illegible] ओर से हमें घेरती हुयी चली आ रही है। मैं चौकी की [illegible] हूँ। हमारे जवानों को अब यही रहकर अन्तिम [illegible] के साथ युद्ध करना है। यहाँ से हटना कायरता का काम है। [illegible] और भी बड़े विनाश की सम्भावना है।

मनोहर! अपने सैनिकों को पहाड़ी के पीछे [illegible] इसी दिशा में होगा। तुम्हें उन पर [illegible] करनी है जब उनकी सेना पहाड़ी से [illegible] पहुँच जाय।"

मनोहर कुछ सोचकर बोला, "सर! [illegible] दें। इसकी सहायता से मैं [illegible] चौकी की व्यवस्था को देख [illegible]।"

मेजर साहब कुछ सोचकर [illegible] अब यहाँ नहीं ठहर [illegible] ध्यान रखना। मैं [illegible] यहाँ से बचाकर निकालने की [illegible]

मेजर साहब [illegible] चौकी को [illegible]

मनोहर ने [illegible]

आज्ञा दी और फिर उसकी चोटी पर चढ़कर चीनी सेना की गतिविधि देखी ।

चीनी सेना तीन ओर से उनकी ओर बढ़ रही थी, परन्तु चौकी पर जाने का मार्ग एक ही था और उसी पहाड़ी के नीचे से होकर जाता था जिसकी सुरक्षा का भार लेफ्टिनेण्ट मनोहर के हाथों में था ।

मेजर साहब ने अपने सेनानायकों को बुलाकर चौकी के आस-पास की स्थिति समझाते हुए कहा, "हम लोग तीन दिशाओं से शत्रु-सेना के बीच में घिर गये हैं । चौथी दिशा में यह ऊँची पर्वत-शृंखला है । इसे पार करना सरल कार्य नहीं है, परन्तु इसके पश्चिम-दक्षिण किनारे पर एक घाटी है । चीनी सेना अभी पर्याप्त दूरी पर है । यदि रात्रि का अंधकार छाजाने से पूर्व चीनी सेना घाटी के निकट न पहुँच पाये तो तुम लोग अपने जवानों के साथ उस घाटी से होकर पश्चिम दिशा की ओर प्रस्थान करना । थोड़ा ही आगे बढ़कर एक मार्ग तुम्हें दक्षिण-दिशा की ओर घूमता हुआ दिखायी देगा । वहाँ हमारे सैनिकों का एक दस्ता तुम्हें मिलेगा । वही आगे तुम्हारा मार्ग-दर्शन करेगा ।"

मेजर साहब की बात सुनकर नायक बोले, "क्या आप भी हमारे साथ चलेंगे मेजर साहब ?"

"नहीं, मैं अंतिम समय तक चौकी को नहीं छोड़ूँगा । मैं एक हजार जवानों के साथ यहाँ रहकर चीनी सेना से अपने अन्तिम श्वांस तक युद्ध करूँगा । तब तक तुम लोग सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाओगे ।"

नायक बोले, "सर ! हम आपको इस प्रकार काल के विकराल जबाड़े में सौंपकर अपने प्राणों की······· ।"

मेजर साहब गम्भीर वाणी में बोले, "मेरी आज्ञा का तुरन्त पालन करो । विलम्ब करने का समय नहीं है ।"

नायक लोग चुपचाप मेजर साहब के डेरे से बाहर निकल आये और प्रस्थान करने की तय्यारी करने लगे ।

सूर्य अस्त हो चुका था । रात्रि का अंधकार चारों दिशाओं में छाता

चला जा रहा था। उसी अंधकार की वेला में भारतीय जवानों ने मोर्चों में प्रस्थान किया। अब केवल एक हजार जवान मेजर साहब के पास थे और तीन सौ जवान लेफ्टिनेंट मनोहर के पास।

मेजर साहब ने अपने एक हजार जवानों को चार स्थानों पर पोस्ट करके एक बार फिर जाकर मनोहर की व्यवस्था देखी।

धीरे-धीरे रात्रि समाप्त हुई। पूर्व-दिशा में उषा की लालिमा छिटकी और उसी के साथ चीनी तोपों की गड़गड़ाहट सुनायी दी। फिर भीषण वेग के साथ चोटी पर गोलों की वर्षा होने लगी। चीनी सेना अब उनके बिलकुल निकट आ चुकी थी। सैनिक 'हिन्दी-चीनी भायी-भायी' का नारे लगा रहे थे।

इस नारे को सुनकर मनोहर मुस्कराया। उसने अपने मन में कहा, 'आओ बच्चा चीनी भायी, आओ। हमारे रक्त से अपनी प्यास बुझाते हुए हमारी भूमि को पदाक्रान्त कर रहे हो और कहते हो 'हिन्दी-चीनी भायी-भायी'। तुम्हारे चेहरे का आवरण हट चुका है। भारतवासी अब तुम्हें पहचानने में भूल नहीं कर सकते। अपनी भूल का फल इन्हें मिल चुका है। तुम कैसे भायी हो, यह हमने अपने देशवासियों के रक्त में झाँक कर देख लिया है। तुम्हारे काले चेहरे अब हमसे छिपे नहीं रह गये हैं।'

चीनी सेना ने जैसे ही घाटी में प्रवेश किया वैसे ही भारतीय सेना की चारों टुकड़ियों की राइफलों की गोलियों की बौछारें उन पर पड़ीं। पहले ही वार में सैकड़ों चीनी सैनिक भूमि पर गिर पड़े, परन्तु सौ-सौ चीनी सैनिकों के हताहत होने से उस टिड्डी-दल पर क्या प्रभाव पड़ने वाला था?

दोनों ओर से दनादन राइफलें चलने लगीं। वर्षा की बूँदों के समान गोलियाँ बरस रही थीं। चीनी सेना की प्रगति रुक गयी। उनके कमाण्डर ने स्थिति को देखा और अपने सैनिकों को सामने की पहाड़ी पर चढ़ने की आज्ञा दी?

मनोहर दूरवीन से स्थिति का अध्ययन कर रहा था। उसके जवान अभी तक शांत थे। उन्होंने एक भी गोली नहीं दागी थी। चीनी सेना अभी पूरी तरह से घाटी में नहीं घुसी थी। मेजर साहव ने उसे उस समय आक्रमण करने को कहा था जव चीनी सेना उसकी पहाड़ी से आगे वढ़ जाय परन्तु जव उसने देखा कि चीनी सिपाहियों ने सामने की पहाड़ी पर चढ़ना आरम्भ कर दिया तो फिर आक्रमण को स्थगित किये रखना उसे ग़लत प्रतीत हुआ क्योंकि उन पहाड़ियों से चीनी सैनिक उसे और उसके जवानों को स्पष्ट देख सकते थे।

मनोहर कुछ देर तक स्थिति के विपय में सोचता रहा। फिर उसने अपने जवनों को पहाड़ी से उत्तर दिशा की ओर आगे वढ़कर धीरे-धीरे नीचे उतरने की आज्ञा दी। एक सँकरी सी पगडण्डी से होकर जवान नीचे उतरने लगे। उन्होंने सावधानी से अपनी मशीनगनें भी नीचे उतार लीं।

जव तक ये लोग नीचे उतरे तव तक चीनी सेना घाटी में पूरी तरह प्रवेश कर चुकी थी।

मनोहर ने अपने जवानों को उत्तर-पूर्व की ओर से घूमकर चीनी सेना के ठीक पीछे पहुँचने का संकेत किया। फिर उसने चौकी की ओर दृष्टि डाली तो देखा वहाँ एक भी सैनिक दिखायी नहीं दिया। उसकी कुछ समझ में न आया कि मेजर साहव ने यह सव क्या किया। इतने भारतीय जवानों को किस मार्ग से निकाल कर वाहर कर दिया।

मनोहर ने दूरवीन से फिर चौकी के दाँयी ओर वाँयी ओर की पहाड़ियों पर देखा तो उसे चार स्थानों पर भारतीय सैनिक मोर्चे लगाये वैठे दिखायी दिये। वे वायु-वेग से चीनियों पर गोलियों की वर्पा कर रहे थे।

चीनी सैनिक उन पहाड़ियों पर चढ़ने का प्रयास कर रहे थे, परन्तु भारतीय जवानों की गोलियाँ उन्हें ऊपर नहीं चढ़ने दे रही थीं। इस स्थिति को देखकर चीनी कमाण्डर ने अपने जवानों को चीनी भापा में ललकारा तो वे पहाड़ियों पर विछ गये। वर्पा-ऋतु में जैसे मच्छरों की

सेना भिन्न-भिन्न करती हुयी आगे बढ़ती है और उनमें से दस-बीस को कुचल डालने का उनकी संख्या पर कोई प्रभाव नहीं होता वैसी ही स्थिति चीनी सैनिकों की थी।

चीनी सैनिक बराबर 'हिन्दी-चीनी भायी-भायी' का नारा लगाते हुए पहाड़ियों पर चढ़ रहे थे।

मेजर साहब अपने जवानों से बोले, "इन विश्वासघाती चीनियों का विश्वास न करना जवानो! ये हमें धोखा देने के लिये ऐसे नारे लगा रहे हैं।"

"हम लोग इन्हें समझते हैं सर! हमारे ऊपर तोपों से गोले बरसा कर भी ये हमारे भायी बनना चाहते हैं। हम इन्हें भूनकर रख देंगे।" जवान एक स्वर में बोले।

उसी समय मनोहर की दृष्टि मेजर साहब पर गयी। उन्होंने अपनी दो टुकड़ियों को मिलाकर एक स्थान पर कर लिया था। उनके कुछ सैनिक हताहत हो गये थे। फिर उसकी दृष्टि चीनी सैनिकों पर गयी तो उसने देखा कि यदि वे पहाड़ी पर चढ़ गये तो मेजर साहब और उनके बीच कोई अन्तर नहीं रह जायगा। उसने इस स्थिति को गम्भीर दृष्टि से देखा।

इस स्थिति को देखकर मनोहर के बदन में कपकपी-सी आ गयी। उसने देखा मेजर साहब सकट में फँस गये। तभी उसने देखा कि मेजर साहब अपने जवानों के साथ उस स्थान को छोड़कर पहाड़ी के दाँयी ओर की घाटी से होते हुए पूर्व दिशा की ओर बढ़ गये।

मनोहर ने मन-ही-मन मेजर साहब की इस कुशल [illegible] की सराहना की और संतोष की स्वाँस ली परन्तु इससे पूर्व कि वह पहाड़ी को पार करके चीनी सेना के पीछे पहुँच जाते, चीनी कमाण्डर की दृष्टि उन पर पड़ गयी।

चीनी कमाण्डर ने तुरन्त अपने जवानों को मेजर साहब पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। [illegible]

घूम गयी। अब मनोहर शान्त नहीं रह सकता था। वह लपकर अपने जवानों के पास पहुँचा और उसने मेजर साहब की ओर बढ़ती हुयी चीनी सेना पर भयंकर आक्रमण बोल दिया।

मेजर नाहरसिंह की दृष्टि मनोहर पर गयी। उनका हृदय हर्ष से नाच उठा। उन्होंने मनोहर की बुद्धिमत्ता की सराहना की और अपने जवानों को तीव्रगति से क़दम बढ़ाकर चीनी सेना के पीछे, पूर्व की ओर, पहुँचने की आज्ञा दी।

इस प्रकार मेजर जरनल हिम्मतसिंह अपने सब जवानों को पूर्व-दिशा में ले आये और चीनी सेना 'सेला' की चौकी के पास वाली घाटी में फँस गयी।

मेजर साहब ने अपने जवानों को ललकारा और चीनी सेना पर आक्रमण करने का आदेश दिया।

उसी समय चीनी तोपें गरज उठीं। भयंकर गोलों की वर्षा होने लगी। सारा दिन घमासान युद्ध चलता रहा। मेजर साहब के आधे से भी अधिक वीर हताहत होकर भूमि पर गिरगये।

मनोहर की दोनों मशीनगनों ने घाटी का द्वार एक प्रकार से बन्द कर दिया था। चीनी सैनिक उससे बाहर निकलने का साहस नहीं कर सकते थे परन्तु उनके बहुत से सैनिक इधर-उधर की पहाड़ियों पर चढ़ते चले जा रहे थे। इससे स्थिति गम्भीर हो गयी थी।

भारतीय सेना के मुठ्ठी-भर जवानों ने पूरा दिन चीनी सेना से युद्ध करते हुए निकाल दिया।

संध्या-समय हो गया। उस समय 'सेला' की चौकी पर छाया हुआ आकाश और उसकी भूमि दोनों रक्त में डूबी हुयी थीं। तभी मनोहर की दृष्टि मेजर साहब पर पड़ी। उसने देखा एक सनसनाती हुयी गोली उनके बाज़ू पर पड़ी और रायफ़ल उनके हाथ से छूटकर ज़मीन पर गिर पड़ी। उन्होंने दूसरे हाथ से रायफ़ल उठाने का प्रयास किया तो एक गोली उनके पैर में आकर लगी और वह वहीं गिर पड़े।

यह देखकर मनोहर उद्विग्न हो उठा। उसने दूरबीन से उलटे हाथ की पहाड़ी पर दृष्टि फैलायी तो उसे कुछ चीनी सैनिक दिखायी दिये, जिनकी गोलियों से मेजर साहब हताहत हुए थे। उसने अपने जवानो से उधर संकेत करते हुए कहा, "रायफलों की नालें उधर घुमाओ जवानो! इस पहाड़ी पर खड़े चीनी सैनिकों को मारकर नीचे गिरा दो।"

मनोहर की आज्ञा पाते ही भारतीय जवानो ने उन सैनिकों को लक्ष्य करके गोलियां दागीं और बात-की-बात मे उन्हे धराशायी कर दिया।

मनोहर की दृष्टि मेजर साहब पर थी। वह अपने जवानो से बोला, "वीरो! वह देख रहे हो सामने। मेजर साहब हताहत पड़े हैं। इस गोलियो की बौछारों के बीच से उन्हें उठाकर लाना है। मुझे अपने साथ चलने के लिये वे जवान चाहियें जिन्हें अपने प्राणो का किंचित मात्र भी मोह न हो।"

देखते-ही-देखते पंद्रह-बीस जवान बढ़कर आगे आगये।

मनोहर ने उनमें से केवल चार को अपने साथ लिया और वह गोलियों की बौछारों के बीच से होता हुआ मेजर साहब के निकट पहुँच गया।

"मेजर साहब को सावधानी से उठा लो।"

एक जवान ने आगे बढ़कर मेजर साहब को जैसे ही ऊपर उठाया वैसे ही चीनी सैनिकों ने उस पर गोलियो की वर्षा की।

चीनियो की इस गोली-वर्षा को देखकर मशीनगनों के चालकों ने घाटी के मुहाने की दिशा बदलकर उन गोली बरसाने वाले चीनी सैनिकों पर भयंकर गोलियों की वर्षा की। इससे उनकी गति मध्यम पड़ गयी, परन्तु फिर भी वह भारतीय जवान जिसने मेजर साहब को उठाया हुआ था, हताहत होकर गिर पड़ा। उसका स्थान तुरन्त दूसरे जवान ने ले लिया।

मेजर साहब अचेतन अवस्था मे थे।

घाटी के मुहाने तक पहुँचते-पहुँचते मनोहर अकेला शेप रह गया। अन्य जवान चीनियों की गोलियों के लक्ष्य वन गये।

संध्या रात्रि में वदलती जा रही थी। चारों ओर अंधकार छागया था। भारतीय मशीनगनें घाटी के मुहाने पर गोलियों की वर्षा कर रही थीं। चीनी सैनिक घाटी के अन्दर से गोलियों की वर्षा कर रहे थे। भारतीय जवानों की संख्या अब बहुत कम रह गयी थी। लगभग आठ सौ जवान हताहत हो चुके थे।

मनोहर भारतीय जवानों से वोले, "वीरो! आज का मोर्चा हमने किसी प्रकार संभाल लिया। कल का मोर्चा सँभालना हमारे लिये असम्भव है। यह भी सम्भव है कि वोमडिला से चीनी सैनिकों की कोई नयी टुकड़ी आकर हम पर पीछे से आक्रमण करदे। उस समय हमारी ये मशीनगनें भी व्यर्थ हो जायेंगी।

मैं नहीं चाहता कि अव यहाँ ठहरकर शेप पाँच सौ भारतीय जवानों को मृत्यु के मुख में धकेल दिया जाय।

इस समय, इससे भी महत्वपूर्ण कार्य हमारे सामने मेजर साहव को सुरक्षित दशा में हॉसपिटल पहुँचाना है। यह कार्य तभी सम्भव है जब दो वीर सैनिक अपने प्राणों का मोह त्याग कर यहाँ इन दो मशीनगनों का रात्रि-भर संचालन करते रहें।"

मनोहर ने दो जवान चाहे थे, वहाँ दस निकल कर वाहर आगये। मनोहर ने उनमें से पाँच को वहीं नियुक्त करके शेप जवानों को धीरे से पूर्व-दक्षिण दिशा में वढ़ने का आदेश दिया।

मेजर साहव को लेचलने के लिये दो रायफ़लों का स्ट्रेचर वनाया और उस पर उन्हें लिटाकर ले चले।

मनोहर वहुत सावधानी से आगे वढ़ रहा था। उसे भय था कि कहीं मार्ग में उसकी मुठभेड़ चीनी सेना की किसी टुकड़ी से न हो जाय। इसलिये सभी जवानों की रायफ़लों में कारतूस भरे हुए थे और वे किसी भी क्षण मनोहर का संकेत पाकर शत्रु पर टूट पड़ने के लिये उद्यत थे।

यह एक भयंकर सूचना थी, जिसे सुनकर कुछ देर तक तो चारों व्यक्ति चुपचाप बैठे रहे। फिर सरोज रानी बोलीं, "भयंकर विनाश की सम्भावना है। सेला चौकी के किसी भी सैनिक की रक्षा होना अब सम्भव प्रतीत नहीं होता।"

नरेन्द्र बोला, "अभी युद्ध का तो कोई समाचार नहीं मिला माता जी! सेना तो हमारी भी वहां काफ़ी है। भारतीय सेना के चुने हुए जवान इस चौकी की रक्षा कर रहे हैं। इतनी निराश होने की आवश्यकता नहीं है।"

वह रात बहुत बेचैनी से कटी। चारों में से एक भी एक क्षण के लिये पलकें न झपा सका।

प्रातः काल सवा आठ बजे आकाशवाणी ने जो समाचार प्रसारित किया वह और भी भयंकर था। उसमें कहा गया था, 'मेजर जनरल नाहरसिंह ने रात्रि के अंधकार में लगभग पांच हज़ार भारतीय सेना के जवानों को पश्चिम-दक्षिण की एक घाटी से सुरक्षित सेला चौकी से बाहर निकाल दिया। इस समय वह केवल तेरह सौ जवानों के साथ चौकी की रक्षा कर रहे हैं। चीनी सेना के चार डिवीजनों ने चौकी पर आक्रमण किया है। भारतीय सेना के जवान चीनी सेना का बहुत साहस के साथ सामना कर रहे हैं।'

सरोजरानी बोलीं, "वीरता कहां तक काम देगी बेटा! कहाँ केवल तेरह सौ जवान और कहाँ चीनी सेना के चार डिवीज़न। फिर हथियारों की दृष्टि से भी वे चीनी सेना से सशक्त नहीं हैं। इतनी बड़ी सेना पर विजय प्राप्त करना सरल कार्य नहीं है।"

"बेटा मनोहर के विषय में कोई सूचना प्राप्त नहीं हो रही नरेन्द्र!"

नरेन्द्र बोला, "सम्भव है पिताजी ने भायी मनोहर को उन पांच हज़ार जवानों के साथ सुरक्षित वहाँ से निकाल दिया हो।"

सहजोबाई बोलीं, "एक बार युद्ध-भूमि में जाकर मनोहर ऐसे लौटने

ता नहीं है बेटा ? फिर मेजर साहब को इस तरह संकट-ग्रस्त छोड़ र वह किसी भी मूल्य पर वहाँ से नहीं आवेगा।"

शीला चुपचाप बैठी ये बातें सुन रही थी। उसके मस्तिष्क में बेचैनी ढ़ती जारही थी। वह वहाँ से उठकर अपने कमरे में जाकर चुपचाप लंग पर जैठ गयी। वह सोच रही थी कि अब क्या होगा ? अपनी माता सरोजरानी की बात से वह सहमत अवश्य थी, परन्तु उसका मन कह रहा था कि उसके मनोहर का बाल बाँका नहीं होसकता।

शीला उठकर अपने कमरे में टहलने लगी।

दोपहर के समाचार मे भयंकर युद्ध की सूचना के अतिरिक्त अन्य कोई समाचार न मिला।

आज सहजोबाई और सरोजरानी महिला-संघ की गोष्ठी में न जासकीं। उनकी मनःस्थिति ठीक नहीं थी।

शीला भी आज विद्यार्थी-संघ के कार्य-क्रम मे भाग न लेसकी।

संध्या को विमलादेवी महिला-संघ की गोष्ठी से लौटती हुयी मेजर साहब की कोठी पर आयीं। सेना की भयंकर सूचना उनके मस्तिष्क मे थी। उन्हे समझने मे विलम्ब न हुआ कि सरोजरानी और सहजोबाई की संघ में अनुपस्थिति का यही कारण था।

विमलादेवी की कार ने कोठी मे प्रवेश किया तो सरोजरानी कोठी से निकलकर बाहर आयी और उन्हें आदरपूर्वक अन्दर लिवाकर ले गयी।

"क्षमा करना बहन ! आज हम लोग कुछ चित्त की अस्वस्थता के कारण महिला-संघ की गोष्ठी में भाग न लेसकीं।" सरोजरानी ने कहा।

"सेना-चौकी का अशुभ समाचार प्राप्त करके आपके चित्त का अस्वस्थ होना स्वाभाविक ही था बहन ! स्थिति बहुत गम्भीर हो गयी मालूम देरही है।" विमलादेवी बोली।

"स्थिति तो भयंकर है ही विमलादेवी ! कहाँ चीनी सेना के चार

डिवीज़न और कहाँ भारतीय सेना के तेरहसौ सैनिक। यदि उन्हें विजय की सम्भावना होती तो क्या पाँच हज़ार सैनिकों को वहाँ से चले-जाने की आज्ञा देते ?" सरोजरानी बोलीं।

"अभी कोई अशुभ समाचार तो प्राप्त नहीं हुआ है सरोजरानी ! कहाँ क्या स्थिति है और उसे मेजर साहब ने किस प्रकार सँभालने का कार्य-क्रम बनाया है, इसके विषय में यहाँ इतनी दूर बैठकर क्या कहा जा सकता है ?

सम्भव है संध्या तक कोई शुभ समाचार मिले।"

संध्या को सवा छः बजे आकाशवाणी ने जो समाचार दिया, वह तब से पूर्व के अन्य सब समाचारों से भयंकर था। इस समाचार में सूचना दीगयी थी कि मेजर जरनल नाहरसिंह ने सेला के युद्ध-संचालन में अद्वितीय योग्यता का परिचय दिया। युवक लेफ्टिनेंण्ट मनोहर ने शत्रु के हौसले पस्त करके केवल तीनसौ जवानों की सहायता से चीनी सेना के चार डिवीज़नों को सेला-घाटी में बन्द करदिया।

संध्या-समय तक घमासान युद्ध होता रहा। इस युद्ध में आठ सौ भारतीय सैनिक खेत रहे। इन आठसौ जवानों ने चीनी सेना के कई हज़ार सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।

संध्या समय मेजर जनरल नाहरसिंह शत्रु की गोली से हताहत होकर भूमि पर गिर पड़े।

इस समाचार को प्राप्त कर सब लोग अवसन्न से रहगये। उन्हें अब मेजर साहब के जीवन की कोई आशा न रही। सरोजरानी वहाँ से उठकर अपने कमरे में चली गयीं। वह पलंग पर बैठीं तो अचेत-सी होकर एक ओर को ढुलक गयीं। उनकी यह दशा देखकर सब लोग उधर दौड़े। सहजोबाई ने उनका सिर अपनी गोद में रखलिया। इसी दशा में बैठे-बैठे सवा आठ बज गये। सवा आठ बजे आकाशवाणी ने फिर समाचार प्रसारित किया। उसमें सूचना मिली :

'लेफ्टिनेण्ट मनोहर ने मेजर साहब को अचेत होकर गिरते देखकर

अपनी मशीनगनों की दिशा उधर बदल दी जिस ओर से आयी हुई गोली से मेजर साहब हताहत हुए थे। एक पहाड़ी पर चीनी सैनिकों ने चढ़कर यह भयंकर हमला किया था।

मनोहर के इस आक्रमण ने पहाड़ी के इस मस्तक से चीनी सैनिकों के कलंक को उतार कर घाटी में फेंक दिया। फिर लेफ्टिनेण्ट मनोहर अपने चार जवानों को साथ लेकर चीनी गोलियों की बौछारों के बीच से होता हुआ वहाँ पहुँचा जहाँ मेजर साहब हताहत हुए पड़े थे।

लेफ्टिनेण्ट मनोहर की दृष्टि चीनी सेना पर थी। उन्होंने अपने साथियों को अचेत पड़े मेजर साहब को उठाकर घाटी से बाहर ले चलने की आज्ञा दी। सैनिकों ने मेजर साहब को अपने कंधों पर उठा लिया।

अन्त में अकेला मनोहर मेजर साहब को लेकर घाटी से बाहर पहुँचा। शेष चारों सैनिक मार्ग में ही चीनियों की गोलियों के लक्ष्य बनकर धराशायी हो गये।

उस समय चारों ओर अंधकार छा चुका था। घाटी के मुहाने पर लेफ्टिनेण्ट मनोहर की मशीनगनें ज्वाला उगल रही थीं। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। लेफ्टिनेण्ट मनोहर के पीछे पाँचसौ भारतीय जवान रायफलें सतर किये खड़े थे। उनकी दृष्टि पहाड़ियों की चोटियों पर थी।

लेफ्टिनेण्ट मनोहर ने दो रायफलों का एक स्ट्रेचर बनवाकर मेजर साहब को उस पर लिटाया और कुछ सैनिकों को वहाँ से प्रस्थान करने की आज्ञा दी।

आकाशवाणी से केवल यही समाचार प्रसारित हुआ। फिर क्या हुआ कुछ पता नहीं।

अब तक सरोजरानी को कुछ-कुछ चेतना लौट आयी थी। उन्होंने आकाशवाणी के इस समाचार को सुना तो उनकी निर्जीव देह में फिर से प्राणों का संचार हो उठा। वह उठकर बैठी हो गयीं और समाचार सुनने लगीं।

नरेन्द्र बोला, "मनोहर भायी! तुमने वह किया जो मैं बेटा होकर भी न कर सका।"

"मनोहर क्या मेजर साहब का बेटा नहीं है नरेन्द्र?" सहजोबाई बोलीं।

"है क्यों नहीं बहन! बेटा न होता तो क्या चीनी सैनिकों की गोलियों की बौछारों के बीच से उन्हें उठाकर लाने का साहस कर पाता? मनोहर मेरा दूसरा बेटा है। उसने अपने पिताजी को दूसरा जन्म दिया है। मनोहर के समाचार ने आज मेरे बुझते हुए दीपक पर घृत की बूंदें चुआई हैं सहजो बहन!" सरोजरानी बोलीं।

समाचार निराशा और अंधकार के बीच से होकर प्रकाश की ओर अग्रसर हुआ था परन्तु था अंधकार ही अभी। कोई निश्चित समाचार नहीं था। आगे क्या हुआ, इसका कुछ पता नहीं था।

शीला का हृदय इस समाचार को प्राप्त कर गुदगुदा उठा। भय और शंका का आवरण मस्तिष्क से हटा नहीं था परन्तु फिर भी जाने क्यों उसकी आत्मा को असीम शांति प्राप्त हुयी।

तावांग की चौकी हाथ से निकल जाने और बोमडिला पर सेला-फुटहिल्स-सड़क को चीनी सेना द्वारा काट देने से देश में हलचल मच गयी। विश्व की राजनीति में एक नवीन घुमाव आता प्रतीत हुआ। भारत शत्रु का सामना करने के लिये दृढ़-प्रतिज्ञ था।

विश्व ने साम्यवादी चीन का नया चेहरा देखा। 'हिन्दी-चीनी भायी-भायी' का मंत्र उच्चारण करने वाले बगुला-भगत की वह चोंच देखी जिसे वह मछली पकड़ने के लिये लोहे के चिमटे जैसी लपलपाता है।

स्थिति की गम्भीरता को देखकर भारत के प्रधानमंत्री ने मित्र-राष्ट्रों से सहायता माँगी और वह उन्हें तुरन्त प्राप्त हुयी। डमडम हवाई अड्डे पर आधुनिकतम हथियारों से लदे अमरीकी जहाज़ आने आरंभ हुए। मोर्चे के सैनिकों को नवीनतम हथियारों से लैस किया गया। भारतीय

सैनिकों ने फुटहिल्स की चौकी पर चीनी सेना से जमकर मोर्चा लिया और उनके बढ़ते हुए कदम रोक दिये।

लद्दाख में भी त्रिशूल के मोर्चे पर भारतीय सेना ने चीनियों के बढ़ते हुए कदम रोक दिये। इन दो मोर्चों की टक्कर ने चीनी सैनिक-शक्ति के मस्तिष्क के भ्रम को कुछ ढीला किया। उसने देखा कि उसकी प्रगति का मार्ग अब अवरुद्ध था। हिमालय की ऊँची शृंखलाओं पर भारतीय वीरता और साहस की अजेय दीवार खडी थी, जिसे लाँघकर जाना अब उनकी शक्ति में नहीं रह गया था।

भारत की चालीस करोड जनता अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये कटिबद्ध थी। उसने एक स्वर में चीनी आक्रमणकारियों को ललकारा।

दूसरे दिन प्रातःकाल आकाशवाणी से सूचना प्रसारित की गयी कि लेफ्टिनेण्ट मनोहर अपने पाँचसौ जवानों और मेजर जनरल नाहरसिंह के साथ फुटहिल्स की चौकी पर पहुँच गये। मेजर साहब अब सचेत थे। उनके बदन पर दो गोलियाँ लगी थीं। उन्हें मेरठ के मिलिट्री-हॉसपिटल में भेजा जारहा है।

इस समाचार ने मनोहर और मेजर साहब के परिवारों के उद्विग्न मस्तिष्क को शीतलता प्रदान की। सरोजरानी के चेहरे पर अभी कुछ क्षण पूर्व जो चिंता थी, उसका लोप हो गया। उनके दोनों हाथ अनायास ही आपस में जुड गये। उनके मुख से निकला, "परमात्मा ! तुम बडे दयालू हो। मेरे सुहाग की तुम ही रक्षा करनेवाले हो।"

सहजोबाई के मुख से निकला, "परमात्मा ! तू ही सबका सहायक है।"

सब लोगों के दिलों पर दो दिन से जो दबाव पड रहा था, वह हलका हो गया। उनके उद्विग्न मनों को कुछ शान्ति प्राप्त हुयी।

दूसरे दिन मिलिट्री हॉस्पिटल से फोन आया। हाउस-सर्जन ने सूचित किया कि मेजर जनरल नाहरसिंह मिलिट्री-हॉस्पिटल में आगये हैं।

यह समाचार प्राप्त कर सभी के चेहरे खिल उठे। नरेन्द्र बोला, "चलिये माताजी! मैं आपको ले चलता हूँ।"

"हाँ आओ बहन! इससे तुम्हारे और उनके, दोनों के चित्त को शांति मिलेगी।" सहजोबाई बोलीं।

सरोजरानी शीला से बोलीं, "शीला! मैं अभी लौटकर आती हूँ, तुम और बहन आराम करो।"

"हमारी चिन्ता न करो सरोज बहन! पति के दर्शन करो। जाने किसके भाग्य से उनके प्राण बचगये।"

सरोजरानी नरेन्द्र के साथ जीप पर बैठकर मिलिट्री-हॉसपिटल पहुँचीं। अन्दर केवल वही गयीं, नरेन्द्र बाहर रहा।

सरोजरानी ने देखा, उनके पति के एक हाथ और एक पैर पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। इसके अतिरिक्त उनके बदन पर अन्य कोई चोट नहीं थी।

सरोजरानी को देखकर मेजर साहब के चेहरे पर प्रसन्नता की रेखा खिच गयी। वह बोले, "तुम आगयीं सरोज! मेरे ये कपड़े बदलवादो।"

सरोजरानी ने मेजर साहब के कपड़े बदलवाये, जिससे उन्हें कुछ आराम मिला। फिर तकिये से सिर लगाकर लेटे-लेटे बोले, "इस तरह क्या देख रही हो सरोज! मैं तो बिलकुल ठीक हूँ! दस-पांच दिन में यह प्लास्टर कटने पर चलने-फिरने लगूंगा। वैसे तो मैं निर्जीव होकर गिर गया था भूमि पर। मनोहर जाने कैसे उठा लाया मुझे। बड़ी भारी दिलेरी का काम किया मनोहर ने। जहाँ मैं गिरा था, वहाँ से मुझे उठाकर लाना सरल कार्य नहीं था।"

सरोजरानी के चेहरे पर प्रसन्ता खिल उठी। वह बोलीं, "मनोहर बड़ा साहसी बेटा निकला! उसने आपको दूसरा जन्म दिया है इस समय।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ सरोज ? क्या तुम सुन चुकी हो इसके विषय मे ?"

"जी हाँ ! आकाशवाणी ने पूरा समाचार प्रसारित किया था।"

"अच्छा-अच्छा।" सतोष प्रकट करते हुए मेजर साहब ने कहा।

सरोजरानी ने अधिक बातें नही की। डाक्टर ने मेजर साहब को नीद का इंजेक्शन दिया और उन्हें नीद आगयी।

डाक्टर सरोजरानी को एक ओर ले जाकर बोले, "अब आप कोठी पर लौट जायें। रात को यह आराम से सोयेंगे। चिंता की अब कोई बात नही है। दस-पांच दिन मे प्लास्टर काटकर पट्टी करदी जायगी। फिर यह घर जा सकेंगी।"

सरोजरानी नरेन्द्र के साथ कोठी पर लौट आयी। शीला और सहजोबाई उनकी प्रतीक्षा मे थी। उन्होंने सहजोबाई को सब हाल सुनाया तो उनका भारी मन भी हलका होगया।

आज तीसरे दिन सरोजरानी, सहजोबाई और शीला ने साथ बैठ कर शातिपूर्वक भोजन किया। आज उन्हे नीद आयी। गत दो दिन से वे कुछ खा नही सकी थी, सो नही सकी थी।

मेजर जनरल नाहरसिंह के सकुशल लौट आने का समाचार केशवचन्द्र और मेरठ कॉलेज के प्रिंसिपल साहब को मिला तो वे दोनों दूसरे ही दिन हॉसपिटल में उन्हें देखने के लिये गये।

विमलादेवी प्रातःकाल नाश्ते के समय ही मेजर साहब की कोठी पर आयीं और वाहर वरांडे से ही वोलीं, "वधाई है सरोजरानी ! मुझे प्रकाश के पिता जी ने वताया कि मेजर साहव यहाँ आगये हैं।"

सरोजरानी उनके स्वागत के लिये उठकर वरांडे में आयीं और सस्नेह उन्हें डाइनिंग-रूम में लेजाकर विठाती हुयी वोलीं, "वह कल संध्या को ही यहाँ आगये थे विमलादेवी ! साढ़े आठ वजे डाक्टर ने टेलीफोन किया था। मैं तभी उनके पास गयी थी।"

"तो आप भेंट कर आयी हैं उनसे ? कैसी दशा है ?"

"ठीक ही थे उस समय तो। एक हाथ और एक पैर पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। डाक्टर कहते थे कि एक सप्ताह में प्लास्टर काटकर पट्टी कर दी जायगी। तभी वह घर आसकेंगे।"

"घर आने की कोई शीघ्रता नहीं है वहन ! पहले वह विलकुल ठीक हो जायें, तभी घर लिवाकर लाना।" विमलादेवी वोलीं।

"यही होगा वहन !"

नाश्ते के वाद विमलादेवी अपनी कोठी पर चली गयीं।

लगभग दस वजे नरेन्द्र के साथ शीला, स्वरूपरानी और सहजोवाई हॉसपिटल गयीं। अव मेजर साहव की तवियत विलकुल ठीक थी। डाक्टर ने सव को भेंट करने की अनुमति देदी।

सव लोग अन्दर पहुँचे तो मेजर साहव पलंग पर लेटे दैनिक पत्र

पड़ रहे थे। इन सब को देखकर वह बोले, "तुम सब लोग आगये नरेन्द्र! मैंने अभी-अभी डाक्टर साहब से कोठी पर फोन कराया था।"

मेजर साहब की दृष्टि सहजोबाई पर गयी तो वह गद्-गद् होकर बोले, "भाभी! तुम्हारे दर्शनों के लिये परमात्मा ने मेरे प्राणों की रक्षा करदी वरना जहां गिर गया था वहां से उठकर आने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता था।"

सहजोबाई बोलती नहीं थीं मेजर साहब से। वह साड़ी के पल्ले की ओट से धीरे से बोली, "आपके नहीं मेजर साहब, मेरे भाग्य में आपके दर्शन करने शेष थे। इन बच्चों के भाग्य से आपके प्राणों की रक्षा हुयी है।"

मेजर साहब बोले, "मैं तो गिरते ही अचेत होगया था और ठीक उस स्थान पर अचेत हुआ था जहां गोलियों की वर्षा हो रही थी। चीनी जवानों की गोलियां सांय-सांय करती हुयी वायुमण्डल का कलेजा चीर रही थीं। उस भयकर तूफान के बीच से मनोहर मुझे कैसे लेकर बाहर निकला, मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

मनोहर ने इस छोटी-सी आयु में जिस साहस, वीरता और चतुर बुद्धि का परिचय दिया है उसके लिये उसे परमवीरचक्र प्रदान किया जायगा।"

अपने पिता जी के ये शब्द सुनकर शीला के नेत्र बन्द हो गये और उनके अन्दर मनोहर की सुन्दर मूर्ति आकर बस गयी। वह कुछ देर तक मंत्र-मुग्ध सी खड़ी रही। उसका वह स्वप्न तब टूटा जब उसके कानों में उसके पिताजी के ये शब्द पड़े, "बेटी शीला! चुप क्यों हो तुम?"

"जी, ऐसे ही बस। सोच रही हूँ कि वह कैसा भयंकर स्थान होगा, जहां आपके चोट लगी!"

मेजर साहब हँसकर बोले, "बावली! योद्धा के लिये कोई स्थान

भयंकर नहीं होता। उस समय भय उसके पास कहाँ आता है ? उस समय तो रायफल की गोली ही उसके पास आसकती है।"

लगभग एक घण्टा सब लोग वहाँ रहे। फिर सब कोठी पर चले आये।

धीरे-धीरे मेजर साहब के घाव भर गये।

फुटहिल्स के युद्ध में उनकी विशेष दिलचस्पी थी। जिस समय आकाशवाणी पर समाचार आते थे तो उनके कान उसी पर जाकर लग जाते थे।

भारतीय और चीनी सैनिकों की फुटहिल्स पर रस्साकशी चल रही थी। कभी थोड़ा भारतीय सेना पीछे हट जाती थी तो कभी चीनी सेना। वहाँ से आगे बढ़ने की स्थिति धीरे-धीरे सताप्त होती जा रही थी। चीनी नेताओं ने जब यह देख लिया कि अब आगे बढ़ना असम्भव है तो उन्होंने एक दिन अपनी ओर से ही युद्ध-विराम घोषित कर दिया। चीनी सेनायें स्वयं पीछे हटने लगीं।

भारतीय वीरों ने पीछे हटती हुयी चीनी सेना पर आक्रमण नहीं किया।

यह समाचार रेडियो पर प्रसारित हुआ तो सब लोग आश्चर्यचकित रह गये। नरेन्द्र मुस्कराकर बोला, "शक्ति से उन्मत्त सत्ता को शक्ति ही सही मार्ग पर लासकती है। चीन की विशाल सेना को भारतीय चौकियों के रक्षकों पर विजय प्राप्त करके जो भूठा भ्रम होगया था वह फुटहिल्स और त्रिशूल पर चकनाचूर होगया। यदि चीनी सेना तावांग से सेला की ओर बढ़ती और बौमडिला पर आकर सड़क न काट देती तो उसे सेला से ही वापस लौटना पड़ता।"

सरोजरानी मुस्कराकर बोलीं, "अब तो यही प्रतीत हो रहा है नरेन्द्र !"

शीला इस समाचार को प्राप्त कर आनन्द-विभोर हो उठी। तभी

ललित, प्रतिमा और मनोरम वहाँ आगयी। घर में चहल-पहल हो उठी। घर का वायुमण्डल आनन्द के वातावरण से भर गया।

ललित छूटते ही बोली, "शीला ! कुछ सुना। चीन की सेना का मुँह उलटा होगया।" यह कहकर वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। फिर बोली, "नीच कहीं के। आक्रमण करने के लिये भी भारत ही रह गया था उन्हें।"

"किसी छोटे से देश पर आक्रमण करते तो सम्भवः सफलता मिल जाती। भारत पर आक्रमण करके चीन ने अपनी मूर्खता का परिचय दिया है।" प्रतिमा बोली।

प्रतिमा की बात सुनकर नरेन्द्र मुस्कराकर बोला, "चीन के नेताओं ने साम्यवाद की आड़ में साम्राज्यवाद का स्वप्न देखा। उनके मस्तिष्क में स्तालिनवाद का खूँखार पंजा भटक रहा है, जिससे पकड़-पकड़कर वे सम्पूर्ण एशिया के देशों को अपने शिकंजे में जकड़ लेना चाहते हैं। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये चीनी नेताओं ने सोचा कि पहले एशिया के उस देश पर हाथ डाला जाय जिसे वे अपने बाद एशिया की सबसे बड़ी शक्ति समझते हैं। उन्होंने सोचा कि यदि भारत पर सफलता प्राप्त हुयी तो फिर पाकिस्तान, बर्मा और लंका की ओर बढ़ने में कोई कठिनायी न होगी।"

उसी समय नरेन्द्र ने देखा कि प्रकाश का स्कूटर कोठी के सामने आकर रुका। वह बहुत प्रसन्न था। सीधा सब लोगों के बीच में आकर बोला, "सब लोगों को प्रणाम !" और फिर नरेन्द्र की ओर मुँह करके व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला, "भाई नरेन्द्रजी ! देखिये चीनी नेता कितने सभ्य निकले। इन बेचारों को सम्भवतः भारतीय सीमा पर उनकी सेना द्वारा आक्रमण किये जाने का समाचार ही अब मिला है। कहीं पहले पाजाते तो सम्भवतः यह दुर्घटना घटती ही नहीं।"

नरेन्द्र मुस्कराकर बोला," चीनी नेताओं ने अपनी सेना को विनाश से बचा लिया प्रकाश ! नहीं तो उन्हें भाड़ के चनों के समान भून दिया

जाता। जहाँ तक वे बढ़ चुके थे, उससे आगे उनका तोपखाना नहीं बढ़ सकता था।"

"यही तो कठिनायी आगयी थी उनके सामने। वरना वे अपनी करतूतों से बाज आने वाले नहीं थे नरेन्द्र भाई! हमारी सेना को अब इन्हें खदेड़-खदेड़ कर मारना चाहिये था।" प्रकाश बोला।

नरेन्द्र मुस्कराकर बोला, "उनका पीछा न करना ही इस समय उचित है प्रकाश! इस समय सम्पूर्ण विश्व के तटस्थ और चीन के विरोधी देशों की सहानुभूति हमारे साथ है। यदि हम उनकी पीछे हटती हुयी सेना पर आक्रमण करते तो बहुत से तटस्थ देश हमारे इस कार्य की निन्दा करते। शांति और संतोष का फल मीठा होता है। आरम्भ में कठिनायी अवश्य आती है परन्तु परिणाम ग़लत नहीं निकलता।"

सरोजरानी और सहजोबाई बच्चों की बातों में रस लेरही थीं। वे मन-ही-मन मुग्ध होरही थीं, उनकी बातें सुनकर।

सरोजरानी का हॉसपिटल जाने का समय होगया था। आज मेजर साहब के हाथ और पैर का प्लास्टर कटना था। वह नरेन्द्र से बोलीं, "बेटा नरेन्द्र! दस बज गये। हॉस्पिटल चलना है।"

"मुझे याद है माताजी! चलिये चलते हैं।"

सरोजरानी चप्पल पैरों में डालती हुयी बोलीं, "चलो नरेन्द्र!" कहकर वह उठखड़ी हुयीं। फिर सहजोबाई की ओर देखकर बोलीं, "बहन! मैं हॉस्पिटल जा रही हूँ।" और फिर शीला से बोलीं, "शीला! तुम और बहन भोजन कर लेना। हमारी प्रतीक्षा में बैठी न रहना। संवभ है आज आने में कुछ देर विलम्ब होजाय।"

"अच्छा माताजी!" शीला ने खड़ी होकर कहा।

नरेन्द्र और सरोजरानी ने हॉस्पिटल के लिये प्रस्थान किया। उन्होंने वहाँ जाकर सुना कि प्रत्येक जवान की ज़बान पर युद्ध-विराम की ही चर्चा थी। सब लोग अपने-अपने विचार से भाँति-भाँति की बातें कर रहे थे।

धीरे आगे बढ़े और कमरे की दीवार तक चले गये। उन्हें चलने में कोई कठिनायी नहीं हुयी।

डाक्टर मुस्कराकर बोले, "आप अब बिलकुल ठीक हैं मेजर साहब! ठीक से चलिये। वैसे ही चलिये, जैसे पहले चला करते थे।"

मेजर साहब मुस्कराकर बोले, "चलता हूं डाक्टर साहब!" कहकर वह दीवार से सरोजरानी की ओर लौटे।

सरोजरानी ने पूछा, "कोई कष्ट तो नहीं हुआ चलने में। पैर में दलक तो नहीं लगी।"

"बिलकुल नहीं सरोजरानी! मैं एकदम ठीक चलकर आया हूँ तुम्हारे पास।"

सरोजरानी डाक्टर साहब से बोलीं, "यदि बिलकुल ठीक हैं तो इन्हें रिलीज़ कर दीजिये डाक्टर साहब!"

डाक्टर बोला, "मेरी ओर से इन्हें छुट्टी है। आप चाहें तो अपने साथ लेजासकती हैं। ज़रा पट्टी करदूं।"

"पट्टी करदीजिये।" सरोजरानी बोलीं।

डाक्टर ने पट्टी करके मेजर साहब को घर जाने की आज्ञा देते हुए कहा, "मैंने छुट्टी अवश्य देदी है मेजर साहब! परन्तु अभी दस-पंद्रह दिन आप चलें-फिरें नहीं। कभी कल से ही घूमने लिये जाने लगें।"

"आपकी आज्ञा पाये बिना घूमने नहीं जाऊँगा डाक्टर साहब! आप विश्वास रखें।" मेजर साहब बोले।

"अब आप जासकते हैं। कोई कष्ट हो तो फ़ोन करदें। मैं कोठी पर आकर देखआऊँगा।" डाक्टर बोला।

"बहुत-बहुत धन्यवाद!" कहकर मेजर साहब नरेन्द्र और सरोजरानी के साथ कमरे से बाहर निकले। नरेन्द्र ने सावधानी से उन्हें गाड़ी में बिठाया और धीरे-धीरे गाड़ी चलायी।

गाड़ी कोठी पर पहुंची तो शीला और सहजोबाई बाहर निकल आयीं। सहजोबाई ने मेजर साहब को गाड़ी से उतरते देखा तो वह

साड़ी के पल्ले की ओट करके आगे बढ़ गयीं। उन्होंने सरोजरानी से पूछा, "क्या घाव बिलकुल ठीक हो गये बहन!"

"ठीक होगये बहन सहजो! परमात्मा की कृपा ने यह दिन दिखाया है।"

मेजर साहब ये बातें सुनकर गाडी से स्वयं उतरकर बाहर आगये और बोले, "भाभी! अब बिलकुल ठीक हूँ मैं। खड़ा तो हूँ तुम्हारे सामने। क्या कोई अब कह सकता है कि मेरे पैर में गोली लगी थी?"

मेजर साहब की बात सुनकर सहजोबाई मुस्करादी।

शीला ने पिताजी को नमस्कार करके पूछा, "अब कष्ट तो नहीं है पिताजी! उस जगह जहाँ गोली लगी थी?"

"बिलकुल नहीं बेटी! घाव अब रहा ही कहाँ है जो कष्ट हो। वह भर चुका है।"

सरोजरानी ने मेजर साहब को अपने कमरे में लेजाकर पलंग पर सावधानी से लिटाया और फिर थोड़ा दूध दिया पीने के लिये। हॉस्पिटल से घर तक आने में जो थोड़ा थकान होगया था, वह दूध पीकर जाता रहा।

मेजर साहब का चित्त कोठी पर आकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह बोले, "सरोज! अब मनोहर भी सम्भवत: शीघ्र ही यहाँ आजायगा। थोड़ा ठीक होने पर शीला के विवाह की तिथि निश्चित करनी है।"

सरोजरानी बोली, "वह तो करना ही है। मनोहर का इधर कोई पत्र नहीं आया।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी पोस्टमैन ने कोठी में प्रवेश करके कहा, "बाबूजी डाक लिजिये।"

शीला ! तुमने आकर मिलने की इच्छा को हृदय में लिये ही युद्ध-स्थल में वह कार्य कर सका जिसकी मुझे स्वप्न में भी आशा नहीं थी।

मैं जिस दिन से तुमसे जुदा हुआ हूँ उस दिन से एक क्षण भी मेरे जीवन में ऐसा नहीं आया जब तुम मेरे हृदय और मन की प्रेरणा न रही हो।

हार का समय आने पर चीनी युद्ध-विराम का बहाना बनाकर वापस लौट रहे हैं। वे हमारे जीते हुए भू-भागों को खाली करते जा रहे हैं, परन्तु अभी रक्षा-व्यवस्था में कोई ढिलाई नहीं लायी जासकती। फिर भी जो लोग मोर्चों पर थे उन्हें सम्भवतः निकट भविष्य में अवकाश ग्रहण करने का अवसर प्रदान किया जायगा।

अवकाश मिलते ही मैं घर आऊँगा। तुम्हें देखने को मन बहुत कर रहा है शीला!

आशा है पिताजी के घाव अब भर गए होंगे। यह जानकर संतोष हुआ कि माताजी भी तुम्हारे ही पास रह रही हैं। अकेली रहती तो उन्हें कष्ट होता।

भाई नरेन्द्र भी मुझे विश्वास है सकुशल होंगे।

प्रकाश से कहना कि अपनी [illegible] तैयार रहे। मैं शीघ्र आने-वाला हूँ।

[illegible] और ही प्रतिभा का क्या बना? [illegible] या नहीं? अमित और मनोरम के [illegible]

प्रिंसिपल [illegible]

[illegible] का नाम [illegible]

मनोहर आने वाला था। शीला को मनोहर का पत्र प्राप्त हो चुका था। घर के प्रत्येक व्यक्ति को पता था मनोहर के आने का। मेजर साहब कई बार घड़ी देख चुके थे। नरेन्द्र ने ड्राइवर से रात्रि को ही गाड़ी पोर्टिको में लाने के लिये कह दिया था।

रेलगाड़ी रात्रि के दो बजे स्टेशन पर आने वाली थी। इसलिये रात्रि को कोई सोया नहीं था। सरोजरानी और सहजोबाई अपने कमरे में बैठी थीं। नरेन्द्र अपने कमरे में था और शीला अपने में। मेजर साहब अपने कमरे में थे। सरोजरानी बीच-बीच में उनके पास हो आती थीं। उन्हें जागते देखकर बोलीं, "आप आराम क्यों नहीं कर रहे? अधिक जगने से आपका बदन गिरने लगेगा।"

मेजर साहब मुस्कराकर कर बोले, "सरोज! मनोहर आ रहा है और बदन गिरने लगेगा? उसकी सूरत देखकर तो गिरता हुआ बदन भी उठने लगता है। उसी ने तो मेरे इस शव में फिर से प्राणों का संचार किया था। मनोहर को स्टेशन से लेने के लिये मैं भी चलूंगा तुम लोगों के साथ।"

मेजर साहब की बात सुनकर सरोजरानी चकित रह गयीं, कुछ भयभीत भी हुयीं, मेजर साहब के स्वास्थ्य के कारण। फिर मधुर स्वर में बोलीं, "क्या हम लोग नहीं ले आयेंगे मनोहर को स्टेशन से? आपके मनोहर के प्रति स्नेह को मैं भली प्रकार समझ रही हूँ। परन्तु डाक्टर ने आपको चलने-फिरने के लिये मना किया है।"

"हाँ-हाँ सरोज! डाक्टर तो मना करते ही रहते हैं। मैं ठीक हूँ अब। मैं गाड़ी में ही बैठा रहूँगा। प्लेटफ़ार्म पर नहीं जाऊँगा तुम लोगों

के साथ। इतनी बात तुम्हारी मान लेता हूँ, परन्तु जाऊँगा अवश्य। न जाने पर मुझे जाने की अपेक्षा अधिक कष्ट होगा।"

सरोजरानी समझ गयीं कि मेजर साहब नहीं मानेंगे। वह स्टेशन अवश्य चलेंगे। इसलिये सरोजरानी ने उन्हें रोकने का प्रयास नहीं किया। वह बोली, "तो चले चलिये आप। मोटर में बैठे रहेंगे तो कोई विशेष कष्ट नहीं होगा। परन्तु कुछ थोड़ा सो लीजिये। ग्यारह बजे हैं इस समय। ट्रेन दो बजे स्टेशन पर आयेगी। हम लोग डेढ़ बजे कोठी से चलेंगे। पूरे ढाई घण्टे हैं। मैं उठा लूँगी आपको। आपको छोड़कर नहीं जायेंगे हम लोग।" यह कहकर सरोजरानी धीरे से मुस्करादीं।

सरोजरानी के मुस्कराने पर मेजर साहब की आत्मा खिल उठी। वह उनका हाथ पकड़कर बोले, "मैं क्या जानता नहीं हूँ कि तुम मुझे छोड़कर जानेवाली नहीं हो। इस बुढ़ापे में यदि तुम ही मुझे छोड़ जाओगी तो मुझे कहाँ सहारा मिलेगा?"

मेजर साहब के मधुर व्यंग्य को सुनकर सरोजरानी का हृदय गुद-गुदा उठा। वह आत्मविभोर हो उठी। उनकी स्मृति के पटल पर जीवन में जितने भी मधुर व्यंग्य मेजर साहब ने किये थे, वे सब चित्रित होउठे। उनका दिल खिल उठा।

"सरोज! क्या तुम समझती हो कि मैं सो सकूँगा इस समय? मैं नहीं समझता कि इस घर में इस समय एक भी ऐसा व्यक्ति है जो मनोहर को देखे बिना आँखें झँपा सके।'

मेजर साहब द्वारा प्रस्तुत इस आधारभूत सत्य को सरोजरानी अस्वीकार न कर सकी। वह चित्रलिखित पुतली के समान मेजर साहब के सामने मौन खड़ी रही।

नरेन्द्र के मस्तिष्क में गाड़ी की देखभाल के अलावा और कोई धन नहीं थी। उसे यही भय था कि कहीं समय पर गाड़ी धोखा दे और वे ठीक समय पर स्टेशन न पहुँच सकें। इसलिये वह

जाकर उसे स्टार्ट करके देखता था और फिर लौटकर अपने कमरे में आजाता था।

सहोजवाई के मन के मिठास को कोई नहीं समझ सकता था। आज उनका चरित्रवान, कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्र शत्रु से भारतीय सीमा की रक्षा करके, शत्रु पर अपने वल, पराक्रम और शौर्य की धाक जमाकर, घर लौट रहा था। इस सिंहनी ने एक ही पुत्र को जन्म दिया था। आज वह आ रहा था उसके पास। माता का स्नेह उसे अपनी छाती से लगाने के लिये उमड़ा पड़ रहा था। घड़ी पर देखकर मन में झुंझलाहट पैदा होती थी कि क्यों नहीं उसकी छोटी सुंयीं वारह और एक को फांदकर दो के निकट पहुंच जाती।

तभी सरोजरानी ने उनके कमरे में प्रवेश किया। उन्हें देखकर सहजोवाई वोलीं, "वहुत देर करदी सरोज वहन! लौटने में। क्या मेजर साहव सोये नहीं हैं अभी?"

सरोजरानी सहजोवाई की वात सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़ीं। वोलीं, "आप सोने की वात कर रही हैं जीजी! नरेन्द्र के पिताजी तो कपड़े पहने तैयार वैठे हैं स्टेशन चलने के लिये।"

"स्टेशन चलने के लिये! इतनी रात में वह क्या करेंगे स्टेशन चलकर? मनोहर सीधा स्टेशन से यहीं तो आयेगा।"

सरोजरानी मुस्कराकर वोलीं, "यह आप ही पूछ लीजिये उनसे चलकर कि वह क्या करेंगे स्टेशन जाकर। वह कहते हैं कि उन्हें जाने की अपेक्षा न जाने में अधिक कष्ट होगा।"

यह सुनकर सहजोवाई मंत्र-मुग्ध हो गयीं। वह धीरे से वोलीं, "सरोज वहन! यदि उनकी मानसिक स्थिति यह है तो उन्हें चलने दीजिये हमारे साथ।"

सरोजरानी हंसकर वोलीं, "चलने देने या न चलने देने का प्रश्न ही कहां उठता है वहन! अपनी ज़िद के सामने क्या सुनी है उन्होंने कभी किसी की वात?"

शीला अपने कमरे में पलंग पर लेटी हुयी गुनगुना रही थी। यह उसके जीवन का संगीत था जो हृदय से उठकर कंठ में आ रहा था। वह मधुर गुनगुनाहट का रूप धारण करता था और फिर लौटकर हृदय में समा जाता था। उसके मन-मन्दिर का देवता मनोहर ही तो था, जो शीला की हृत्तन्त्री को छेड़कर उसमें झंकार पैदा कर रहा था, उसमें स्वर भर रहा था। शीला ने कई बार वह पत्र पढ़कर देखा जिसमें मनोहर ने [illegible] की सूचना दी थी। वह बार-बार पलंग पर बैठकर [illegible] बन्द करके लेट जाती थी। यदि वह सो [illegible] बन्द करती थी अपनी जीवन-[illegible] रखने के लिये। उसकी आँखों [illegible] की साकार प्रतिमा खड़ी थी। प्रतिमा मुस्क[illegible] शीला! तुम जग रही हो मेरी प्रति[illegible], मेरी गाड़ी हवा से बातें कर रही [illegible]

"भय्या ! हमारी जीप ने आज तक तो कभी धोखा दिया नहीं ।" शीला ने मुस्कराकर कहा ।

नरेन्द्र ने शीला की ओर देखा । दोनों के हृदय उत्कण्ठा से पूर्ण थे । समय काटना दोनों के लिये दूभर हो रहा था । दोनों ही चाहते थे कि घड़ी की चौथायी में डेढ़ वज जाय और वे स्टेशन के लिये प्रस्थान करें ।

शीला फिर लौटकर अपने कमरे में आगयी ।

धीरे-धीरे एक वज गया और फिर डेढ़ । सब लोग स्टेशन चलने के लिये तैयार हो गये । सवसे पहले मेजर साहव अपने कमरे से निकले और चुपचाप गाड़ी में जाकर वैठ गये । सरोजरानी उनके कमरे में उन्हें लेने के लिये गयीं तो देखा विस्तर ख़ाली था ।

सहजोवाई सरोजरानी के साथ थीं । सरोजरानी सहजोवाई को मेजर साहव का खाली विस्तर दिखाकर वोलीं, "देख रही हो वहन ! क्या इन्हें कोई रोक सकता था स्टेशन जाने से ?"

सहजोवाई ने पूछा, "आखिर हैं कहाँ मेजर साहव ?"

सरोजरानी सहजोवाई की कौली भरकर उन्हें पोर्टिको में खड़ी गाड़ी के पास लेजाकर वोलीं, "यह देखिये । इन्हें डर था कि कहीं हम लोग इन्हें छोड़ न जायें । इसलिये यह पहले ही आकर यहाँ वैठ गये ।"

नरेन्द्र गाड़ी में वैठा गाड़ी के ऐंजिन और उसकी वैट्री का परिक्षण कर रहा था ।

अन्य सवको गाड़ी के निकट पहुंचे देखकर शीला भी वहाँ आगयी । सव लोगों ने स्टेशन के लिये प्रस्थान किया ।

गाड़ी स्टेशन पर पहुँची तो दो वजने में दस मिनट थे । मेजर साहव गाड़ी में वैठे रहे । अन्य सव लोग प्लेटफार्म पर चले गये ।

प्लेटफार्म के दस मिनट गत दो घण्टों से भी अधिक लम्बे प्रतीत

हुए तभी। लाउड-स्पीकर ने सूचना दी कि गाड़ी ठीक समय पर नम्बर दो प्लेटफ़ार्म पर आरही है।

नरेन्द्र सबको साथ लेकर नम्बर दो प्लेटफार्म पर पहुँचा। गाड़ी ठीक समय पर आयी और अकस्मात् गाड़ी का वह डिब्बा जिसमें मनोहर बैठा था, उनके सामने आकर रुका। मनोहर ने खिड़की से झाँक-कर पहले ही इन सबको देख लिया था। गाड़ी रुकते ही वह प्लेटफार्म पर उतरा। दोनों माताओं के चरण छुए, उनका आशीर्वाद प्राप्त किया और फिर नरेन्द्र से कौली भरकर भेंट की, परन्तु यह सब करते हुए उसकी दृष्टि शीला पर थी।

शीला ने भी मनोहर की ओर देखा, परन्तु लज्जा से उसकी पलकें नीची हो गयीं। वह पैर के अंगूठे से अपनी चप्पल के तले को कुरेदने लगी।

नरेन्द्र ने दो कुलियों को बुलाकर मनोहर का सामान गाड़ी से नीचे उतरवाया और सब लोग स्टेशन से बाहर निकले।

मनोहर गाड़ी के निकट पहुँचा तो उसने देखा मेजर साहब गाड़ी मे बैठे थे। उसने आगे बढ़कर उनके चरण छूते हुए कहा, "इतनी रात में आपको स्टेशन आने का कष्ट नहीं करना चाहिये था पिताजी! अब कैसी तबियत है आपकी?"

मेजर साहब हँसकर बोले, "मैं तो बिलकुल ठीक हूँ बेटा मनोहर! अब तो मैं चल-फिर भी लेता हूँ। मैं अकेला कोठी पर पड़ा रहकर क्या करता? इसलिये चला आया।"

सब लोग गाड़ी में बैठकर कोठी पर आये। मेजर साहब अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट गये। शीला अपने कमरे में चली गयी। मनोहर, नरेन्द्र, सहजोबाई और सरोजरानी ड्राइङ्ग-रूम में चले गये। कोठी पर आते-आते उन्हें तीन बज गये।

सरोजरानी सहजोबाई से बोलीं, "बहन! अब आप आराम कर लीजिये थोड़ी देर।"

सहजोबाई ने हँसकर कहा, "अब तक क्या मैं कुछ काम कर रही थी सरोज, जो अब आराम करलूँ। थोड़ी देर में दिन निकल आयेगा। अब क्या नींद आयेगी ?"

सरोजरानी समझ गयीं कि सहजोवाई के लिये सोना अब संभव नहीं है। वह वहाँ से उठकर मेजर साहव के कमरे में चली गयीं। मेजर साहव पलंग पर लेटे हुए थे, परन्तु नींद नहीं थी उनकी आँखों में। वह बोले, "सरोज ! तुम आगयीं। मैं तुम्हें ही याद कर रहा था इस समय।"

सरोजरानी मुस्कराकर बोलीं, "क्या कोई विशेष बात है मुझसे कहने के लिये ?"

मेजर साहव बोले, "बहुत विशेप। इतनी विशेप कि तुम भी सुनकर आश्चर्यचकित रह जाओगी।"

सरोजरानी ने उत्कंठापूर्ण दृष्टि से मेजर साहव की ओर देखा और कहा, "आपके तो सब काम मुझे ही चकित कर देने के लिये होते हैं। कहिये क्या बात है ?"

मेजर साहव बोले, "सरोज ! पहले हमने जब शीला का विवाह करने का निश्चय किया था तो बहुत बड़ा आडम्ब रचने की बात सोची थी। शायद इसीलिये उसमें विघ्न पड़ गया। इस बार में उस तरह का कोई आडम्बर नहीं रचूँगा। मैं नहीं चाहता कि मेरे काम में व्यर्थ कोई विघ्न पड़े।"

सरोजरानी मुस्कराकर बोलीं, "तो क्या आदर्श विवाह करने का निश्चय किया है आपने ? क्या इष्ट-मित्रों को भी सूचित नहीं करेंगे आप ?"

सरोजरानी की बात सुनकर मेजर साहब मुस्कराकर बोले, "मैं किसी को कानों-कान भी इसकी सूचना नहीं दूँगा। निश्चित समय से पूर्व तुम्हारे और भाभी के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति न जान पाये इस बात को।"

सरोजरानी मुस्कराकर बोली, "समय आने पर आप जैसा उचित समझें वैसा करलें। आप क्या करेंगे यह आप जानें। मेरा अभिप्राय तो शीला और मनोहर की शादी करना है।"

मेजर साहब गम्भीर वाणी में बोले, "समय आगया है सरोज! अब देर नही है इसमे।"

"मैं समझी नही आप क्या कहना चाहते हैं?"

मेजर साहब बोले, "मेरा मतलब यह है सरोज! कि कल शीला और मनोहर की शादी करनी है मुझे।"

"कल!" आश्चर्यपूर्ण स्वर मे सरोजरानी ने कहा।

'हाँ, कल ही तो सरोज! कल का दिन इस कार्य के लिये बहुत शुभ है। मैं अपने निश्चय को बदल नही सकता। तुम भाभी को मेरे इस निश्चय की जाकर सूचना देदो।"

मेजर साहब की बात सरोजरानी की कुछ समझ में नहीं आयी, परन्तु मन मे प्रसन्नता कुछ ऐसी भर गयी कि समझ में न आने का प्रश्न मस्तिष्क में आया ही नहीं। वह दौड़ी हुयी सहजोबाई के पास पहुँची और बोली, "बहन सहजो! मेरे साथ तो आओ। एक विशेष सूचना देनी है तुम्हें।"

सरोजरानी की प्रसन्न मुख-मुद्रा को देखकर सहजोबाई को इस बात के समझने मे विलम्ब न हुआ कि जो सूचना वह देने आयी थी, शुभ थी। वह तुरन्त कमरे से बाहर निकल आयी और सरोजरानी से पूछा, "क्या विशेष बात है ऐसी जो तुम अनायास ही इतनी प्रसन्न होउठी हो?"

"असाधारण प्रसन्नता की बात है सहजो बहन! नरेन्द्र के पिताजी कभी-कभी ऐसे ही चमत्कारपूर्ण कार्य करते हैं कि जिनसे मैं प्रसन्न भी होती हूँ और चकित भी।"

बातें करती हुयी दोनों सहजोबाई के कमरे में चली गयी।

सहजोबाई ने पूछा, "आज ऐसी क्या बात है? इस समय ऐसी बात क्या की है मेजर साहब ने?"

सरोजरानी वोलीं, "उन्होंने कहा है कि कल संध्या को शीला और मनोहर का विवाह-संस्कार सम्पन्न होगा।"

"विवाह!" आश्चर्यपूर्ण स्वर में सहजोवाई ने कहा और कहते-कहते ही उनका हृदय आनन्द से परिपूर्ण होगया। वह हँस पड़ीं। फिर बोलीं, "क्या सच सरोज ? मैं कोई स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ ?"

सरोजरानी वोलीं, "सहजो वहन ! नरेन्द्र के पिताजी कभी स्वप्न नहीं देखते। वह स्वप्न की बातें भी नहीं करते। उनके मुख से निकला हुआ प्रत्येक शब्द पत्थर पर खिची हुयी रेखा के समान होता हैं। किसी से कुछ कहना नहीं इससे बारे में। केवल तुम्हें ही सूचित करने के लिये उन्होंने भेजा है मुझे इस समय।"

बातों-बातों दिन निकल आया।

शीला बार-बार अपने कमरे से बारह निकलकर मनोहर को देखने का प्रयास करती थी, परन्तु लज्जा उसे आगे नहीं बढ़ने देती थी। मनोहर की दशा भी इससे भिन्न नहीं थी। वह बार-बार सोफ़े से उठकर कमरे से बाहर आता और फिर अन्दर चला जाता था।

प्रातःकाल सबने साथ-साथ बैठकर जलपान किया और फिर सब लोग कोठी से बाहर लॉन में पड़ी कुर्सियों पर जाकर बैठ गये। अभी बैठे अधिक समय नहीं हुआ था कि प्रकाश का स्कूटर उनके पास आकर रुका।

प्रकाश को देखकर मनोहर कुर्सी छोड़कर उसकी ओर बढ़ गया और प्रकाश की कौली भरकर उससे भेंट की। फिर बोला, "अच्छे तो हो प्रकाश बाबू ! तुमने हमारी पार्टी का प्रवन्ध अभी किया या नहीं ? न किया हो तो करलो।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "मनोहर ! तुम्हें एक नहीं, हजार पार्टियाँ दी जायेंगी। कॉलेज के एक विशेप समारोह में हम तुम्हारा अभिनन्दन करेंगे। तुमने कॉलेज को नहीं, भारतीय सम्मान को चार चाँद लगाये हैं। प्रिंसिपल साहब बहुत प्रसन्न हैं।"

मनोहर ने प्रकाश के चेहरे पर कुछ विचित्र दृष्टि से देखा। उसने देखा कि प्रकाश का बातें करने का कुछ ढंग ही बदल गया था। उसमें गम्भीरता आगयी थी।

तभी प्रतिमा, ललित और मनोरम भी वहाँ आगयीं। शीला ने खड़ी होकर उनका स्वागत किया। मनोहर ने भी उन सबकी ओर कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए हाथ जोड़ दिये।

प्रतिमा बोली, "मनोहर भाई! आपसे भेंट करके हम गौरव अनुभव कर रही हैं।"

इससे पूर्व की मनोहर प्रतिमा की बात का उत्तर देता, उसने देखा प्रकाश के पिता केशवचन्द्रजी ने अपनी पत्नी के साथ कोठी में प्रवेश किया।

उन्हे देखकर सब लोग खड़े होगये।

विमलादेवी ने आगे बढ़कर मनोहर को आशीर्वाद दिया। डिप्टी-कमिश्नर साहब बोले, "मनोहर बेटे! तुमने भारतीय गौरव की रक्षा की है। इतनी कम आयु में तुमने जिस साहस का परिचय दिया है उसकी प्रशंसा नही की जा सकती। तुम राष्ट्र के गौरव हो।"

सरोजरानी ने आने वाले अतिथियों का उचित सत्कार किया। केशवचन्द्रजी मेजर साहब की तबियत का हाल पूछकर विमलादेवी के साथ वापस चले गये। प्रकाश, प्रतिमा, ललित और मनोरम भी कुछ देर पश्चात् वहाँ से चले गये।

मिलने के लिये आये हुए सब लोगों के चले जाने पर सब ने भोजन किया और उसके पश्चात् सब अपने-अपने कमरो मे चले गये। मनोहर नरेन्द्र के साथ था।

न जाने कितनी बातें मनोहर के मन में शीला से करने के लिये थी और न जाने कितनी बातें शीला ने मनोहर से कहने के लिये सोची हुयी थी परन्तु सकोचवश एक शब्द भी वे एक-दूसरे से न कह सके।

सरोजरानी बोलीं, "उन्होंने कहा है कि कल संध्या को शीला और मनोहर का विवाह-संस्कार सम्पन्न होगा।"

"विवाह!" आश्चर्यपूर्ण स्वर में सहजोबाई ने कहा और कहते-कहते ही उनका हृदय आनन्द से परिपूर्ण होगया। वह हँस पड़ीं। फिर बोलीं, "क्या सच सरोज ? मैं कोई स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ ?"

सरोजरानी बोलीं, "सहजो बहन ! नरेन्द्र के पिताजी कभी स्वप्न नहीं देखते। वह स्वप्न की बातें भी नहीं करते। उनके मुख से निकला हुआ प्रत्येक शब्द पत्थर पर खिची हुयी रेखा के समान होता हैं। किसी से कुछ कहना नहीं इससे बारे में। केवल तुम्हें ही सूचित करने के लिये उन्होंने भेजा है मुझे इस समय।"

बातों-बातों दिन निकल आया।

शीला बार-बार अपने कमरे से बाहर निकलकर मनोहर को देखने का प्रयास करती थी, परन्तु लज्जा उसे आगे नहीं बढ़ने देती थी। मनोहर की दशा भी इससे भिन्न नहीं थी। वह बार-बार सोफ़े से उठकर कमरे से बाहर आता और फिर अन्दर चला जाता था।

प्रातःकाल सबने साथ-साथ बैठकर जलपान किया और फिर सब लोग कोठी से बाहर लॉन में पड़ी कुर्सियों पर जाकर बैठ गये। अभी बैठे अधिक समय नहीं हुआ था कि प्रकाश का स्कूटर उनके पास आकर रुका।

प्रकाश को देखकर मनोहर कुर्सी छोड़कर उसकी ओर बढ़ गया और प्रकाश की कौली भरकर उससे भेंट की। फिर बोला, "अच्छे तो हो प्रकाश बाबू ! तुमने हमारी पार्टी का प्रबन्ध अभी किया या नहीं ? न किया हो तो करलो।"

प्रकाश मुस्कराकर बोला, "मनोहर ! तुम्हें एक नहीं, हज़ार पार्टियाँ दी जायेंगी। कॉलेज के एक विशेप समारोह में हम तुम्हारा अभिनन्दन करेंगे। तुमने कॉलेज को नहीं, भारतीय सम्मान को चार चाँद लगाये हैं। प्रिंसिपल साहब बहुत प्रसन्न हैं।"

मनोहर ने प्रकाश के चेहरे पर कुछ विचित्र दृष्टि से देखा। उसने देखा कि प्रकाश का बातें करने का कुछ ढंग ही बदल गया था। उसमें गम्भीरता आगयी थी।

तभी प्रतिमा, ललित और मनोरम भी वहाँ आगयी। शीला ने खड़ी होकर उनका स्वागत किया। मनोहर ने भी उन सबकी ओर कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए हाथ जोड़ दिये।

प्रतिमा बोली, "मनोहर भाई! आपसे भेंट करके हम गौरव अनुभव कर रही हैं।"

इससे पूर्व की मनोहर प्रतिमा की बात का उत्तर देता, उसने देखा प्रकाश के पिता केशवचन्द्रजी ने अपनी पत्नी के साथ कोठी मे प्रवेश किया।

उन्हें देखकर सब लोग खड़े होगये।

विमलादेवी ने आगे बढ़कर मनोहर को आशीर्वाद दिया। डिप्टी-कमिश्नर साहब बोले, "मनोहर बेटे! तुमने भारतीय गौरव की रक्षा की है। इतनी कम आयु में तुमने जिस साहस का परिचय दिया है उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। तुम राष्ट्र के गौरव हो।"

सरोजरानी ने आने वाले अतिथियों का उचित सत्कार किया। केशवचन्द्रजी मेजर साहब की तबियत का हाल पूछकर विमलादेवी के साथ वापस चले गये। प्रकाश, प्रतिमा, ललित और मनोरम भी कुछ देर पश्चात् वहाँ से चले गये।

मिलने के लिये आये हुए सब लोगों के चले जाने पर सबने भोजन किया और उसके पश्चात् सब अपने-अपने कमरों में चले गये। मनोहर नरेन्द्र के साथ था।

न जाने कितनी बातें मनोहर के मन में थीं और न जाने कितनी बातें शीला के मन में हुई थीं परन्तु संकोचवश एक शब्द भी के मुख

कभी कभी दूसरों की आँखें बचाकर एक-दूसरे की ओर देखने का प्रयत्न करते थे तो किसी-न-किसी की आँखें अपनी ओर लगी देखकर साहस लुप्त होजाता था और दृष्टि नीचे झुक जाती थी।

संध्या को छः बजे पंडितजी मेजर साहब के यहाँ यज्ञ इत्यादि कराने के लिये आगये। वह सीधे मेजर साहब के कमरे में चले गये। किसी को उनके आने के अभिप्राय का ज्ञान न हुआ परन्तु सरोजरानी को समझने में विलम्ब न हुआ और वह तुरन्त मेजर साहब के कमरे में पहुँच गयीं।

मेजर साहब बोले, "स्वरूप! यह पंडितजी आगये हैं। पाणिग्रहण के लिये मण्डप इत्यादि की सब व्यवस्था हो गयी है। संस्कार के समय मैंने केवल प्रिंसिपल साहब, केशवचन्द्रजी और उनकी पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी को आमंत्रित नहीं किया है। तुम शीला को संस्कार के लिये तय्यार करो। माल रोड़ पर पांच नम्बर की कोठी में संस्कार होगा। और हाँ, मनोहर को मेरे पास भेज दो। शीला से अभी विवाह के विषय में कुछ न कहना। कहना एक शादी में चलना है।"

सरोजरानी एक शब्द भी उच्चारण किये विना मुस्कराती हुई वहाँ से चली गयीं। वह पहले मनोहर के पास गयीं और उससे कहाँ, "मनोहर वेटे! तुम्हारे पिताजी तुम्हें याद कर रहे हैं।"

मनोहर तुरन्त मेजर साहब के पास पहुँचा। मेजर साहब पंलग पर बैठे थे, तकिये का सहारा लिये। मनोहर आया तो स्नेहपूर्ण स्वर में बोले, "बेटा मनोहर! तुमने हमारे प्राणों की रक्षा की है। उसके उपलक्ष में हम तुम्हें एक पुरस्कार देंगे। भारत-सरकार तो बाद में तुम्हें परमवीर-चक्र प्रदान करेगी ही। वह सामने की अलमारी खोलो। उसमें एक सूट रखा है तुम्हारे लिये। उसे पहनलो। साथ ही एक दूसरा सूट है। उसे नरेन्द्र को देदो। दोनों बहुत शीघ्र तैयार हो जाओ। एक शादी में चलना है।"

मनोहर ने चुपचाप अलमारी खोलकर सूट निकाले और उन्हें लेकर नरेन्द्र के कमरे में चला गया।

सरोजरानी ने कुछ देर पश्चात् आकर सूचना दी, "सब तैयार हैं। आप भी कपड़े बदल लीजिये।"

मेजर साहब मुस्कराकर बोले, "सरोज ! बेटी का बाप भी कहीं बनता-ठनता है बेटी की शादी में ? परन्तु जब तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो एक धोती-कुर्ता निकाल लाओ।"

सरोजरानी ने तुरन्त एक धोती-कुर्ता निकाल कर उन्हें दिये। कुर्ता सावधानी से पहनाया, क्योंकि हाथ पर अभी पट्टी चढ़ी हुयी थी। कुछ दर्द भी था उसमें।

पाँच नम्बर कोठी अधिक दूर नहीं थी। तुरन्त सब लोग वहाँ पहुँच गये। कोठी लाल, पीली, हरी, नीली और बैंजनी बत्तियों से जग-मगा रही थी।

शीला ने कोठी के द्वार पर आकर अपनी माताजी से पूछा, "माता जी ! क्या यही है शादी ?"

स्वरूपरानी मुस्कराकर बोली, "हाँ बेटी ! इसी शादी में तो सम्मिलित होने के लिये आये हैं हम लोग।"

सब कोठी के अन्दर चले गये। वहाँ कोई भीड़-भाड़ नहीं थी। न महमानो की चहल-पहल थी और न बरातियों की।

"क्या बरात अभी नहीं आयी है माताजी ?" शीला ने पूछा।

"बरात आचुकी है बेटी ! यहीं पर विवाह-संस्कार होना है। हम विवाह-मंडल की ओर चल रहे है।" सरोजरानी ने कहा।

मनोहर भी कोठी की इस रौनक और निस्तब्धता को देखकर चकित था। नरेन्द्र की तो समझ में ही कुछ नहीं आरहा था। अपनी पेंट की क्रीज को देखता हुआ सबके साथ आगे बढ़

कोठी के सामने विवाह-मंडप बना था। बहुत सुन्दर सजा हुआ था। उसे देखकर मनोहर मेजर साहब से बोला, "क्या शादी यहीं पर है पिताजी ? मंडप को देखकर तो यही प्रतीत होता है। बहुत सुन्दर मंडप बनाया गया है ?"

मेजर साहब मुस्कराकर बोले, "हम लोग इसी विवाह में तो सम्मिलित होने के लिये आये हैं बेटा मनोहर ! तुम्हें यह मण्डप अच्छा लग रहा है ?"

"बहुत अच्छा बना है पिताजी ! वह देखिये केले के पत्तों पर लटकी झालरें कैसी सुन्दर प्रतीत हो रही हैं।"

मनोहर की बात सुनकर सरोजरानी और सहजोबाई ने मुस्कराते हुए मनोहर की ओर देखा।

मेजर साहब बोले, "तुम्हारे विवाह में हम ऐसा ही मण्डप बनवायेंगे मनोहर !"

मनोहर मेजर साहब की यह बात सुनकर कुछ लजा-सा गया, परन्तु मन में मिठास घुल गया और हृदय में सरस रस की धारा प्रवाहित हो चली।

अब सब लोग विवाह-मंडप के निकट पहुंच गये थे। मेजर साहब सरोजरानी से बोले, "विवाह-मण्डप पसंद आया सरोज ! मनोहर को बहुत पसन्द है। भाभी को कैसा लगा ?"

सहजोबाई पल्ले की ओट से बोलीं, "बहन सरोज ! मेजर साहब से कहदो कि मुझे यह मंडप बहुत पसन्द है। बहुत सुन्दर बना है। शीला के विवाह में ऐसा ही सुन्दर मंडप बनाना चाहिये।"

सरोज ने यह बात मेजर साहब से कही तो मेजर साहब बोले, "भाभी और बेटे मनोहर को यही मंडप पसन्द है तो हम इस मंडप में पहले मनोहर बेटे और शीला का ही विवाह किये देते हैं। इस मंडप वाले अपने विवाह के लिये कोई अन्य व्यवस्था कर लेंगे।"

मेजर साहब की बात सुनकर मनोहर, शीला और नरेन्द्र चकित रह गये। किसी की कुछ समझ में न आया।

सरोजरानी मुस्करा बोली, "आप यही उचित समझते हैं तो यही कर लीजिये। इसमें किसी को आपत्ति ही क्या हो सकती है? शुभ कार्य में देर नहीं करनी चाहिये।"

तभी प्रिंसिपल साहब, केशवचन्द्रजी तथा विमलादेवी आगये। विमलादेवी सरोजरानी के पास आकर बोली, "बहन! देर क्या है? संस्कार का समय हो गया। शुभ कार्य में देर करना अच्छी बात नहीं है।"

"देर केवल आपके आने की थी विमलादेवी!" कहकर सरोज-रानी ने मनोहर की ओर देखा। वह बोली, "बेटा मनोहर! सोच क्या रहे हो? आसन ग्रहण करो। शुभ कार्य में देर क्यो करते हो?" यह कहकर उन्होंने शीला को उचित आसन पर लेजाकर बिठा दिया।

आनन्द और मंगलपूर्ण वातावरण में विवाह-संस्कार सम्पन्न हुआ। संस्कार पूर्ण होते-होते प्रकाश, ललित, प्रतिमा और मनोरम भी वहाँ आगये।

प्रकाश आगे बढ़कर मुस्कराता हुआ बोला, "क्यो भाई मनो-हर! चुपके-ही-चुपके सब काम कर लिया। प्रकाश को सूचना तक नहीं दी। परन्तु प्रकाश समय पर चूकने वाला नहीं है। शीघ्रता कीजिये। पार्टी में सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।" फिर अन्य सबकी ओर मुँह करके बोला, "आप सभी महानुभाव पार्टी मे आमं-त्रित हैं।"

प्रकाश ने छात्र-संघ की ओर से विशाल पार्टी का आयोजन किया था। नगर के बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति उसमें पधारे थे। कॉलिज के प्रोफ़ेसर्स और बहुत से विद्यार्थी उसमें सम्मिलित थे। विवाह-सं[illegible] से सब लोग पार्टी मे गये।

कोठी के सामने विवाह-मंडप वना था। वहुत सुन्दर सजा हुआ था। उसे देखकर मनोहर मेजर साहव से वोला, "क्या शादी यहीं पर है पिताजी ? मंडप को देखकर तो यही प्रतीत होता है। वहुत सुन्दर मंडप वनाया गया है ?"

मेजर साहव मुस्कराकर वोले, "हम लोग इसी विवाह में तो सम्मिलित होने के लिये आये हैं वेटा मनोहर ! तुम्हें यह मण्डप अच्छा लग रहा है ?"

"वहुत अच्छा वना है पिताजी ! वह देखिये केले के पत्तों पर लटकी भालरें कैसी सुन्दर प्रतीत हो रही हैं।"

मनोहर की वात सुनकर सरोजरानी और सहजोवाई ने मुस्कराते हुए मनोहर की ओर देखा।

मेजर साहव वोले, "तुम्हारे विवाह में हम ऐसा ही मण्डप वनवायेंगे मनोहर !"

मनोहर मेजर साहव की यह वात सुनकर कुछ लजा-सा गया, परन्तु मन में मिठास घुल गया और हृदय में सरस रस की धारा प्रवाहित हो चली।

अव सव लोग विवाह-मंडप के निकट पहुंच गये थे। मेजर साहव सरोजरानी से वोले, "विवाह-मण्डप पसंद आया सरोज ! मनोहर को वहुत पसन्द है। भाभी को कैसा लगा ?"

सहजोवाई पल्ले की ओट से वोलीं, "वहन सरोज ! मेजर साहव से कहदो कि मुझे यह मंडप वहुत पसन्द है। वहुत सुन्दर वना है। शीला के विवाह में ऐसा ही सुन्दर मंडप वनाना चाहिये।"

सरोज ने यह वात मेजर साहव से कही तो मेजर साहव वोले, "भाभी और वेटे मनोहर को यही मंडप पसन्द है तो हम इस मंडप में पहले मनोहर वेटे और शीला का ही विवाह किये देते हैं। इस मंडप वाले अपने विवाह के लिये कोई अन्य व्यवस्था कर लेंगे।"

मेजर साहब की बात सुनकर मनोहर, शीला और नरेन्द्र चकित रह गये। किसी की कुछ समझ मे न आया।

सरोजरानी मुस्करा बोली, "आप यही उचित समझते हैं तो यही कर लीजिये। इसमें किसी को आपत्ति ही क्या हो सकती है? शुभ कार्य मे देर नही करनी चाहिये।"

तभी प्रिंसिपल साहब, केशवचन्द्रजी तथा विमलादेवी आगये। विमलादेवी सरोजरानी के पास आकर बोली, "बहन! देर क्या है? संस्कार का समय हो गया। शुभ कार्य मे देर करना अच्छी बात नही है।"

"देर केवल आपके आने की थी विमलादेवी!" कहकर सरोजरानी ने मनोहर की ओर देखा। वह बोली, "बेटा मनोहर! सोच क्या रहे हो? आसन ग्रहण करो। शुभ कार्य मे देर क्यों करते हो?" यह कहकर उन्होने शीला को उचित आसन पर लेजाकर बिठा दिया।

आनन्द और मगलपूर्ण वातावरण मे विवाह-सस्कार सम्पन्न हुआ। सस्कार पूर्ण होते-होते प्रकाश, ललित, प्रतिमा और मनोरम भी वहाँ आगये।

प्रकाश आगे बढकर मुस्कराता हुआ बोला, "क्यों भाई मनोहर! चुपके-ही-चुपके सब काम कर लिया। प्रकाश को सूचना तक नही दी। परन्तु प्रकाश समय पर चूकने वाला नही है। शीघ्रता कीजिये। पार्टी में सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।" फिर अन्य सबकी ओर मुँह करके बोला, "आप सभी महानुभाव पार्टी मे आमंत्रित है।"

प्रकाश ने छात्र-सघ की ओर से विशाल पार्टी का आयोजन किया था। नगर के बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति उसमे पधारे थे। कॉलेज के प्रोफेसर्स और बहुत से विद्यार्थी उसमे सम्मिलित थे। विवाह-मंडप से सब लोग पार्टी मे गये।

पार्टी का कार्य-क्रम आरम्भ करते हुए प्रिंसिपल साहब पार्टी के मध्य खड़े होकर बोले, "उपस्थित महानुभावो और कॉलिज के छात्रो ! आज के इस शुभ अवसर पर हम सब लोग अपने कॉलेज और भारत के गौरव लेफ्टिनेण्ट मनोहर को बधाई देने के लिये एकत्रित हुए हैं। मनोहर ने भारतीय गौरव के जो चरण-चिन्ह अंकित किये हैं वे युग-युग तक भारतीय युवकों का मार्ग-दर्शन करते रहेंगे ।"

सब लोगों ने करतल-ध्वनि की और फिर सब प्रीति-भोज में संलग्न होगये । पार्टी का कार्य-क्रम पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ ।